Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

जन ज्ञान

[मासिक]

मार्च १९८०
फाल्गुन-चैत्र
२०३६-३७

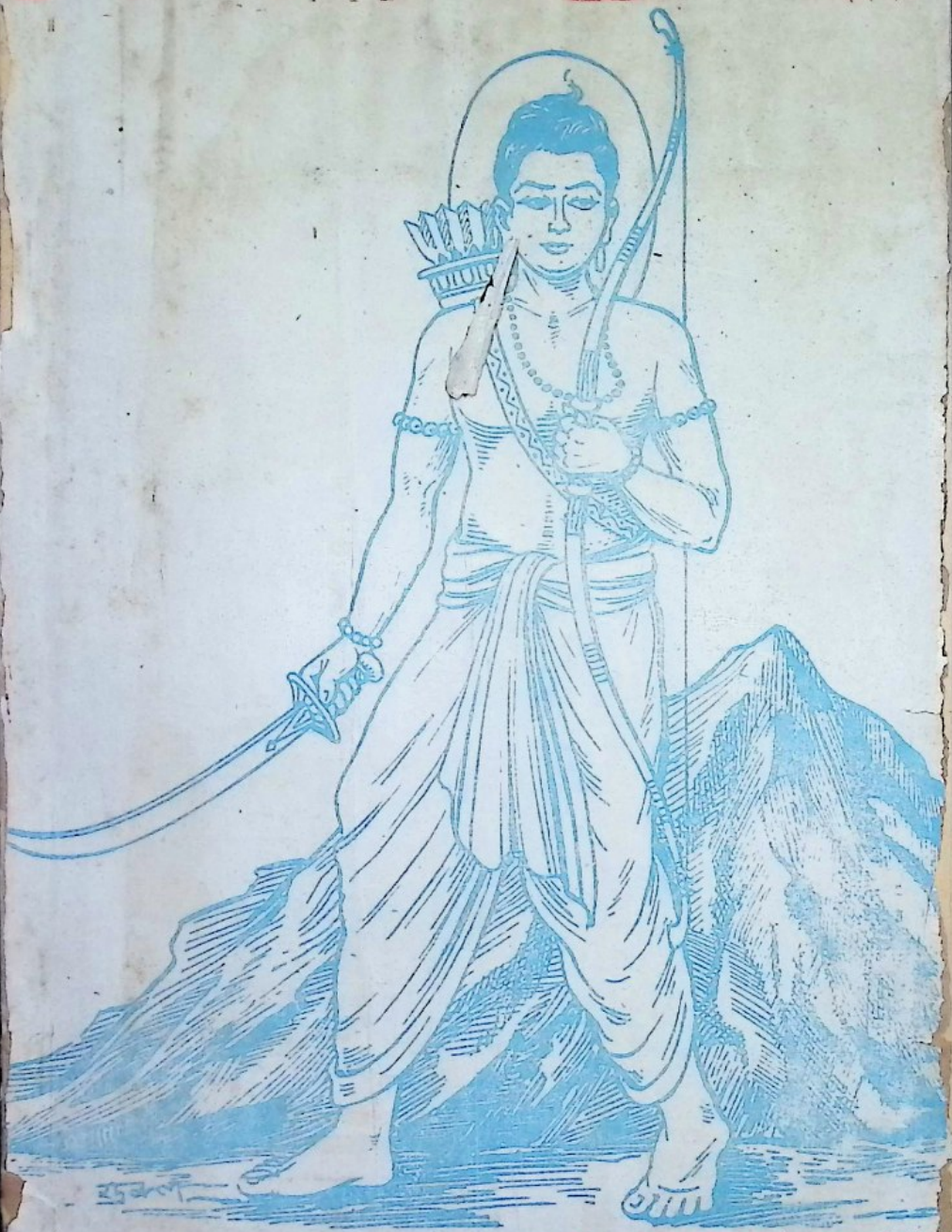

मर्यादापुरुषोत्तम राम के जीवन का हम अनुकरण करें, तभी हम राम के अनुयायी हैं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या वेद भाष्य अब नहीं छप सकेगा ?

जो सहयोग आप ने दिया था, उससे यजुर्वेद व सामवेद भाष्य छप चुका है। किन्तु अभी भी बहुत बड़ा कार्य शेष है। लगभग ५०० रीम कागज तुरन्त चाहिए—इस मंहगाई में भी हमने १५१) में चारों वेदों का भाष्य देने की घोषणा की है।

आप को यदि वेद पर श्रद्धा है और वेद का प्रचार परमधर्म मानते हैं तो आज ही अपना सहयोग दें –

आप इस प्रकार सहयोग दे सकते हैं।

१. वेद भाष्य प्रकाशन निधि में अधिक से अधिक सहयोग भेज कर :

२. वेद भाष्य के लिए सदस्य बनाकर १५१) में जितने चाहें उतने सदस्य बनाएं व अपना धन अग्रिम हमें भेज दें। हम जैसे-जैसे छपता जाएगा, वेदभाष्य आपको भेजते जाएंगे।

वेद हमारा धर्म ग्रंथ है—हमें उसके प्रचार-प्रसार करने के लिए बहुत कुछ करना है।

आपका कर्तव्य है कि आप वेद का महत्त्व समझें और अपना प्रमुख ध्यान वेद की ओर आकर्षित करें।

वेद का प्रचार कीजिए—
यह प्रभु का कार्य है—

विनीत
राकेश रानी
अध्यक्ष
दयानन्द-संस्थान,
वेद मन्दिर कार्यालय, १५९७ हरध्यानसिंह मार्ग,
करौल बाग, नई दिल्ली-५

नरेन्द्रा प्रेस, मॉडल बस्ती, दिल्ली

Dr, Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

जन-ज्ञान
[मासिक]

सम्पादक
राकेशरानी

सह-सम्पादक—कु० आभा
दूरभाष : ५६६६३९
५६९८६१
८०१२११

पता :
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१, नाईवाला]
करौल बाग, नई दिल्ली-११०००५

वार्षिक शुल्क २० रुपये
विदेश में ६ पौंड : विमान से
४ पौंड : समुद्री डाक से
आजीवन ३०१ रुपये
एक प्रति : २ रुपये

फाल्गुन, संवत् २०३६
वर्ष १२ : अंक १०

सब उसका है

आविः सन्निहितं गुहा जरन्नाम महत् पदम्
तत्रेदं सर्वमार्पितमेजत् प्राणत् प्रतिष्ठितम् ॥

अ० १०-८-६

(सत्) तीन काल में रहता (जरत् नाम) स्तुति के योग्य (महत् पदं) पूजनीय, प्राप्त करने योग्य परमेश्वर (गुहा) हृदय में (आविः निहितं) प्रकट होता है। (इदं सर्वं) यह सब जो (एजत्) गति कर रहा है, (प्राणत्) प्राणवाला वस्तु मात्र है और (प्रतिष्ठितं) स्थावर है, वह सब (तत्र) उसी प्रभु में (आ अर्पितम्) पूर्ण रूप से आश्रित है।

सब कालों में एक-सा रहने वाला, जिसका ध्यान करने से ज्ञान स्वतः जागृत होता है। जिसे प्राप्त कर और कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं रहता, हृदय मंदिर में जिसका दर्शन कर हम प्रकाश पुंज बन जाते हैं और अज्ञान हम से दूर हो जाता है।

जो कुछ भी इन्द्रियों द्वारा देखा सुना जाना जा सकता है, जो गतिशील है, जो प्राणवान् है वह सब प्रभु के ही आश्रित है और वही देवाधिदेव सब का संचालन कर रहा है।

उसकी तुलना नहीं, उपमा नहीं, वह महान् है, जो भी है वह ही है। हम, आप और सब उसे पाकर अपनी पूर्णता सिद्ध कर दुःख सागर से छूट सकते हैं।

सबका स्वामी, पालक प्रेरक
गति दाता जीवन का गीत।
तीन काल में भी न बदलता,
जिसका मधुमय मधु संगीत।
प्राण प्रदाता, पूर्ण पुरुष है,
प्राणों की गरिमा का प्राण।
स्थावर जंगम सबका स्वामी,
हृदय ज्योति का पावन गान।
वही पूज्य है, वही लक्ष्य है,
वह ही अपना लक्ष्य महान्।
उसकी महिमा निरख रहे हैं,
सूर्य चन्द्र सब देव ललाम।
हम भी उस के पास बैठकर,
अमृत का मधु पान करें।
जीवन के प्रतिपल में साधक,
शांति सुधा का भाव भरें।

—वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमें संघर्ष करना है—

अखंड हिन्दुस्थान के लिए

हम चाहते हैं—

त्याग वाद : समाजवाद नहीं

धर्मराज्य : सैक्युलरवाद नहीं

सब का समान अधिकार—

सब के लिए समान नियम : साम्प्रदायिकता नहीं

राष्ट्र की एकता और आजादी

गौरव और परंपरा की रक्षा के लिए संघर्ष करो।

वेद-गौ-गंगा-गायत्री

की सुरक्षा के लिए कुछ करो या मरो

संयोजक—अखिल भारतीय भारत रक्षा समिति

वेद मन्दिर, नई दिल्ली-११०००५

वेद मन्दिर की यज्ञशाला

आपके सहयोग के बिना अधूरी पड़ी है।

एक दिन व्रत रख कर भी

यज्ञशाला के निर्माण के लिए अपनी आहुति भेजिए

५०१) देने वालों के नाम

पत्थर पर अंकित किये जायेंगे

धन 'दयानन्द संस्थान'
के नाम ही भेजें

राकेश रानी
अध्यक्ष
दयानन्द संस्थान
वेद मन्दिर, नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी बात

अब नहीं ·····तो
फिर कभी·····नहीं।

यह हमारा दुर्भाग्य है कि आज की गंभीर परिस्थितियों पर किसी का भी ध्यान नहीं जा रहा। अब से ३३ वर्ष पूर्व भी ऐसा ही वातावरण था, ऐसी ही देश की धारा थी, परिणामस्वरूप देश के टुकड़े हुए और लाखों लोगों ने अपने जीवन की आहुति दे दी।

किन्तु इतने बड़े विनाश से भी हमने कोई शिक्षा ग्रहण नहीं की और आज फिर वही सांप्रदायिकता पूरे बल से फुंकार रही है। स्थान-स्थान पर मुस्लिम सम्मेलन हो रहे हैं। विशेष संरक्षण माँगा जा रहा है। वही जहर फिर फैलाया जा रहा है।

राजनीतिक कर्णधारों की आंखों पर पक्षपात का चश्मा चढ़ा है या स्वार्थ का—इस का निर्णय तो वे ही करें पर यह निश्चित है कि वे हिन्दुओं की हर बात में साम्प्रदायिकता के दर्शन करते हैं और मुसलमानों की जहर भरी बातें भी उन्हें देशभक्ति लगती हैं।

अभी वाराणसी में विशाल सम्मेलन होकर निपटा है। मुरादाबाद, पटना आदि ६ स्थानों पर मुस्लिम विश्वविद्यालय खुल रहे हैं। क्या किसी को चिन्ता है? अगले २० वर्षों में भारत एक इस्लामी देश बन जाएगा—क्या आप इस बात की कल्पना कर उस समय की स्थिति का चित्र अपने मस्तिष्क में कभी अंकित कर पाए हैं। क्या होगा तब, जब भारत में फिर इस्लामी परचम लहराएगा। आपकी धन सम्पदा, मान मर्यादा, बहू-बेटियां क्या तब सुरक्षित रह पाएंगी?

हमें आश्चर्य इस बात का है कि अकबर तो जीवित हो गया पर महाराणा प्रताप का पता नहीं। औरंगजेब तो सिर उठा रहा है पर शिवाजी की नींद गहरी है।

हम ने निरंतर आपको जगाया है पर आप जागना नहीं चाहते। हमारा ध्यान केवल रोटी—कपड़ा—मकान में अटका है। और कोई कर्तव्य न स्मरण है न ही स्मरण करना चाहते हैं।

यह सभी कुछ मृत्यु का निमंत्रण नहीं तो और क्या है, मेरे भाई! आप सभी सोचें, धार्मिक हिन्दू संगठनों के कर्णधार सोचें और अधिक नहीं तो कम से कम अपनी रक्षा का, राम-कृष्ण-गौ-गंगा-गायत्री की रक्षा का स्थायी प्रबंध करें।

विनाश के बादल मंडरा रहे हैं। वे बरस ही जाएंगे तो फिर नींद खुली भी तो पछताने के सिवा और क्या होगा?

सोचिए और दूसरों को सोचने की प्रेरणा दीजिए। यही हमारी प्रार्थना है।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पढ़िए : पढ़ाइए : नया साहित्य

● ● ●

१. छत्रपति शिवाजी मूल्य ३)

२. HINDUTWA :
वीर सावरकर लिखित मूल्य २)

३. इस्लामी साम्राज्यवाद की
चुनौती मूल्य)४०

४. योग का मार्ग मूल्य)४०

५. मां गायत्री मूल्य)४०

६. वीर बच्चों की अमर कहानियां मूल्य २) ५०

७. शहीद श्रद्धानन्द मूल्य)८०

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं वेद मन्दिर से लिख रहा हूँ-

अब समय नहीं है

११ दिसंबर से आज तक खाट पर पड़े-पड़े जो बन पड़ रहा है कर रहा हूं और साथ ही प्रतिपल प्रभु के आमंत्रण की प्रतीक्षा भी। जो कुछ सोचा था, वह पूरा नहीं कर सका, संभवतः प्रभु की यही इच्छा थी। उसके आगे सिर झुकाने के सिवा हम कर ही क्या सकते हैं ?

राजधानी में वेद मंदिर में वेद विश्वविद्यालय की स्थापना का सपना मैं पूरा न कर सका, इसका जहाँ मुझे कष्ट है, वहां यह आशा भी है कि वेद के प्रति आस्थावान् व्यक्ति मेरी इस भावना को अवश्य ही पूर्ण करेंगे।

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द का लक्ष्य था वेद की विचारधारा का साम्राज्य स्थापित करना। हम ने इसी उद्देश्य से वेद-मन्दिर निर्माण का संकल्प लिया था। इस कार्य को आप जिस दिन अपना कार्य समझ स्वयं संभाल लेंगे, उस दिन मेरा सपना स्वयं पूरा हो जाएगा।

यमुना तीर पर पावन मन्दिर में गूंजती वेद की ऋचाओं का संगीत जिस दिन मानव मात्र के अंतर को झंकृत करेगा, जिस दिन वेद की शिक्षाओं पर आचरण कर संसार के सभी देश अपने को धन्य मानेंगे, जिस दिन मनुष्य मनुष्य बनकर धरती पर रहना सीख लेगा, उस दिन वेद मन्दिर का, दयानन्द का भाव साकार होगा। पिछले ३० वर्षों से निरंतर दिन-रात मैंने यही सपना देखा है। हजारों पृष्ठों द्वारा भारत के मानस को उद्बोधित करने का प्रयास किया है। अपने लिए तो कभी सोचा ही नहीं। जो भी चिन्तन हुआ केवल दयानन्द के सपनों के लिए।

वैसे तो जीवन क्षण भंगुर है ही, किन्तु जिस के ऊपर मृत्यु की दुधारी तलवार प्रतिक्षण लटक रही हो, उस मनःस्थिति में भी हमने अपने शेष शक्ति-साधन से इसी सपने में रंग भरने का प्रयास किया है।

१४ मार्च को जीवन के ५१ वर्ष पूरे कर ५२वें वर्ष में प्रवेश कर पाऊंगा या नहीं, यह भी नहीं कह सकता। फिर भी अपनी साधना से कामना यही होगी कि जो सपना पिछले ३५-३६ वर्षों से मेरे कार्य का अंग रहा है, उसे पूर्ण करने के लिए कोई न कोई आत्मा अपने जीवन को आहूत करेगी।

प्राणों के स्पंदन में आशा के भावों को छोड़ा नहीं, गति पर नियंत्रण प्रभु का कार्य, पर मेरी चाह यही है कि जीवन का अंतिम पल भी देव दयानन्द चरणों में ही अर्पित रहे।

आप क्या करेंगे, यह सोचना मैंने छोड़ दिया है। केवल अपना कर्त्तव्य स्मरण है। आप अपना दायित्व स्वयं सोचें। अब इतना तो समय ही नहीं कि मैं आप को जगाता रहूँ ..... क्योंकि अब तो कार्य के लिए समय ही थोड़ा है। आप जब जागेंगे तो धरती स्वयं जाग जाएगी और धरती का भाग्य भी जग जाएगा।

मंगल कामनाओं के साथ

आपका

—वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

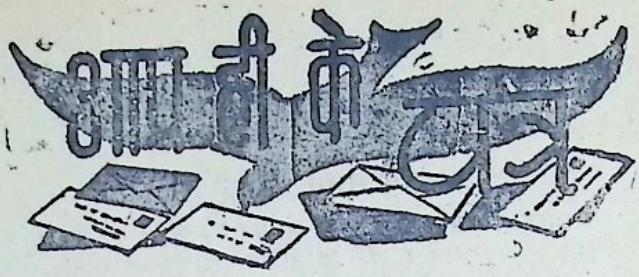

प्रिय महाशय ! नमस्ते !

मैं 'जनज्ञान' का एक पुराना पाठक हूँ और अन्य पत्र-पत्रिकाओं के बीच मुझे इसकी खोज विशेषतः होती है। पत्रिका का कलेवर और विषयवस्तु पूर्णतया सन्तोषजनक है। हिन्दुत्व के प्रति बढ़ते खतरे के रूप में ईसाई एवं मुहम्मदी धर्मान्धता के विरोधस्वरूप जो भेरी-वादन आपने किया है वह स्तुत्य है। ईश्वर इस मिशन में आपको सफल बनावें। यही सतत मंगलकामनारत हूं।

आदरणीय पण्डिता राकेश रानी जी मेरे लिए सदा ही प्रेरणा का दीप रहेंगी। उन्होंने भारत की वर्तमान प्रचलित नैतिकताहीन और केवलमात्र भौतिकता पर टिकी राजनीति के अंधियारे में एक दीपशिखा स्वरूप अपनी आभा प्रकाशित की। हारजीत इतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि मिशन होता है। भारतीय इतिहास में दिल्ली के अन्तिम आर्य सम्राट् पृथ्वीराज चौहान तथा हिन्दू गौरव महाराणा प्रताप और दशमेशपिता गुरु गोविन्दसिंह इसके उदाहरण हैं। आप लोकसभा में भले ही न पहुंच सभी हों, लेकिन हमारे दिलों में बहुत भीतर तक आपकी एक विशिष्ट छवि घर कर गई है। यदि सम्भव हो तो अपने आशिषवचनों युक्त उनका एक छायाचित्र मुझे भिजवाने की कृपापूर्ण व्यवस्था कर अनुगृहीत करें।

जनज्ञान के विगत अंकों में प्रातः स्मरणीय ऋषि दयानन्द जी के जीवन का प्रकाशन आपने शुरू किया था। लेकिन जुलाई-अगस्त के अंक के अन्त में आर्यसमाज लाहौर के ५ नियम देकर पुस्तक को अपूर्ण छोड़ दिया गया था। उसके बाद के किसी भी अंक में उस शृंखला को फिर नहीं छेड़ा गया। क्या वह लेख वहीं तक था ? अथवा आगे भी चलेगा ? मुझे यह लेख बेहद पसन्द आया था, इसीलिए पूछ रहा हूँ। यदि वह लेख आगामी अंकों में छपा भी होगा तो मेरे वाली प्रतियों में वह सामग्री नत्थी नहीं है, अतः कृपया सूचित करें ताकि मैं अपनी वह फाइल पूरी कर सकूं।

शेष कुशल है। पण्डिता राकेश रानी जी तक मेरी शुभ कामनाएं और विनम्र निवेदन पहुँचाने का कष्ट अवश्य करें, जिसके लिए आपको अग्रिम धन्यवाद।

भवदीय

आर्यावर्तेश्वर सिंह

हांसी (हरयाणा)

इस अंक में उक्त पुस्तक के १६ पृष्ठ दे रहे हैं। —सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

.....और अब विधान सभाओं के चुनाव

—सत्यपाल शास्त्री

१७ और १८ फरवरी के बीच की आधी रात को राष्ट्रपति श्री नीलम् संजीव रेड्डी ने एक उद्घोषणा पर हस्ताक्षर किये, जिसके अधीन नौ राज्यों की विधान सभाएं भंग कर दी गईं। ये राज्य हैं—उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, पंजाब, गुजरात, ओड़िसा, महाराष्ट्र और तमिलनाडु। इस आशय का फैसला १७ फरवरी की रात को ही केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल की एक आपातकालीन बैठक में किया गया। इन सब राज्यों में गैर-कांग्रेसी (इं.) मन्त्रिमण्डल थे। इन्हें इस आधार पर अपदस्थ किया गया है कि हाल ही में लोक सभा के जो चुनाव हुए, उनसे यह सिद्ध हो जाता है कि ये मन्त्रिमण्डल मतदाताओं के विचारों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते। मार्च १९७७ के चुनाव में जब कांग्रेस पराजित हो गई थी, तब जनता पार्टी की सरकार ने इसी आधार पर नौ राज्यों के मन्त्रिमण्डलों को अपदस्थ कर दिया था। तब जिन राज्यों के मन्त्रिमण्डलों को अपदस्थ किया गया था, वे थे—उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल, ओड़िसा, मध्यप्रदेश, पंजाब, राजस्थान, हरयाणा और हिमाचल प्रदेश।

इस बार स्थिति यह है कि हरयाणा और हिमाचल प्रदेश में दलबदल के फलस्वरूप इन्दिरा कांग्रेस की सरकारें बन चुकी हैं। कर्नाटक में श्री देवराज अर्स ने कई पलटे खाये। लोकसभा के चुनाव में वहां एक को छोड़कर सब सीटों पर इंदिरा कांग्रेस की विजय हुई थी, जिस पर श्री अर्स ने मुख्यमन्त्रिपद से त्यागपत्र दे दिया। वहां भी बड़ी संख्या में दलबदल के फलस्वरूप श्री गुंडूराव के नेतृत्व में इन्दिरा कांग्रेस की सरकार स्थापित हुई। इन्दिरा सरकार ने पश्चिम बंगाल, केरल और त्रिपुरा की सरकारों पर हाथ नहीं डाला। इन तीनों राज्यों में मार्क्सवादी कम्युनिस्टों की सरकारें हैं। कशमीर में नेशनल कान्फरेन्स की सरकार है। दिल्ली की महानगर परिषद् और नगर निगम के सिर पर भी तलवार लटक रही है। श्री जगमोहन की उपराज्यपाल के पद पर नियुक्ति इस ओर संकेत करती है। उत्तरप्रदेश मंत्रिमण्डल भंग किये जाने से एक-दो दिन पूर्व वहां के राज्यपाल श्री जी. डी. तपासे को हरयाणा स्थानान्तरित कर दिया गया और उनके स्थान पर नेहरू परिवार के विश्वस्त साथी श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद नारायण सिंह आ गये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रपति के आदेश से जिन मुख्यमन्त्रियों की छुट्टी कर दी गई है, वे हैं उत्तर प्रदेश के श्री बनारसीदास (लोकदल), बिहार के श्री रामसुन्दर दास, राजस्थान के श्री भैरोंसिंह शेखावत, मध्यप्रदेश के श्री सुन्दरलाल पटवा, गुजरात के श्री बाबूभाई पटेल (सब के सब जनता पार्टी के), महाराष्ट्र के श्री शरद पवार (प्रगतिशील लोकतान्त्रिक मोर्चा), तमिलनाडु के श्री एम. जी. रामचन्द्रन् (अन्ना द्रविड़ मुन्नेत्र कपगम्), उड़ीसा के श्री नीलमणि राउतरे (लोकदल) और पंजाब के सरदार प्रकाश सिंह बादल (अकाली दल)।

मार्च के अन्त में राज्यसभा के द्विवार्षिक चुनाव होने वाले थे। इन नौ राज्यों में ये चुनाव स्थगित कर दिये गये हैं। वर्त्तमान संकेतों के अनुसार अप्रैल के प्रारंभ में इन राज्यों की विधान सभाओं के चुनाव के लिए अधिसूचना जारी कर दी जायेगी और मई के दूसरे सप्ताह में चुनाव सम्पन्न हो जायेंगे।

राज्य विधानसभाओं के भंग किये जाने के अनेक कारण दिये जा सकते हैं। लेकिन मुख्य कारण यह है कि हमारे देश का शासन जिस ढंग से चल रहा है, उसमें केन्द्र और राज्यों में अलग-अलग दलों की सरकारें होने पर उनमें टकराव की सम्भावना बनी रहती है। इसके अतिरिक्त राज्य सभा में बहुमत की समस्या है। यदि यही विधान सभाएं राज्य सभा के लिए नये सदस्य चुनतीं तो इन्दिरा कांग्रेस के सदस्यों की संख्या और भी घट जाती, जब कि वर्तमान सदन में भी इन्दिरा कांग्रेस को बहुमत प्राप्त नहीं। (राज्य सभा के सदस्य ६ वर्ष के लिए चुने जाते हैं और हर दूसरे वर्ष एक तिहाई सदस्य निवृत्त हो जाते हैं।) क्योंकि जून १९७७ के चुनाव में जनता पार्टी को इन विधान सभाओं में बहुमत मिला था, इसलिए उसका प्रभाव राज्य सभा के इस द्विवार्षिक चुनाव पर पड़ता। १९७८ के राज्य सभा चुनाव में भी जनता पार्टी ने अपनी स्थिति सुधारी थी, यद्यपि उसे बहुमत प्राप्त न हुआ था। अब इन्दिरा कांग्रेस को आशा है कि वह विधान सभाओं के चुनाव में बहुमत प्राप्त करके उसके बल पर राज्य सभा में न केवल स्पष्ट बहुमत अपितु दो तिहाई बहुमत प्राप्त करेगी। जनता पार्टी में फूट पड़ चुकी है। कुछ सदस्यों ने लोक दल के नाम से अलग खिचड़ी पका ली है। जनता पार्टी के बचे-खुचे संगठन का यह हाल है कि जगजीवन रामजी और श्री चन्द्रशेखर में लोकदल के सहयोग के प्रश्न पर मतैक्य नहीं और जनसंघ घटक पर चारों ओर से दबाव पड़ रहा है कि 'या तो आप जनता पार्टी को सुधारीए या नये सिरे से अलग संगठन बनाइए।' यदि जनता पार्टी लोकदल से समझौता करती है, तो जगजीवनराम जी नाराज होते हैं, और यदि नहीं करती तो इन्दिरा कांग्रेस उसे निगलने को तैयार बैठी है। लोक सभा की सीटों की दृष्टि से बेचारी जनता पार्टी लोकदल तो क्या मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी से भी पीछे है। उस की दशा सचमुच दयनीय है। जो भी उठता है, उस पर कीचड़ उछालने लगता है। अब जगजीवनराम जी फरमाते हैं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्त्ताओं ने जनता पार्टी के लिए काम नहीं किया—यहां तक कि कई स्थानों पर इन्दिरा कांग्रेस के लिए काम किया। प्रश्न साफ है। यह सम्भव ही कैसे है कि रा. स्व. संघ के कार्यकर्ता उन लोगों के लिए काम करें, जो उन्हें रात-दिन दिखावटी धर्म निरपेक्षता के पाठ पठाते हैं। यदि जनता पार्टी भी अन्य दांवों की तरह धर्मनिरपेक्ष है (धर्म निरपेक्षता और सर्वधर्म समभाव में अन्तर हैं, तो रा.स्व. संघ के कार्यकर्ता जनता पार्टी के लिए ही क्यों काम करें? इन्दिरा कांग्रेस की ओर, क्यों न झुकें? शायद जनता पार्टी के नेता चाहते हैं कि रा. स्व. संघ के कर्यकर्ता उनके लिए दरियाँ बिछायें और स्टेज सजायें और तब ये नेता वहां आकर धर्मनिरपेक्षता पर और तथाकथित साम्प्रदा-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यिकता के विरुद्ध लच्छेदार भाषण झाड़ें ऐसा कभी नहीं हो सकता। मार्च १९७७ की बात दूसरी थी। तब रा. स्व. संघ पर रोक लगी हुई थी। आपात स्थिति भी नहीं हटाई गई थी। रा. स्व. संघ ने उस स्थिति का अन्त करने के लिए जी जान से जनता पार्टि के लिए काम किया और परिणाम आशा से बढ़ कर निकला। जब तक जनता पार्टी के नेता रा. स्व. संघ को साम्प्रदायिकता के ताने मारना बन्द नहीं करेंगे तब तक उन्हें रा. स्व. संघ का सहयोग नहीं मिल सकता।

"मैं इधर जाऊं या उधर जाऊं?"

ज्यों-ज्यों दिन बीतने जाते हैं, जगजीवनराम जी जनता पार्टी से अधिकाधिक दूर होते जाते हैं। ऊपर की पंक्तियां लिखी जा चुकी थीं, जब समाचार मिला कि बाबू जी का जनता पार्टी से मोह भंग हो गया है और उन्होंने जनता पार्टी छोड़ने का आखिरी फैसला कर लिया है।

अब उनकी दुबिधा यह है कि कौन-से दल में जायें। इसके अतिरिक्त वह अकेले नहीं जायेंगे, अनेक समर्थकों के साथ जायेंगे। इन्दिरा कांग्रेस में तुरन्त प्रवेश शोभनीय नहीं होगा। अर्स कांग्रेस के बारे में आम विचार यह है कि यह कोई राजनैतिक पार्टी नहीं, बल्कि चाय पार्टी है—इस दृष्टि से कि इसमें सुविधाभोगी नेता तो अनेक हैं, लेकिन कार्यकर्त्ता कहीं दिखाई नहीं देते। सब बड़े-बड़े कांग्रेसी इन्दिरा कांग्रेस में शामिल हो चुके हैं—मुट्ठीभर प्रादेशिक नेताओं को छोड़कर। जैसा हमने ऊपर लिखा—बाबू जी लोकदल के सहयोग करने के पक्ष में नहीं। बाबू जी का कहना है कि "लोकदल के नेताओं में प्राथमिक मानवीय मूल्यों तक का अभाव है। लोकदल के साथ सहयोग करने से तो पराजय ही अच्छी है।" सम्भव है कि बाबू जी को योजना कमीशन का उपाध्यक्ष बना दिया जाये। यह भी सम्भव हैं कि वह कांग्रेस में सम्मिलित हो जायें। जनता पार्टी से उनका सम्बन्ध विच्छेद पक्का है।

हमारे देश में चुनावों में जातपात की दुहाई इतना असर डालती है कि अन्य बातों का असर बहुत कम पड़ता है। पिछले चुनाव में जनता पार्टी का नारा था—सदियों का कलंक मिटाना है, जगजीवनराम को लाना है। सवर्ण हिन्दुओं को यह नारा पसन्द न आया। हरिजनों के वोट भी इन्दिरा कांग्रेस को काफी संख्या में मिले। इन्दिरा कांग्रेस ने बड़ी संख्या में युवा उम्मीदवारों को मैदान में उतारा। लोक दल जाटों के वोट बटोरने में सफल रहा। परिणाम यह हुआ कि जनता पार्टी के कुल उम्मीदवारों में से केवल सात-आठ प्रतिशत को सफलता मिली। उत्तर प्रदेश से लोक सभा के ८५ उम्मीदवार चुने जाते हैं। जनता पार्टी को केवल तीन सीटें मिलीं। अनेक राज्यों में उसे एक भी सीट नहीं मिली। जनता पार्टी के नेता दबे शब्दों में इसके लिए बाबू जी को उत्तरदायी ठहरा रहे हैं। फलस्वरूप बाबूजी ने अपने आपको उपेक्षित अनुभव किया और यह पग उठाया। समय ही बतायेगा कि उनका राजनैतिक भविष्य उज्ज्वल है या अन्धकारमय?

असम की स्थिति

नौ राज्यों की विधान सभाएं तो भंग की गई हैं, लेकिन असम की विधान सभा भंग नहीं की गई, अपितु निलम्बित की गई है। मतलब यह है कि उसे पुनः प्रतिष्ठापित किया जा सकता है। असम में पाँच महीने से आन्दोलन चल रहा था कि वहाँ से विदेशियों को निकाला जाये। अब यह आन्दोलन पुनः प्रारंभ कर दिया गया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हाल ही में अखिल असम छात्रसंघ के नेताओं ने दिल्ली आकर प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह से बातचीत की। फलस्वरूप आन्दोलन वापस तो न लिया गया, दस दिन के लिए स्थगित कर दिया गया। नई दिल्ली में हुई बातचीत में छात्र संघ के नेताओं ने पूर्ण सन्तोष व्यक्त किया था, क्योंकि उनकी अधिकतर मांगें मान ली गई थीं। उसके बाद केन्द्रीय गृह मन्त्रालय ने राज्य सरकार से कहा कि वह असम से लोक सभा की बारह सीटों के चुनाव के लिए चुनाव आयोग से मतदाता सूचियों में संशोधन करने को कहे, क्योंकि जब भी कहीं चुनाव होता है, नियमानुसार उन्हीं मतदाता सूचियों के आधार पर होता है, जो उस वर्ष पहली जनवरी को या उसके बाद संशोधित की गई हों। अब छात्र संघ ने कहा है कि आन्दोलन तभी वापस लिया जायेगा, जब विदेशी नागरिकों के सम्बन्ध में "निश्चित और स्पष्ट" नीति निर्धारित की जायेगी। सरकार ने आन्दोलनकारियों की माँगों को तर्कसंगत मान कर उन्हें पूरी करने की दिशा में पग उठाने भी प्रारम्भ कर दिये थे। छात्रों को समझना चाहिए कि ऐसी जटिल समस्याओं का समाधान रातों-रात होना सम्भव नहीं। सम्भवत छात्रसंघ, जो गण संग्राम परिषद् का घटक है, परिषद् को यह नहीं समझा पाया कि अब जब केन्द्रीय सरकार आन्दोलनकारियों की मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार कर रही है, आन्दोलन समाप्त करने का समय आ गया है।

असम के आन्दोलन से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बहुत हानि पहुंच रही है। जैसा केन्द्रीय पैट्रोल और रसायन मन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने कहा, असम में तेल-शोधक कारखानों के बन्द होने से दो लाख टन एच.एस.डी की हानि हुई है, जिसका मूल्य ५६ करोड़ रुपये होता है। इसके अतिरिक्त ५० हजार टन मिट्टी के तेल की हानि हुई है, जिसका मूल्य १५ करोड़ रुपये बैठता है। असम में तेल उद्योग के अस्त-व्यस्त होने से खेती-बाड़ी के काम और औद्योगिक सामान की तैयारी में भी बाधा पड़ती है। डीजल और मिट्टी का तेल न मिलने से सारे उत्तर-पूर्वी क्षेत्र को हानि उठानी पड़ रही है। परिवहन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने के कारण असम और त्रिपुरा से चाय नीलामी के लिए कलकत्ता के बाजार में भेज पाना सम्भव नहीं हो रहा। अनुमान है कि तेल शोधन का काम पुनः प्रारम्भ हो जाने के बाद भी असम से पैट्रोलियम पदार्थों की सप्लाई सामान्य होने में कम से कम एक महीना लगेगा।

वैद्यलिंगम् रिपोर्ट

तीन फरवरी को यूनाइटिड न्यूज आफ इंडिया ने इस आशय का एक समाचार प्रसारित किया कि न्यायमूर्ति वैद्यलिंगम् ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि पहली ही दृष्टि में यह मामला बनता है कि भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई के पुत्र कान्ति लाल देसाई ने संविधानेतर अधिकारों का इस्तेमाल किया। न्यायमूर्ति वैद्य-लिंगम् ने यह भी लिखा कि मोरारजी भाई की बहू पद्मा देसाई ने अपनी हैसियत का इस्तेमाल करते हुए अपीलीय सहायक आयकर कमिश्नर पर दबाव डाला कि वह उक्त फैसले के विरुद्ध अपील न करें। उसी प्रकार इस रिपोर्ट में चौधरी चरण सिंह की धर्मपत्नी श्रीमती गायत्री देवी के बारे में कहा गया है कि उन्होंने तत्कालीन गृह मन्त्री (चौ. चरणसिंह) की धर्मपत्नी के नाते अपने अधिकार का इस्तेमाल करते हुए चौकरा की वारदात से सम्बन्धित फौजदारी के मामले में दखल दिया। (मथुरा से जनता पार्टी के विधायक राधेश्याम शर्मा का कहना है कि चौकरा गांव में कुछ जाटों ने ब्राह्मणों के घर लूटे और महिलाओं से बलात्कार किया। श्रीमती गायत्री देवी के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हस्ताक्षेप पर पुलिस ने अभियुक्तों को जमानत पर रिहा कर दिया और थाने के सम्बन्धित अधिकारी का स्थानान्तरण कर दिया गया।)

विधि की विडम्बना देखिए कि कहां तो मोरारजीभाई और चौधरी साहब ने श्रीमती इन्दिरा गान्धी और उनके पुत्र संजय गान्धी के विरुद्ध कमीशन बिठाये थे और कहां अब कमीशन उनके सम्बन्धियों पर आरोप लगा रहा है।

पाठकों को याद होगा कि राज्यसभा में कान्ति देसाई पर आरोप लगाये गये थे और मांग की गई थी कि इन आरोपों की जांच के लिए कमीशन बिठाया जाये। पहले तो मोरारजीभाई ने यह मांग न मानी, लेकिन जब राज्य सभा ने बहुमत से इस आशय का प्रस्ताव स्वीकृत कर दिया और सदन के तत्कालीन नेता श्री एल.के. आडवाणी ने त्यागपत्र की धमकी दी, तब मोरारजी भाई ने सारे आरोप उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायधीश श्री वाई. वी. चन्द्रचूड़ को भेजने की पेशकश की श्री चन्द्रचूड़ ने इस विवाद में पड़ने से इनकार करते हुए इस काम के लिए श्री वैद्यलिंगम् का नाम सुझाया। अब स्थिति यह है कि चौधरी चरणसिंह ने तो इन्दिरा सरकार की चुनौती स्वीकृत कर ली है और सारा मामला पुलिस के हवाले करने की पेशकश की है, लेकिन मोरारजीभाई ने अपने स्वभाव के अनुसार अपने पुत्र को सर्वथा निर्दोष मानते हुए कहा है कि "ऐसा प्रतीत होता है कि न्यायाधीश ने सहज न्याय के प्रारम्भिक नियमों का भी पालन नहीं किया।"

११ मार्च से संसद् का अधिवेशन प्रारम्भ हो रहा है। उसमें यह मामला उठाया जायेगा। तभी पता चलेगा कि आरोपों-प्रत्यापों के इस वाग्युद्ध में विपक्ष जीतता है या शासक दल। वैसे पांच फरवरी को राज्यसभा के पटल पर इस रिपोर्ट का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर दिया गया था।

---

१५१) में चारों वेदों का भाष्य सुरक्षित कराएं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—आचार्य ब्रह्मदत्त पाठक

साम्प्रदायिक कौन है ?

योगियों को छोड़कर प्रत्येक व्यक्ति के मानस पर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जन्म अंग्रेजों की मुस्लिमफेषक नीति और कांग्रेस की मुस्लिमतुष्टीकरण नीति की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। पक्षपात और तुष्टीकरण की यह प्रक्रिया आज भी जारी है। अब भी राष्ट्रीय प्रश्नों पर दलीय दृष्टिकोण से विचार किया जाता है। क्षुद्र स्वार्थों के लिए राष्ट्रीय हित की उपेक्षा की जाती है। द्विराष्ट्र सिद्धान्त की जननी और भारत के विभाजन की उत्तरदायी मुस्लिम लीग से गठजोड़ करने वाले भी अपने आपको धर्मनिरपेक्षता और सर्व धर्म समभाव का समर्थक बताते है। श्रीमती इन्दिरा गांधी का तो कहना है कि मुस्लिमलीग उत्तर भारत में साम्प्रदायिक हैं, लेकिन दक्षिण भारत में साम्प्रदायिक नहीं। मन, वचन और कर्म से भारत को मातृभूमि, पितृभूमि, प्रेरणा स्रोत, श्रद्धा का केन्द्र विन्दु और अशरण शरण मानने वाले रा. स्व. संघ को आज साम्प्रदायिक ठहराया जा रहा है।

अल्पसंख्यकों के पृथक् अस्तित्व की बात मानना एक सही बात है, लेकिन यह कहना सही नहीं कि बहुसंख्यकों की साम्प्रदायिकता अल्प संख्यकों की साम्प्रदातिकता की अपेक्षा अधिक खतरनाक है। दोनों ही समान रूप से खतरनाक हैं। (लोकतन्त्र के बारे में भी हमारा विचार है कि अन्य देशों में यह भले ही सफल रहा हो, लेकिन हमारे देश में इस तथाकथित लोकतन्त्र ने आपाधापी को जन्म दिया है।) हमारे देश में यह फैशन हो गया है कि हिन्दू हितों की बात करने वालों को साम्प्रदायिक कह कर बदनाम किया जाता है। अल्पसंख्यकों के सामूहिक वोट प्राप्त करने के लिए हिन्दुओं की भावनाओं से खिलवाड़ करना हमारे देश के पेशेवर राजनीतिकों का धन्धा ही बन गया है। पिछले दिनों उत्तर प्रदेश में जिस प्रकार उर्दू का स्थान संस्कृत को दिया गया, उससे यह बात स्पष्ट हो जाती है। कम्युनिस्ट पार्टी ने पाकिस्तान की मांग तक का समर्थन किया था। विभाजन हुआ भी साम्प्रदायिक आधार पर। तब इन लोगों को धर्म निरपेक्षता याद नहीं आई।

दोहरी निष्ठा का प्रश्न

कुछ लोगों नें जनता पार्टी में दोहरी निष्ठा (या कहिए सदस्यता) का प्रश्न उठाकर दल को तोड़ा और खूब ऊधम मचाया। इसके पीछे कम्युनिस्ट पार्टी, मुस्लिमलीग और ईसाई मिशनरियों की शाह थी। कहा गया कि दोहरी सदस्यता का प्रश्न तुरन्त सुलझाया जाना चाहिए। लेकिन बाहरी देशों के प्रति निष्ठा रखने वालों से सामना होने पर ये लोग चुप्पी लगा जाते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे देश में क्या होता है ? भारत हाकी के मैच में पाकिस्तान से हार गया, तो मुसलमानों ने रेडियो सैटों को हार पहना कर अपना हर्ष प्रकट किया। किसी हिन्दू पर्व पर जुलूस निकले, तो मुसलमान उसे अपनी बस्ती में से गुजरने नहीं देते। मस्जिद के सामने बाजा बजने पर दंगा हो जाता है। (अकबर इलाहबादी के शब्दों में—आये हँसी न क्यों हमें इस जिद के सामने, बाजा बजे न भूलकर मस्जिद के सामने।) जुल्फिकार अली भुट्टे को फांसी दी जाती है, तो भारत में हड़-ताल हो जाती है। काबा की मस्दि पर हमला होता है, तो कलकत्ता और हैदराबाद में उपद्रव होते हैं। रजनीश सदृश तथाकथित धर्मगुरु उपदेश देते हैं कि हिन्दू धर्म में धर्मान्तरण (अथवा शुद्धि) के लिए कोई स्थान नहीं, जबकि अन्य मतावलम्बी धड़ल्ले से धर्मान्तरण कर रहे हैं। मद्रास में पाकिस्तान क्रिकेट मैच में भारत से हार गया, तो अहमदाबाद में दंगा हो गया। मुसलमान परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि "या खुदा, पाकिस्तान को आबाद रखना।" मुसलमान भारत में रहते हैं, लेकिन मक्का-मदीना के गीत गाते हैं—मेरे मौला, मदी ने बुला ले मुझे; अब तो यह तूती अरब के चमन में रहेगी। इन्दिरा मन्त्रिमंडल के एक मुसलमान सदस्य ने कुछ वर्ष पूर्व बहुपत्नी प्रतिबन्ध बिल का विरोध करते हुए कहा था कि मुस्लिम राष्ट्रों की संसद् को ही मुस्लिम पर्सनल ला में परिवर्तन करने का अधिकार है। (यह भारतीय संसद् की सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्नता को चुनौती नहीं, तो और क्या है ?)

नये विभाजन की तैयारी

संसद् की सम्पूर्ण प्रभुत्व संपंनता को चुनौती देने वाले भारत के नये विभाजन की तैयारी कर रहे हैं। यदि हमारे देश को सचमुच जनसंख्या विस्फोट की समस्या का सामना है, तो सारे देश पर बहुपत्नी प्रतिबन्ध कानून लागू करना होगा। सर्व धर्म समभाव का यही तकाजा है। अन्यथा साम्प्रदायिकता का विरोध दिखावा ही नहीं, कहना चाहिए कि बहकावा मात्र होगा। हिन्दुओं के लिए नारा हो 'हम दो, हमारे दो' और मुसलमानों के लिए 'हम पाँच, हमारे दस' यह स्थिति अधिक समय तक नहीं चल सकती।

पारसी भी तो अल्पसंख्यक हैं। उन्होंने तो कभी शोर नहीं मचाया कि "हमारा मजहब खतरे में है।" उन्होंने इस देश में शरण ली और अब तक वे सुख-सुविधापूर्वक रह रहे हैं। भारत के राष्ट्रपति पद पर दो बार मुसलमान अधिष्ठित रह चुके हैं, दोबार मुसलमान उपराष्ट्रपति पद भी पा चुके हैं। अल्प-संख्यकों को ये पद देने ही हैं, तो पारसियों, ईसाइयों, सिखों, बौद्धों, जैनों इत्यादि को भी इन उच्च पदों पर अधिष्ठित किया जाना चाहिए। (वैसे सिख दो बार लोक सभाध्यक्ष का पद पा चुके हैं।) अन्य देशों में अल्पसंख्यकों के साथ क्या सलूक होता है, यह हमारे पाठक "इलस्ट्रेटिड वीकली आफ इंडिया" के सम्पादक श्री एम. वी. कामत के लेख में (जो जनज्ञान के जनवरी अंक में उद्धृत किया गया था) पढ़ चुके हैं।

दंगों का कारण

केवल हिन्दू-मुस्लिम दंगे ही क्यों होते हैं ? पाकिस्तान क्यों बना ? मिजोरम और नागालैंड की समस्या क्यों खड़ी हुई ? जब हिन्दू अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार करते हैं, तब उन्हें साम्प्रदायिक कहकर बदनाम किया जाता है। धर्म-निर-पेक्षता का राग अलापने वाले कश्मीर के पाकिस्तान अधिकृत क्षेत्र को मुक्त क्यों नहीं करवाते ? हिन्दुओं के साथ अन्याय का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि केरल में रा.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व. संघ की शाखाओं पर रोक लगा दी गई है। यही कुछ कर्नाटक में हो रहा है। सम्भल, हैदराबाद, अहमदाबाद, लखनऊ आदि में मुसलमानों ने दंगे कराये—हिन्दुओं पर अत्याचार किये। पश्चिम बंगाल विधानसभा के उपाध्यक्ष कलीमुद्दीन शम्स साहब फरमाते हैं कि "मैं पहले मुसलमान हूँ, उसके बाद भारतीय।" यदि प्रो० बलराज मधोक मुसलमानों के भारतीयकरण की बात करते हैं, तो क्या बुरा करते हैं?

राजनारायण रा. स्व. संघ के विरुद्ध विष वमन करते हैं। उन्होंने विन्ध्येश्वरी देवी के मन्दिर में मुण्डन करवाया। यह मुण्डन उनका नहीं था—भारतीयता का था, सच्चे लोकतन्त्र का था, भारत की भोलीभाली जनता का था। (यह अच्छा ही हुआ कि जनता ने उनकी उपेक्षा की। विक्षिप्त व्यक्ति से छेड़छाड़ करना बेकार है।) हिन्दू पाकिस्तान में रह भी नहीं सकते और अपने ही देश में उन्हें साम्प्रदायिक ठहराया जाता है। (पाकिस्तान में तो अहमदियों को भी नागरिकता के अधिकार प्राप्त नहीं।)

सच्चा लोकतन्त्र वैदिक धर्म में है—

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

एक बात और। हिन्दू बहुसंख्यक बने रहे, तो वे अहिन्दुओं के साथ अन्याय नहीं करेंगे। लेकिन यदि मुसलमान बहुसंख्यक हो गये, तो एक नया पाकिस्तान जन्म लेगा और तब वही कुछ होगा, जो आजकल पाकिस्तान में हो रहा है और कुछ सौ वर्ष पूर्व औरंगजेब के शासनकाल में हुआ था।

पर्व सूची

(संवत् २०३६-३७ सन् १९८०)

सं०	पर्व	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी तारीख	दिन
१.	मकरसंक्रान्ति	पौष शु० ११ (२०३६)	१४-१-८०	सोमवार
२.	वसन्त पंचमी	माघ शु० ५ (२०३६)	२२-१-८०	मंगलवार
३.	दयानन्द बोधोत्सव	फाल्गुन वदि (२०३६)	१४-२-८०	गुरुवार
४.	लेखराम तृतीया	फाल्गुन शु० ३ (२०३६)	१९-२-८०	मंगलवार
५.	सीताष्टमी	फाल्गुन शु० ८ (२०३६)	२३-२-८०	शनिवार
६.	नव सस्येष्टि (होली)	फा० शु० १५ (२०३६)	१-३-८०	शनिवार
७.	नवसम्वत्सरोत्सव (आ. स. स्थापना दिवस)	चैत्र शु० १ (२०३६) (दयानन्दाब्द १५६)	१७-३-८०	सोमवार
८.	रामनवमी	चैत्र शु० ९ (२०३७)	२५-३-८०	मगलवार
९.	हरितृतीया	श्रावण शु० ३ (२०३७)	१३-८-८०	बुधवार
१०.	श्रावणी उपाकर्म	श्रा० शु० १५ (२०३७)	२६-८-८०	मंगलवार
११.	कृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद वदि ८ (२०३७)	२-९-८०	मंगलवार
१२.	गुरु विरजानन्द दिवस	आश्विन वदि ३० (२०३७)	९-१०-८०	गुरुवार
१३.	विजय दशमी	आश्विन शु० १० (२०३७)	१८-१०-८०	शनिवार
१४.	ऋषि निर्वाणोत्सव (दीपावली)	कार्तिक वदि ३० (२०३७)	७-११-८०	शुक्रवार
१५.	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष वदि २ (२०३७)	२३-१२-८०	मंगलवार

टिप्पणी—देशी तिथियों के घट-बढ़ जाने से अंग्रेजी तारीखों में परिवर्तन हो सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ बटोही !

---सुमित्रा कुमारी सिन्हा

आज तो सम्मुख खड़ा है कर्म-गति का यान,
ओ बटोही, देर क्या है, चल रहा अभियान !
संग सहचर यदि न आएं आज देने साथ,
तो भला अवरोध क्यों हो, क्यों झुका हो माथ ?
कौन ऐसी है दिशा जो लगन से अनजान ?
ओ बटोही, देर क्या है,चल रहा अभियान !
राह तो गतिमय पगों की देखती है राह,
अंतरंगी मीत बन कर, पास रहती चाह !
वाध्य कब हैं पथ-प्रदर्शक ? दृष्टि देते प्राण !
ओ बटोही, देर क्या है, चल रहा अभियान ;
स्वयं के अवलम्ब की लो हाथ में पतवार ,
नाव जीवन की लगा दो, जगत्-सागर पार,
लक्ष्य, निष्ठा के अविचलित पाल दो तुम तान!
ओ बटोही, देर क्या है, चल रहा अभियान !
देश अपना एक है, अद्वैत का अधिवास,
परिधि जिसकी भूमि से ले कर असीमाकाश,
ध्वनित कण-कण में जहां अध्यात्म के ही गान !
ओ बटोही, देर क्या है, चल रहा अभियान !
विजय-यात्रा में तुम्हारी मनुजता पाथेय,
एक नूतन सृष्टि का निर्माण अपराजेय !
मनोरथ की पूर्ति करता मनोबल का ध्यान !
ओ बटोही, देर क्या है, चल रहा अभियान !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घरेलू इलाज

—राजीव

मदार का दूध

बिसैली, गलका और गुरखुल के कांटे की अचुक दवा है। मदार के पेड़ से पत्ता तोड़िए, दूध टपकने लगेगा। उस में रुई भिगो कर दर्द के स्थान पर बांध दीजिए। इसी से पक कर फूट जाएगा और घाव भर जाएगा।

गूलर का दूध

मुंह में किसी तरह के भी छाले हों, मुंह आया हो, गूलर का दूध मुंह में छालों पर पेन्ट करने से दो-चार रोज में छाले साफ हो जाएंगे।

पपीते का दूध

किसी भी प्रकार के जिगर में खास तौर से बच्चों के जिगर में बहुत फायदा करता है। कच्चे पपीते को सलाई से गोद दें, दूध टपकने लगेगा। उसे बताशे में भर कर सेवन कराएं। एक बार में ५ से १५ बूंद तक उम्र के लिहाज से प्रयोग कराएं।

बरगद का दूध

किसी भी प्रकार दाँत और आंख के रोग में गुणकारी है। यदि ताजा दूध रोज मिल जाए तो आंख में आंजने पर मोतिया बिन्द रोका जा सकता है

दूधिया घास का दूध

पेचिस की अचूक दवा है। खांड के साथ पीस कर पिलाने से खूनी पेचिश को बहुत लाभ होता है।

बकरी का दूध

लू की अचूक दवा है। लू लगने पर पैरों और गर्दन पर मालिश करने से बहुत लाभ होता है।

नित बकरी का दूध सेवन करने से तपेदिक-जैसे रोग से बच सकता है।

गधी का दूध

बच्चों के सूखा रोख में सेवन कराने से चार-छह दिन के बाद ही रोग कटने लगता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत का विभाजन किसने कराया ?

—डा० रामेश्वर दयाल गुप्त

जन ज्ञान के पिछले अंक में मुस्लिम प्रश्न पर एक लम्बा लेख है, जिसमें जमनादास मेहता की पुस्तक "गान्धी-मुस्लिम षड्यन्त्र" के कई उद्धरण हैं। मोस्ले की पुस्तक से भी कुछ वाक्य लिये गये हैं। यह सत्य है कि गान्धी जी पर जो प्रभाव दक्षिण अफ्रीका के मुसलमान मुवक्किलों का था, वे उससे जीवन भर मुक्ति नहीं पा सके। वे उनसे डरते थे। तो भी इतना सत्य है कि वे हिन्दू-मुसलमानों का एक सम्मिलित राष्ट्र बनाना चाहते थे। वे यह भी कहते थे कि भारत का विभाजन मेरी लाश पर होगा। पर उनकी चली नहीं। राजनैतिक विज्ञान का प्राध्यापक होने और भारतीय संविधान के विकास को अपना प्रिय विषय समझने के कारण मेरा यह दृढ़ मत है कि ब्रिटिश सरकार भारत का विभाजन नहीं चाहती थी, यद्यपि अपने शासन-काल में वह मुसलमानों का पक्ष लेती रही। फिर प्रश्न पैदा होता है कि भारत का विभाजन क्यों हुआ ?

इस प्रश्न के उत्तर के लिए हम मार्च ४२ से प्रारम्भ करते हैं, जब युद्ध काल में अमेरिका, चीन और रूस द्वारा जोर डालने पर ब्रिटेन की सरकार ने अपने एक मंत्री स्टेफर्ड क्रिप्स को भारत के नेताओं से बातचीत करने भेजा। इस से पूर्व १९४० में मुस्लिम लीग उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम के दो मुस्लिम बहुत क्षेत्रों में स्वतन्त्र मुस्लिम राज्य बनाकर देश को स्वतन्त्र करने की माँग ब्रिटिश शासन से कर चुकी थी और कांग्रेस ने उसी वर्ष एक प्रस्ताव पास किया था कि किसी भी प्रान्त की भारत संघ से अलग हो जाने की इच्छा होगी, तो उस प्रान्त को हिन्दुस्तान में रखने को मजबूर करने की गलती कांग्रेस नहीं करेगी। पिछले तीन वर्षों (१९३७-१९४०) में भी कांग्रेस ने १९३५ के कानून के अभाग को (जिसमें भारत-संघ सरकार बनाकर चलाने का प्रावधान था) क्रियान्वित न करके केवल प्रान्तीय सरकारों वाला भाग स्वीकार किया था—फलतः जो केवल इस देश के टुकड़े थे, वे प्रान्त हो गये। उनका महत्त्व स्थापित हो गया। इस परिप्रेक्ष्य में क्रिप्स महोदय ने प्रस्ताव किया कि—

१. ब्रिटिश सरकार भारत को राष्ट्रमंडल के अन्तर्गत एक प्रभुत्व-सम्पन्न संघ-राज्य के रूप में संगठित करेगी। बाद में भारत चाहे तो राष्ट्रमंडल छोड़ सकेगा।

२. युद्ध समाप्ति के बाद प्रान्तीय विधान सभाओं के चुनाव होंगे। उनमें चुने हुए विधायक समानुपातिक प्रतिनिधित्व की प्रणाली से अपनी संख्या के १/१० सदस्य चुन कर विधान-निर्मात्री सभा गठित करेंगे। उस सभा के बनाये संविधान को सरकार स्वीकृत कर लेगी पर शर्त यह होगी कि—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोई प्रान्त जो यह विधान माने वह संघ से पृथक् रह कर अपनी वर्तमान स्थिति बनाये रख सकेगा। उसे पृथक उपनिवेश मान लिया जायेगा यदि उस प्रान्त की विधान सभा ६०% से अधिक बहुमत द्वारा संघ-प्रवेश के विरुद्ध हो, परन्तु इस निर्णय की पुष्टि उस प्रान्त में जनमत संग्रह करके की जायेगी। यह स्पष्ट है कि बंटवारे का प्रश्न प्रक्रिया में ६०/° विधायकों के समर्थन पर छोड़ा गया था और केवल सिन्ध में लोगों को बहुमत प्राप्त था, न बंगाल में, न पंजाब में, फ्रंन्टियर में।

परन्तु कांग्रेस ने यह योजना इस लिए नहीं मानी कि तुरन्त केन्द्र में सारे विभाग (युद्ध-समेत) भारत की प्रस्तावित अन्तरिम सरकार को सौंपने का ब्रिटेन का कोई विचार नहीं था। आखिर युद्ध काल में रक्षा विभाग पर अड़ जाने में अधिक तुक नहीं थी। उनके सामने मुख्य प्रश्न तुरन्त, उनके जीवन की सन्ध्या में, ही सत्ता में आ जाने का था—देश की एकता और आगे आने वाली पीढ़ियों में भारत संघ को एक रखने का नहीं था।

फलतः अप्रैल ४२ में ये प्रस्ताव वापस ले लिये गये। अगस्त में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, जिसमें क़रीब ९०० भारतीय मारे गये तथा लगभग ६२,००० व्यक्ति जेलों में बन्द किये गये। डाकघर और रेलवे स्टेशन जलाये गये, रेलें उलटी गईं, तार काटे गये और बम फेंके गये। शासन ने सख्ती से विरोध को दबा दिया। १९४४ में गान्धी जी जब जेल से छूटे तो चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (स्वतन्त्र भारत के पहले भारतीय गवर्नर-जनरल) ने एक फार्मूला रखा जिसमें यह प्रस्ताव था कि

"युद्ध की समाप्ति पर नियुक्त आयोग भारत के उत्तर-पश्चिमी तथा उत्तर-पूर्वी मुस्लिमबहुल भाग का निर्धारण करेगा। उन क्षेत्रों की समस्त जनता मतदान से तय करेगी कि भारत में रहे या अलग हो जाये। यदि बहुमत पृथक् होने का रहा तो उन्हें स्वतन्त्र राज्य बनाने दिया जायेगा।" इस प्रस्ताव को कांग्रेस के अनेक नेताओं का गुप्त समर्थन प्राप्त था, लेकिन जिन्ना ने ही नहीं माना—यह कह कर कि पाकिस्तान के दोनों भू-भागों के बीच गलियारा और होना चाहिए वर्ना पाकिस्तान लुंज-पुंज तथा दीमकों द्वारा खाया हुआ-सा होगा।

जुलाई १९४५ में योरुप का युद्ध समाप्त हुआ। अंग्रेज विजयी हुए। इंग्लैंड में आम चुनाव होने वाला था। अतः चर्चिल ने लार्ड वेवल (तत्कालीन वाइसराय) की मार्फत एक योजना अन्तरिम सरकार के बारे में पेश की, क्योंकि कांग्रेस ने क्रिप्स मार्मूला इसी प्रश्न पर अस्वीकार किया था। शिमला में जुलाई में दो सप्ताह तक नेताओं में मंत्रणा हुई।

प्रस्ताव यह था कि सिवाय रक्षा के अन्य सब विभाग भारत की अन्तरिम सरकार को सौंप दिये जायेंगे पर उसमें हिन्दू और मुसलमान मन्त्रियों की संख्या बराबर होगी। कांग्रेस ने यह भी मान लिया! पर बाधा यह हुई कि बंदर एक बंदरिया पेट से चिपकाये हुआ था। वह बँदरिया थी कांग्रेस का भ्रम कि हम मुसलमानों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। अतएव उनके प्रतिनिधियों में "राष्ट्रीय मुसलमान" अवश्य होंगे। जिन्ना ने यह बात नहीं वह मानी। बस, वार्ता भंग हो गई।

अगस्त १९४५ में जापान पर अणुबम गिरा कर उसे परास्त कर दिया गया। इसी मास में इंग्लैंड में लेबर पार्टी सत्ता में आ गई। यह दल भारत को स्वतंत्र करने का निर्णय इस आधार पर कर चुका था कि उपनिवेशों के कारण देश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की पूंजी बाहर जा रही है और उससे इंग्लैंड के मजदूरों का अहित होता है। प्रान्तीय विधान सभाओं के चुनाव हुए। इनमें मुसलमान सीटों में से एक भी सीट कांग्रेस के मुसलमान प्रत्याशी नहीं जीत सके। हाँ, शेष सीटों पर उन्हें भारी बहुमत मिला। प्रान्तीय सरकारें फिर चालू हो गई। प्रधान मंत्री एटली ने घोषणा की कि **हम भारत को स्वतन्त्र कर देंगे। और किसी एक वर्ग (मुसलमानों) को भारत की स्वराज्य प्राप्ति में बाधक नहीं बनने देंगे।** उन्होंने अपने मन्त्रिमंडल के तीन सदस्यों का, जिनमें एक स्टेफर्ड क्रिप्स भी थे, एक मिशन भारत भेजा। मिशन के प्रस्ताव ये थे—

१. **सम्पूर्ण भारत का एक संघ होगा।** पाकिस्तान व्यवहार में सम्भव न होने से अस्वीकार्य है। परन्तु ब्रिटिश प्रान्तों में उनके तीन समूह (groups) होंगे और उन समूहों को भारत संघ और प्रान्तों के बीच की कड़ी माना जयेगा। ये समूह यों होने थे (क) बम्बई, मद्रास, मध्यप्रदेश, बिहार, ओड़िसा, संयुक्त प्रान्त (ख) असम तथा बंगाल (ग) पंजाब, सिन्ध तथा उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त।

२. प्रान्तीय विधायकों से समानुपातिक प्रणाली से ७८ मुसलमान, ४ सिख तथा २९२ साधारण (अर्थात् हिन्दू, ईसाई व पारसी) संविधान निर्मात्री सभा के लिये चुने जाने थे।

३. भारतीय संघ के पास केवल रक्षा, वैदेशिक मामले और परिवहन विभाग रहते। वहां एक कार्यपालिका तथा एक विधान सभा भी होती। पर कोई साम्प्रदायिक विषय उपस्थित सदस्यों एवं दोनों प्रमुख सम्प्रदायों के उपस्थित सदस्यों के बहुमत से ही पारित हो पाता।

हर समूह के सदस्य अलग-अलग बैठकर उसका संविधान और अपने समूह में समूह की सरकार और तत्रान्तर्गत प्रान्तीय सरकार के बीच विभागों का बंटवारा कर लेते।

४. इस प्रकार निर्मित संविधान को सम्पूर्ण संविधान निर्मात्री समिति पास करती और उसे ब्रिटेन स्वीकार करके सत्ता हस्तांतरित कर देता।

५. नया संविधान लागू होने पर किसी प्रान्त की विधान सभा उस समूह में रहने या न रहने का निर्णय भी कर सकती है।

इस बीच केन्द्र में एक अन्तरिम सरकार काम चलाती, जिसे सारे विभाग सौंप दिये जाते और इसमें सारे दलों को प्रतिनिधित्व मिलता।

इस योजना को लीग ने ७ जून को तथा कांग्रेस ने २५ जून ४६ को स्वीकार कर लिया। प्रतीत होने लगा कि भारत का विभाजन होने से बच गया।

अन्तरिम सरकार बनाने हेतु लार्ड वेवल ने पेशकश की कि कांग्रेस और लीग को बराबर संख्या में पद दिये जायें। कांग्रेस ने इसे नहीं माना। अतः २९ जून ४६ को ७ सदस्यों की कामचलाऊ सरकार बिना उनके बना ली गई। प्रयत्न जारी रहे। जुलाई में ६ सीटें कांग्रेस को, ५ लीग को तथा ३ अन्यों को देकर १४ की अन्तरिम सरकार बनाने का प्रस्ताव रखा गया, जिसे दोनों ने मान लिया। परन्तु वही बंदरिया का बच्चा फिर आ गया। कांग्रेस ने अपने कोटे में एक राष्ट्रीय मुसलमान लेने का आग्रह किया, जिसे लीग ने नहीं माना। पर ब्रिटेन स्वतन्त्रता देने को तैयार था अतः २ सितम्बर को अकेली कांग्रेस की १२-सदस्यीय अन्तरिम सरकार पं० नेहरू की अध्यक्षता में बनी, जिसमें तीन मुसलमान (गैर-लीगी) थे। मुसलमानों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के लिए दो स्थान रिक्त रहे। लीग ने पूरी कैबिनेट मिशन योजना अस्वीकृत कर दी और सीधी कार्रवाई (Direct Action) शुरू करके कलकत्ता, नोआखाली, पंजाब व फ्रन्टियर तक में हिन्दुओं का भीषण रक्तपात किया। जब बिहार में हिन्दुओं ने बदले की कार्रवाई की तो पं० नेहरू की अन्तरिम सरकार ने बिहार में बम वर्षा कराके उसे दबा दिया।

इस बीच जुलाई में संविधान निर्मात्री सभा का निर्वाचन हो चुका था। इसमें कांग्रेस को २०३ तथा लीग को ७३ स्थान मिले थे। इस अनुपात के कारण लीग ने मजबूर होकर अक्तूबर ४६ में अन्तरिम सरकार में शामिल होना चाहा। लीग के ५ सदस्य ले लिये गये और कांग्रेसी मुसलमानों को स्थान खाली करने पड़े। लीग ने अपने ५ स्थानों में से एक पर हिन्दू (जोगेन्द्रनाथ मंडल) को भी लिया था। अन्तरिम सरकार में उन्होंने नेहरू को नेता नहीं माना। लियाकत अली खाँ वित्त मन्त्री थे। उन्होंने गृहमन्त्री सरदार पटेल द्वारा अपने निवास को कई लाख रुपया खर्च करके भारतीय ढंग से सुसज्जित करने के खर्चे को स्वीकार नहीं किया। इस पर सरदार ने कहा कि इनके साथ कोई काम नहीं हो सकता और पाकिस्तान मानकर पृथक् होना ही श्रेयस्कर है।

समूह वाले सिद्धान्त में मुस्लिम लीग ने यह शर्त रखी कि समूह ख तथा ग में आये प्रान्त पृथक् न हो सकेंगे, क्योंकि अन्यथा सारे समझौते का आधार टूट जाता है। कांग्रेस ने कहा कि इसमें ख भाग में सिख तथा ग में असम शामिल है, अतः यह स्पष्टीकरण मान्य नहीं है। लार्ड वेवल ने लीग के दृष्टिकोण का समर्थन किया, जो आंग्रेस को मान्य न हुआ। कुछ समय की अनिश्चतता के बाद लार्ड एटली ने कामन्स सभा में घोषणा की कि ब्रिटेन जून ४८ में अवश्य भारत को छोड़ देगा और इस बीच यदि भारत के नेता कोई समझौता न कर सके तो जून में प्रान्तों और केन्द्र में जैसी भी सत्ता होगी, उसी को वे राज्यभार सौंप देंगे। इसमें भी ब्रिटेन का लक्ष्य अन्तरिम केन्द्रीय सरकार को सत्ता सौंपना था। तब भारत एक बना रहता। यह कार्यभार लार्ड माउन्टबैटन को सौंप उन्हें वाइसराय बना कर तत्काल भारत भेजा गया।

माउन्टबैटन योजना—२ यह योजना जून १९४७ को वाइसराय ने ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल की स्वीकृति हेतु भेजी थी। इसमें नेताओं की सहमति के बिना ही प्रान्तों को सत्ता हस्तांतरित करने और केन्द्र में संघीय सरकार की स्थापना का प्रस्ताव था (न कि शक्तिशाली एकल केन्द्रीय सरकार का)। यह योजना ब्रिटिश मंत्रिमण्डल ने स्वीकार कर ली। १० मई ४७ को उन्होंने यह योजना नेहरू जी को दिखाई थी तो वे झल्ला उठे थे। इसमें भारत की संघीय एकता की बात थी। यह लीग को स्वीकार्य न होती और फिर संघर्ष छिड़ता, जिसके लिए वे तैयार न थे। मोस्ले से अपनी भेंट में नेहरू जी ने कहा था—

The truth is that we were tired men and we were getting on in years too. Few of us could stand the prospect of going to prison again and if we had stood out for a united India, as we wished it, prison obviously awaited us. We saw the fires burning in Punjab and heard everyday of the killings. The plan of partition offered a way out and we took it.

(The Last Days of the British Raj—Mosley, Page 243)

अर्थात् सच्ची बात यह है कि हम थक गये थे, हमारी उम्र भी बढ़ती जा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रही थी। अब फिर से जेल जाने की तैयारी हम में से बहुत ही थोड़े लोगों की थी। हमने अखंड भारत का आग्रह रखा था और हमारी वैसी इच्छा भी थी, पर फिर हमारे सामने कारावास मुंह बाये खड़ा था। पंजाब में हिन्दू घरों को लगाई जाने वाली आग हम देख रहे थे और कत्ल की बातें सुन रहे थे। आखिर देश के टुकड़े करना हमारे सामने एकमात्र उपाय था और हमने इसे स्वीकार कर लिया। (ब्रिटिश राज के अन्तिम दिन—मोस्ले, पृष्ठ २४३)

नेहरूजी ने तुरन्त माउन्टवेटन को इस योजना के विरुद्ध पत्र लिख दिया।

तब माउन्टबैटन ने राज्यमन्त्रालय के श्री मेनन को बुलाया। मेनन ने बताया कि वे एक योजना बनाकर गुप्त रूप से उस पर पटेल की स्वीकृति ले चुके हैं और वेवल की मार्फत इण्डिया हाउस को भेज चुके हैं। माउन्टबैटन ने उससे अनभिज्ञता प्रकट की। १७ और १८ मई की रात्रि को बैठकर मेनन ने उसे फिर ड्राफ्ट किया। १८ को वह माउन्टबैटन को दे दी गई थी। उसी दिन वे उसे लेकर इंग्लैंड गये। लार्ड एटली ने ५ मिनट में ही उसे स्वीकार कर लिया। ३ जून को इसकी माउन्टबैटन ने गांधीजी तथा जिन्ना से परामर्श के बाद घोषण कर दी। जुलाई ४७ में ब्रिटेन के दोनों सदनों ने भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम भी पास कर दिया। इसी के अनुसार १४ अगस्त को भारत का बंटवारा होकर १५ अगस्त ४७ को दोनों देश स्वतन्त्र उपनिवेश (राष्ट्रमण्डल के सदस्य के रूप में) सत्ता में आ गये। बदले में बंगाल, पंजाब और असम प्रांतों का बंटवारा होकर उनके हिन्दूबहुल भाग भारतीय संघ में आ गये। वह स्थिति कायम है।

बाद में ब्रिटिश नेताओं ने कहा—

A common Hindu-Muslim nation was thus attempted to be created by the British in India but eventually the Hindus and Muslims themselves formed two nations. All appeals for national unity fell flat. Leaders had no patience and power was far more attractive than unity.

[अंग्रेजों ने भारत में साँझी हिन्दू-मुस्लिम राष्ट्रीयता कायम करने का प्रयत्न किया पर हिन्दूओं व मुसलमानों ने पृथक् राष्ट्र स्वयं ही बनाये। राष्ट्रीय एकता के सारे प्रयत्न बेकार गये। नेता लोगों को शीघ्र सत्ता हथियाना राष्ट्रीय एकता की अपेक्षा अधिक आकर्षक था।]

अब यह स्पष्ट है कि देश के बंटवारे का उत्तरदायित्व अंग्रेजों पर नहीं है। हमारे नेता शीघ्र शासक बनना चाहते थे और उस "बंदरिया" को नहीं छोड़ना चाहते थे कि हम हिन्दू-मुसलमान दोनों के प्रतिनिधि हैं। यद्यपि "राष्ट्रीय" (कांग्रेसी) मुसलमानों ने सितम्बर ४६ में अन्तरिम सरकार में भाग न लिया, पर हम उस बंदरिया को चिपकाये रहे, अन्यथा मुस्लिम लीग सीमित भारतीय संघ के लिए राजी हो गई थी।

यह बंदरिया हम से अब भी चिपकी हुई है। अब तो सब पार्टियों ने वह बंदरिया चिपका ली है। १९८० के चुनाव में हमें जनता मुसलमान, लोकदल मुसलमान, कांग्रेस(अ) मुसलमान, कांग्रेस(इ) मुसलमान दिखाई दिये। हम उन्हें भारतीय राष्ट्रीय धारा में जज्ब नहीं कर सके हैं, नहीं कर सकेंगे। उर्दू वापस आ गई है। आरक्षण वापस आ रहा है। फिर पृथक् निर्वाचन आयेगा। फिर बंटवारा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज के वैस्ट इंडीज में सत्य सनातन वैदिक धर्म

—डॉ० लाल सरदाना

डॉक्टर लाल सरदाना हौस्टन स्थित टैक्सास सदर्न यूनिवर्सिटी में मैनेजमेण्ट के प्रोफ़ैसर हैं। उन्होंने जनवरी १९८० में वैस्ट इंडीज में हिन्दुओं की स्थिति के सर्वेक्षण के लिए अध्ययन यात्रा की। इस सिलसिले में वह ट्रिनीडाड, गुयाना, सूरीनाम और वैस्ट इंडीज के पड़ोसी कुछ अन्य देशों की यात्रा पर गये।

डॉ. सरदाना डी०ए०वी० हाई स्कूल, मिंटगुमरी के छात्र रह चुके हैं। (विभाजन के फलस्वरूप मिंटगुमरी पश्मि पाकिस्तान में चला गया है।) उन्होंने कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से पीएच०डी० की उपाधि प्राप्त की थी। वह टैक्सास की मासिक पत्रिका "हिन्दूज्योति" के सम्पादक हैं। यह एक धार्मिक पत्रिका है और हिन्दुओं की उन्नित के लिए प्रयत्नशील है।

इस लेख में प्रो० सरदाना ने जो विचार प्रकट किये हैं वे उनके अपने हैं। आवश्यक नहीं कि सम्पादक उन सब विचारों से सहमत हो।

सत्य सनातन धर्म का अर्थ है आर्य हिन्दू वैदिक धर्म, जो वेस्ट इंडीज में परम्परागत किन्तु विकृत सनातन धर्म के साथ प्रचलित है। पहले पहल १९०९ या १९११ में भाई परमानन्द और १९२९ में महता जैमिनि यहाँ आये। उसके बाद तो भारत से ट्रिनीडाड, गुयाना और सुरीनाम आने वाले आर्य प्रचारकों का तांता ही लग गया। १९५० वाले दर्शकों में डॉ. उपबुंध आर्य आये। उन्हें छोड़ कर जो अन्य प्रचारक यहां आये थे, वे वेद प्रचार के लिए अधिक दिन न टिके। उनका लक्ष्य सीमित था—लघु वक्तृताएं देना, अपने आप को यहाँ की प्रगति से अवगत कराना और जनता के साथ विचारों का आदान-प्रदान।

मूल्यांकन वाला निर्णय देना जोखिम का काम होगा—विशेषतः इसलिए कि उस प्रकार का मूल्यांकन व्यक्तिपरक होता है। वेद प्रचार के क्षेत्र में कुछ उज्ज्वल सफलताएं भी मिलीं, लेकिन कम ही सही, अन्धकारमय पक्ष भी है अथवा यों कह लीजिए कि कम उज्ज्वल पक्ष भी है।

सफलता का उज्ज्वल पक्ष

१. आर्य समाजियों और परम्परावादी सनातनधर्मियों में झगड़े कम हुए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। इस क्षेत्र में हमें काफी सफलता मिली है। पहले यह होता था कि हिन्दू आपस में लड़ते थे और फलस्वरूप विदेशों में रहने वाले हिन्दुओं की प्रतिष्ठा कम होती थी। धार्मिक कलह सामाजिक और राजनैतिक विरोध में भी प्रतिबिम्बित होता था। अब यह स्थिति पूर्णतः तो नहीं, किन्तु अंशतः नहीं रही। जहां तक इन पंक्तियों के लेखक की जानकारी है, अब वैदिक धर्मियों और पौराणिकों में अपेक्षाकृत अधिक सहयोग है।

२. सत्य सनातन धर्म मन्दिर भी हिन्दू-धर्म मंदिर कहलाने में संकोच नहींकरते-यद्यपि विदेशियों द्वारा हिन्दू शब्द निन्दाजक अर्थ में प्रयुक्त किया गया था। संसार भर में यही समझा जाता है कि हिन्दुओं का अपना धर्म हिन्दू धर्म है—वदिक धर्म अथवा सनातन धर्म शब्द प्रयोग कम होता है। दोनों पक्षों के अतिशयवादी हिन्दू शब्द पर आपत्ति करते हैं, लेकिन ९० प्रतिशत लोगों को इस शब्द पर कोई आपत्ति नहीं—इस शब्द का मूल चाहे कुछ भी क्यों न हो। वैस्ट इंडीज के हिन्दुओं को एक अधिक बड़े बाहरी खतरे का सामना है, जिसके लिए विभिन्न हिन्दू सम्प्रदायों की एकता आवश्यक है। अब वैदिक आर्य मन्दिरों में प्राचीन हिन्दूशास्त्रों (रामायण, महाभारत आदि) का भी पाठ होने लगा है। श्रोताओं को इनके सही स्वरूप का दिग्दर्शन कराया जाता है। उनका प्रचार भी किया जाता है! अब आर्य मन्दिरों में राम और कृष्ण की प्रशंसा में भी गीत गाये जाते हैं। दोनों को योगेश्वर माना जाता है—भगवान् नहीं। यह स्थिति देखकर इन पंक्तियों के लेखक को बहुत प्रसन्नता होती है। रामायण और महाभारत हिन्दू धर्म और हिन्दू जीवन पद्धति के ग्रन्थ हैं। उन्हें फेंक देना ऐसा ही है, जैसे कोई धूलिधूसरित बच्चे को किसी टब में स्नान करा कर गंदले पानी के साथ बच्चे को भी फेंक दे।

आर्य समाज की यह मान्यता एक रचनात्मक पग है कि वह सत्य सनातन धर्म का अनुयायी है। आर्य समाज का तो लक्ष्य ही यह है कि वह हिन्दुओं का दिशा परिवर्तन करके उन्हें सत्य सनातन वैदिक धर्म की ओर ले जाये। चारों वेद उसके मूल आधार हैं। जन ज्ञान प्रकाशन और दिल्ली व नई दिल्ली के अनेक अन्य प्रकाशनों ने परम्परागत प्राचीन साहित्य (गीता, रामायण, महाभारत आदि) को उसके शुद्ध रूप में प्रकाशित किया है।

३. अब वैदिक मन्दिरों में परम्परागत सुन्दर गीतों—उठ जाग मुसाफिर ···, हे दयामय हम सबों को···, हे प्रभो आनन्द दाता आदि के साथ बोलो राम, बोलो राम···, सीता राम कहो, कहो आदि भजन भी बोले जाते हैं।

भारतीयों को राम और कृष्ण विरासत में मिले हैं। ये इतने महत्त्वपूर्ण हैं कि इन्हें छोड़ा नहीं जा सकता। यह तो व्यक्ति के निजी विकास पर निर्भर है कि वह निराकार भगवान् की उपासना करता है या साकार की। हिन्दू धर्म में दोनों के लिए स्थान है। हां यह सत्य है कि यदि हम साकार भगवान की उपासना करते हैं, तो हमें निराकार भगवान् की उपासना की ओर बढ़ना चाहिए।

४. यह अच्छी बात है कि वैदिक मन्दिरों ने जातपात का अन्तर यदि समाप्त नहीं किया, तो कम अवश्य किया है। वैदिक मन्दिरों में इस बात पर जोर दिया जाता है कि वर्ण व्यवस्था गुण-कर्म-स्वभाव से होती है, जन्म से नहीं। इसका इतना अच्छा प्रभाव पड़ा है कि वहां का परम्परागत सनातन समाज भी अन्तर्जातीय विवाहों का प्रबल प्रतिरोध नहीं करता। हां, इस बात पर उसका आग्रह अवश्य रहता है कि पुरोहित वंशक्रमागत हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कम सफलता वाले क्षेत्र

१. शुद्धि और मिलाप—आगे लिखी जा रही बातों को लिखने से पूर्व हम यह बात बता दें कि वैस्ट इंडीज में अनेक हिन्दू इस्लाम और ईसायत की शरण में जा चुके हैं। यह ठीक है कि हिन्दुत्व समाप्त नहीं हुआ (कम से कम आशावादी तो यही समझते हैं), लेकिन यह भी ठीक है कि हिन्दू समाज सिकुड़ गया है। इस समय मोटे तौर पर एक तिहाई आबादी हिन्दू है, एक तिहाई ईसाई और एक तिहाई मुसलमान उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में भारत से आने वाले मूल आम आप्रवासियों में ईसाइयों की संख्या नं के बराबर थी और मुसलमानों की बहुत कम। नस्ल की दृष्टि से ये सब भारतवंशी ईस्ट इंडीज़ के थे।

स्वामी दयानन्द ने इन लोगों के पुनः वदिक धर्म में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया। ये हमारे अभागे भाई थे, जो अनेक विवशताओं के कारण विधर्मी हो गये, इन में से ऐसे लोगों की संख्या एक प्रतिशत भी न थी, जिन्होंने धर्मान्तरण से पूर्व बाइबल, कुरान आदि पढ़ी हो और उनकी तुलना वेद, गीता आदि से की हो। उन्होंने तो अपनी सुविधा के लिए धर्मान्तरण किया। कई बार तो ऐसा भी हुआ कि ईसाइयों ने अपने प्रसूतिगृह में पैदा बच्चे का ईसाई नाम रख दिया और वह ईसाई बन गया।

वैस्ट इंडीज में हिन्दुओं, ईसाइयों और मुसलमानों में अनेक अन्तर्जातीय विवाह होते हैं। युवा पीढ़ियों में तो ऐसा भी होता है कि किसी संयुक्त परिवार में तीन सदस्य हों और तीनों का धर्म अलग-अलग हो। लेकिन ऐसे मामलों में अधिकतर हिन्दू घाटे में रहते हैं और ईसाई-मुसलमान फायदे में।

वेद मन्दिरों को विधर्मी बने लोगों की वापसी और शुद्धि के मामले में महत्त्वपूर्ण रोल अदा करना है। यह बात नहीं कि शुद्धियां होती ही नहीं, लेकिन शुद्ध होने वालों की संख्या कम है और विधर्मी होने वालों की संख्या अधिक। हमारा कर्त्तव्य है कि पहले तो इस अनुपात को समान करें और फिर अगले चरण में इस अनुपात को बढ़ायें। यह लिखने की तो आवश्यकता ही नहीं कि शुद्ध हुए लोगों का जीवन सनातन मन्दिरों की अपेक्षा वैदिक मन्दिरों में अधिक सुविधाजनक होगा। जितनी शुद्धियां वैदिक मन्दिरों में हुई हैं, सनातन मन्दिरों में उनसे कहीं कम हुई हैं।

अनेक बार मैं ट्रिनीडाड और गुयाना में हिन्दुओं के ऐसे धार्मिक समारोहों में सम्मिलित हुआ, जिनमें आर्यसमाजी रीति से हवन हुआ और पौराणिक रीति से सत्यनारायण की कथा व पूजा। क्योंकि अनेक परिवार ऐसे हैं, जिनके निकट संबंधी ईसाई तथा मुसलमान हैं, उपस्थित लोगों में तीनों धर्मों के लोग सम्मिलित होते हैं। ऐसे अवसरों पर देखने में आता है कि घड़ियाल बजाने वाला दामाद मुसलमान है (जो हिन्दू पुत्री का पति है) और भजनमण्डली में कुछ ईसाई रिश्तेदार भी हैं, जो उठ जाग मुसाफिर···गीत गा रहे हैं।

एक बार एक ऐसे ही समारोह में मुझे दस वर्ष का एक बच्चा मिला, जिसे सर्वधर्म समभाव विरासत में मिला था। उसका नाम था टेरी फैसल टेकराज। वह कभी हिन्दू समारोहों में दिखाई देता है, तो कभी मस्जिद में। जब उससे पूछा गया कि वह कौन-से धर्म को मानता है, तब उसका उत्तर एक सामान्य हिन्दू जैसा था—एक ही बात है; तीनों धर्मों में वही भगवान् है। यहीं आकर हिन्दू कमजोर पड़ते हैं, क्योंकि ईसाइयों और मुसलमानों में सर्वधर्म समभाव नहीं। यदि कोई व्यक्ति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुरान पर ईमान नहीं लाता, तो मुसलमानों की दृष्टि में वह काफिर है। यदि हिन्दुओं में यह सर्वधर्म समभाव बना रहा (अन्य बातों की उपेक्षा करके) तो आज नहीं, तो कल हिन्दू ईसायत अथवा इस्लाम की गोद में चले जायेंगे। ऐसे लोग कहते हैं कि भगवान् कृष्ण की आराधना की, तो क्या और ईसा मसीह की आराधना की, तो क्या ! एक ही बात है !)

२. **वर्ण संकरों की शुद्धि**—अब तक हम भूतपूर्व हिन्दुओं की शुद्धि की बात कर रहे थे। अब हम एक अधिक जटिल प्रश्न की चर्चा करने लगे हैं। ये हैं वर्ण-संकर लोग—आधे हिन्दू, आधे हब्शी अथवा आधे हिन्दू, आधे पुर्त्तगाली, आधे हिन्दू, आधे डच। इसी प्रकार के अन्य वर्णसंकर।

वैस्ट इंडीज की स्थिति ही ऐसी है कि यहां भारत की अपेक्षा बहुनस्ली वर्ण-संकर विवाह अधिक होते हैं। ऐसे वर्णसंकरों के सम्बन्ध में अध्ययन करने से पता चलता है कि उनके पूर्वजों का एक पक्ष भारतीय था, फिर भी इन वर्णसंकरों ने हिन्दू धर्म को नहीं अपनाया। इनमें से अधिकतर ईसाई हैं और कुछ मुसलमान। अप्रत्यक्ष रूप से इस का मतलब यह हुआ कि हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान वर्ण-संकरों को अधिक सरलता से अपने में मिला लेते हैं और ईसाई तो इस मामले में हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों से आगे हैं।

यदि हमने वैदिक धर्म को विश्व धर्म बनाना है, तो हमें यह नहीं समझना होगा कि केवल भारतीय हिन्दू हो सकते हैं—अन्य नस्लों के लोगों को भी हिन्दू मानना होगा। ईसाइयों को देखिए—उनमें गोरे हैं, हब्शी हैं, चीनी हैं, एस्किमो हैं और आदिम जातियों के हैं। अब प्रश्न यह है कि हिन्दू समाज का कौन-सा वर्ग इन वर्णसंकरों को अपने में खपा सकता है—सनातन मन्दिर या वैदिक मन्दिर। स्पष्टतः इसका उत्तर है वैदिक मन्दिर, क्योंकि वैदिक धर्मी जाति, रंग अथवा नस्ल का भेदभाव नहीं मानते। दुर्भाग्य से हमें इस मामले में सफलता नहीं मिली। (आश्चर्य की बात तो यह है कि मुसलमान इस मामले में सफल रहे हैं।) मैं जार्ज-टाउन (गुयाना) में २५ वर्ष की एक युवती से मिला, जिसकी गोद में डेढ़ वर्ष का अर्ध-हब्शी बच्चा था। मेरे पूछने पर उसने बताया कि वह कलकत्ता के एक हिन्दू परिवार से है और उसका पति एक हब्शी है, जिसने ईसायत की दीक्षा ले रखी है। उसके माता-पिता ने उसके विवाह का अनुमोदन न किया और फलस्वरूप उसने अपने माता-पिता के घर जाना कम कर दिया है। वह कभी-कभार ही वहाँ जाती है। मेरे मन में प्रश्न उठता है कि क्या वैदिक समाज उस वर्ण संकर बच्चे को अपना लेगा या हमारी उपेक्षा के कारण उसे भी ईसायत की शरण में जाना होगा ?

जिन गांवों में भारतीय और हब्शी एक दूसरे के पड़ोस में रहते हैं, उनमें वर्णसंवर सन्तानें अधिक हैं। (भगवान् जाने कि संयोगवश ऐसा हो गया है या योजनाबद्ध ढंग से।) गुयाना और ट्रिनीडाड की वर्तमान हब्शी सरकारें इस प्रकार के वर्णसंकर विवाहों को प्रोत्साहित करती हैं। एक बार गुयाना के भूतपूर्व प्रधानमंत्री डा० छेदी जगन ने भी इस प्रकार के विवाहों का समर्थन किया था।

सेंट विसेंट द्वीप (वैस्ट इंडीज)—कैरिबियन सागर में स्थित यह द्वीप ट्रिनी-डाड से बहुत दूर नहीं। लगभग तीन हजार हिन्दू परिवार यहां आकर बसे और कुछ समय तक उन्होंने अपनी हिन्दू जीवनपद्धति बनाये रखी। लेकिन एक छोटे-से शिवालय को छोड़कर उन्होंने वहाँ कोई हिन्दू मन्दिर स्थापित न किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यहां ईसाई धर्मान्तरण में सफल रहे। आज वे सब के सब ईसाई हैं—एक भी हिन्दू नहीं। कैरिबियन सागर के अन्य द्वीपों में आधी हिन्दू आबादी अभी तक हिन्दू है। बहुत कम मन्दिरों का उपयोग होता है, क्योंकि ५० प्रतिशत हिन्दू विधर्मी हो चुके हैं। सेंटविसट द्वीप में आप अब भी घरों में कढ़ी पकते देख सकते हैं, लेकिन लोगों के नाम हिन्दुआना नहीं।

वैस्ट इंडीज में सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार के लिए पूर्णकालिक प्रचारकों की आवश्यकता है। हिन्दुओं का धर्म प्रचार कार्य बढ़ाने की आवश्यकता है। जैसा हम ऊपर लिख आये हैं, ईसाइयों को मिली सफलता उनके धार्मिक विश्वासों के कारण नहीं मिली, अपितु सुख-सुविधाओं के कारण मिली है। भारत और चीन में इस प्रकार के ईसाइयों को "चावल के लोभी ईसाई कहा" जाता है। (वे चावल पाने की खातिर अथवा अन्य सुख-सुविधाओं के लोभ में ईसाई बने हैं।) उन बेचारों को क्या पता कि अमरीकन ईसाइयों के मन में हमारे वेदों, उपनिषदों, गीता आदि के धार्मिक ज्ञान के प्रति कितनी गहरी श्रद्धा है। अनेक ईसाई, जिनका मोह भंग हो चुका है, हरे कृष्ण सम्प्रदाय अथवा रामकृष्ण मिशन में सम्मिलित होकर हिन्दुत्व की दीक्षा प्राप्त कर चुके हैं। वे हमारे धर्मग्रन्थों को पढ़ कर ही दीक्षित हुए हैं। बुद्धिजीवी अमरीकन ईसाइयों के लिए स्वामी विवेकानन्द एक श्रेष्ठ हिन्दू संन्यासी हैं। इनका कहना था कि "वेदान्त किसी पाप का अस्तित्व नहीं मानता। वह केवल गलती का अस्तित्व मानता है और सबसे बड़ी गलती है यह समझना कि आप कमजोर हैं—पापी हैं, दयनीय हैं, आप में शक्ति नहीं, आप यह नहीं कर सकते, वह नहीं कर सकते।"

मैंने सेंट विंसेंट के एक भूतपूर्व हिन्दू से पूछा कि "क्या आपने धर्म परिवर्तन का फैसला करने से पूर्व वेद अथवा गीता पढ़ें?" उत्तर मिला "नहीं"। मैंने उससे पूछा कि "क्या आपको पता है कि ईसाइयत के सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक नवजात शिशु पापी होता है, जब कि हिन्दुओं का विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति नये सिरे से जीवन प्रारम्भ करता है—उसके कर्म उसके पापी अथवा पुण्यात्मा होने का फैसला करते हैं?" उसका उत्तर था कि "मैं ईसाई इसलिए हूं, क्योंकि मेरे पड़ोसी भारतीय ईसाई हैं। उन में से किसी ने भी हिन्दू ग्रन्थों का अध्ययन नहीं किया।"

सूरीनाम (भूतपूर्व डच गुयाना)

सूरीनाम एक छोटा-सा सुन्दर देश है, जिसकी चालीस प्रतिशत आबादी भारतीय है। यदि मैं आज से ३०-४० वर्ष पूर्व किसी भारताय से बातचीत करता, तो वह हिन्दी में बोल सकता। लेकिन आधुनिक युवा पीढ़ी न तो हिन्दी समझ सकती है और न बोल सकती है। वह हिन्दुत्व से भी दूर जा रही है। क्योंकि देश की सरकारा भाषा डच है, इसलिए हिन्दी युवा पीढ़ी के दैनिक प्रयोग में नहीं आती।

सूरीनाम की राजधानी पारामारिबू में तीन आर्य संगठन हैं—

१. आर्य दिवाकर (पचास वर्ष की सेवा)—भाई रमेश दुलाल। यह संगठन सर्वाधिक सक्रिय है।

२. प्रान्त सभा—पं० शिवरत्न और पं० रामदेव रघुवीर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३. आर्य प्रतिनिधि सभा (डॉ० मूंगरा) तीनों संगठनों में से सब से कम सक्रिय।

सूरीनाम जैसे छोटे स्थानों के लिए तीन संगठन सम्भवतः बहुत अधिक हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा का मन्दिर एक सुन्दर और पुरानी यज्ञशाला में है। यह एक सुन्दर और पुराना मन्दिर है। लेकिन इस सभा का संगठन सबसे कम सक्रिय है। जब यहाँ कभी कोई समारोह होता है, तब उपस्थिति कम होती है।

वैदिक समाज को न केवल वैदिक मन्दिरों का निर्माण करना है, अपितु उन मन्दिरों को भुतहा घर बनने से रोकने के लिए इस बात का भी प्रयत्न करना है कि आधुनिक युवा पीढ़ी उस की गतिविधियों में रुचि ले।

हमारी आधुनिक पीढ़ी जिस रफ्तार से हिन्दू समाज से अलग होती जा रही है, वह वस्तुतः चिन्ताजनक है। हमें स्वामी श्रद्धानन्द जी और महात्मा हंसराज जी जैसी मिशनरी भावना की आवश्यकता है, ऐसी भावना वाले प्रचारक भारत में ही नहीं, विदेशों में भी होने चाहिएं।

सनातन हिन्दू वैदिक धर्म की जय।

अपने घर पर ओ३म् पताका लहरायें

लागत से कम मूल्य पर झंडे देने का प्रबन्ध संस्थान ने किया है। बढ़िया कपड़ा। सुन्दर आकर्षक छपाई। मूल्य अत्यन्त कम।

१२×१८ इंच का झंडा=१५०) सैकड़ा
१८×२७ इंच का झंडा=२५०) सैकड़ा
२४×३० इंच का झंडा=५००) सैकड़ा

(झण्डों पर बढ़िया स्क्रीन प्रिंटिंग है)

नया साहित्य

१. उपदेश मंजरी
महर्षि दयानन्द के पूना में दिये गये व्याख्यानों का संग्रह। मूल्य ४)

३. वैदिक समाज व्यवस्था
लेखक—डा० प्रशन्त वेदालंकार सजिल्द मूल्य १०)

४. महर्षि दयानन्द परक हिन्दी के महाकाव्य : लघु शोध प्रबन्ध
श्रीमती ज्योत्स्ना लिखित सजिल्द मूल्य १०)

५. ईश्वर : संसार के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की दृष्टि में।
पं० क्षितीश कुमार वेदालंकार द्वारा संग्रहीत सजिल्द मूल्य १५)

६. महर्षि दयानन्द के राजनैतिक सिद्धान्त
श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित लिखित मूल्य १)

७. लिंग पुराण में क्या है ?
स्व० पण्डित भीमसेन विद्यालंकार मूल्य १)

८. जीवन को उन्नत करने कामार्ग मूल्य १)

९. गायत्री मन्त्र का चार्ट चार रंगों में—मूल्य १)—६०) सैकड़ा

१०. काया कल्प—पं० बुद्धदेव विद्यालंकार की अमर रचना मूल्य २)

११. ज्योतिर्मय—साधु टी० एल० वास्वानी की अमर श्रद्धांजलि मूल्य २)

१२. वीर बच्चों की कहानियां
(पुस्तक बच्चों के लिए उपयोगी है। मूल्य ३)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यों के नाम खुला पत्र

आर्य भाइयो !

हमारा राष्ट्र आज पतन एवं पराजय के उसी बिन्दु पर पहुँच चुका है, जिस पर आर्यसमाज की संस्थापना के समय था। आज सारे देश में अबाध गति से दानवता का नंगा नृत्य हो रहा है। भोगवाद, अनैतिकता, व्यभिचार, अनाचार, भ्रष्टाचार, दम्भ-विद्वेष, पाखण्ड, अन्धविश्वास तथा गुरुडम को खुली छूट मिली है। हमारे राष्ट्रनायकों की स्वार्थी प्रवृत्ति ने राष्ट्रीय आत्मा को कलंकित कर रखा है। नये-नये अवतारों की काली करतूतों से मानवता सिसक रही है। नारियों का अपमान हो रहा है। युवक दिशा एवं नेतृत्व विहीन होकर भ्रष्ट पथों पर अग्रसर हैं। देवी-देवताओं के नाम पर आज भी पशुबलि, नरबलि दी जा रही है। दूषित शिक्षापद्धति ने मानव को मानव बनाने के स्थान पर दानव बनाने का बीड़ा उठा रखा है। आर्थिक मोर्चे पर त्राहि-त्राहि मची है। गरीबी, भुखमरी, बेकारी का तांडव नर्त्तन हो रहा है। राष्ट्र की इस विषम एवं भयावह वेला में यदि आर्य समाज चेतनाहीन होकर सोता रहा तो इतिहास हमें क्षमा नहीं करेगा। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्घोष करने वाले युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के वीर सैनिक यदि आपस में लड़ते रहे, घृणा-द्वेष में फंसे रहे तो निश्चय ही मानवता रसातल में चली जातेगी। सत्तालोलुप राजनेताओं ने अपनी पदलिप्सा के वशीभूत होकर देश को साम्प्रदायिक विद्वेष एवं जातिगत संघर्ष का युद्ध क्षेत्र बना दिया है। इस भयानक स्थिति को बदलने के लिए यदि कुछ किया जा सकता है, तो केवल आर्य समाज के माध्यम से। लेकिन दुःख की बात है कि हम भूल गये अपनी शक्ति को, अपने महान् कर्त्तव्य को, अपने महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित पथ को, आर्य समाज की मान्यताओं एवं उसके पवित्र उद्देश्यों को तथा मानवता के विकास हेतु किये गये अमर बलिदान को। हमारी कथनी और करनी का अन्तर हमारे पतन का कारण बना रहा है, यह कटु सत्य है। हमारे पास वेदों की ज्योतिर्मय किरणें हैं, पूज्य सन्यासियों का वरद हस्त है, महर्षि का अनुपमेय त्याग एवं पथ प्रदर्शन है, विद्वानो—उपदेशकों—भजनोपदेशकों का आकर्षण है; आर्य जनता की निष्ठा है। यदि दयानन्द के समस्त सैनिक एक जुट होकर, आपसी विवाद, विद्वेष मिटाकर, महर्षि के सच्चे अनुयायी बनकर नये समाज की संरचना हेतु निकल पड़ें तो निस्संदेह दानवता से आक्रान्त अपना राष्ट्र और सारी धरती स्वर्ग बन जाये।

आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से मैं आर्य समाज के समस्त अनुयायियों से अनुरोध करता हूँ कि वे दृढ़संकल्प लेकर, एकजुट हो, महर्षि दयानन्द के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए तन-मन-धन सर्वस्व समर्पित कर दें।

—राधेश्याम शर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कतिपय संस्कृत ग्रन्थों में ऋषि दयानन्द विषयक संदर्भ

—प्रो० भवानीलाल भारतीय

अपने शोध कार्य के प्रसंग में मुझे विभिन्न पुस्तकालयों का अवलोकन करना पड़ता है और आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द विषयक विभिन्न संदर्भों की पड़ताल करनी पड़ती है। प्रस्तुत लेख में मैं ऐसे कतिपय संदर्भों को उद्धृत कर उनकी समीक्षा करूंगा। गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के पुस्तकालय में मैंने बनेड़ा राज्य के राजगुरु नगजीराम शर्मा लिखित वीरवंश वर्णनम् शीर्षक एक संस्कृत काव्य ग्रन्थ देखा। स्वामी दयानन्द का बनेड़ा (मेवाड़-राजस्थान) राज्य के राजा गोविन्द सिंह जी से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा था। उक्त नरेश स्वामी जी के बड़े भक्त थे। वीरवंश वर्णनम् में स्वामी जी विषयक निम्न श्लोक मिलते हैं—

श्रीमद्दयानन्द इहागतो भ्रमन्
श्री भारते ऽष्टाग्निनवेन्दु सम्मिते।
वर्षे हि वेदार्थ निजोक्तिकल्पको
विद्वान् विजेता विदुषां ज्ञमानिनाम्॥ ११।२२

वैदिक धर्म प्रवर्त्तक प्रसिद्ध श्रीम द्दयानन्द स्वामी अखिल भारत में भ्रमण करते हुए संवत् १९३८ में यहां भी आये थे। आप वेदों की व्याख्या करने में प्रवल युक्ति प्रदर्शक थे तथा शास्त्रार्थ में पण्डितम्मन्य विद्वानों के घमण्ड को बात की बात में चूर्ण कर देते थे।

दृष्ट्वा बनेड़ाधिपतेस्तु कोविदान्
वेदार्थ विज्ञांच्छ्रुतिपारंग नृपम्।
वेदान्त विज्ञं नयतंत्र कोविदं
शास्त्रातिशौण्डं जनताभि चालकम्॥ ११।२३

स्वामी जी बनेड़ाधिपति को वेद, वेदान्त, राज्नीति विज्ञ तथा शास्त्रास्त्र कला में प्रवीण और प्रजांपालन में तत्पर देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

श्रुत्वैनयो राजकुमारयोर्वरं
गानं श्रुतेः पाठ्यमतुष्यदाश्वलम्।
सोऽत्राध्यगीष्ट प्रभुराशु गायनं
साम्नः स पाठं नृपपण्डिताद्यतिः॥ ११।२४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब राजपंडितों की वेदार्थ विषयक प्रौढ़ विद्वत्ता तथा राजकुमारों का वे पाठ कौशल देखा, तो उनके हर्ष की सीमा न रही। उन्होंने यहां (नगर से पूर्व झालरा के शिवालय में) रह कर राजपण्डितों से सामवेद का गाना और कुछ पाठ सीखा। ग्रन्थकार की यह उक्ति नितान्त मिथ्या और कपोलकल्पित है कि स्वामी दयानन्द ने बनेड़ा के राजपंण्डितों से सामगान सीखा। स्वामी जी के जीवनचरित्रों में इस घटना का कोई उल्लेख नहीं है। वह वेद विद्या में निणात तो बहुत पहले ही हो चुके थे। सामगान का भी उन्हें पूर्ण ज्ञान और अभ्यास था। अतः इस कथन में कुछ भी तथ्य नहीं है कि स्वामी जी ने बनेड़ा के राजपूतों से सामगान सीखा। सम्भवतः उक्त ग्रन्थ के कवि ने अपने पूर्वज राजपंडितों के महत्त्व की वृद्धि के लिए ऐसा उल्लेख कर दिया है।

कालेऽल्पके धर्म्म्यनयोः स मस्कारी
चित्तोड़नाम्नि प्रथिते सुपत्तने।
पाठं घनान्तं यजुषोऽथ गायनं
साम्नोपिसंश्रुत्य सुहर्षितो ऽभवत्॥ ११।२५

पश्चात् चित्तौड़ नगर में पुनः इन दोनों राजकुमारों के घनान्त यजुर्वेद के पाठ और साम वेद के सुन्दर गायन को सुनकर स्वामी जी बहुत हर्षित हुए।

तेनैनयोगनिता कथा निवेदिता
मेवाड़ नाथाकिमुखं तदैव सः।
श्रुत्वा श्रुतेर्गानिमपूर्व संश्रुते
राजर्षि सून्वोः प्रवभूव विस्मितः॥ ११।२६

उन्होंने महाराणा जी के सम्मुख उक्त गान का वृत्तान्त सुनाया, तो उसी समय महाराणा जी ने इन दोनों राजकुमारों को बुला कर उनका अपूर्व श्रुति गान सुना और बहुत प्रसन्न हुए।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग (रातानाडा) जोधपुर के पुस्तकालय में मुझे अयोध्या से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक पत्र संस्कृतम् के सम्पादक पं० काली प्रसाद शास्त्री लिखित 'विद्वद्वृत्तम्' (द्वितीय खण्ड) ग्रन्थ मिला। इसमें संस्कृत भाषा के प्राचीन और अर्वाचीन ख्याति प्राप्त विद्वानों का संक्षिप्त इत्तिवृत निबद्ध किया गया है। यह ग्रन्थ १८८५ वि० में छपा है। लेखक का सनातनी दृष्टिकोण तो है ही। इसमें स्वामी विरजानन्द जी के विषय में निम्नलिखित पंक्तियां मिलती हैं—

"पंजाब प्रान्तीय करतारपुर प्रान्तगते गंगापुर नाम के ग्रामे ऽयमुत्पन्नः अस्य पिता नारायण दास सारस्वत ब्राह्मणः। अयं ५ वर्षावस्थायां शीतलाक्रमेण हीन नेत्रो बभूव। नारायणदासस्तया तत्पत्नी च द्वादश वर्षीयममुं विसृज्य परलोकं गता भ्रातृपत्न्याऽस्मैल्केशो दत्तोऽतो हरिद्वारे पूर्णानन्दतः संन्यासं जग्राह। पितुरन्तिके सारस्वत चन्द्रिकेऽनेनाधीते हरिद्वारे सिद्धान्त कौमुदी काश्यामन्ये ग्रन्थाः। अथ १८९ विक्रमाब्दे मथुरायामेका पाठशाला स्थापिता यस्यां स्वामिदयानन्देन शिक्षा प्राप्ता अयं ७५ वर्षावस्थाया १९१९ विक्रमाब्दे शरीरं तत्याज" (पृ० १५६) अर्थात् पंजाब प्रान्त के कर्तारपुरे जिले के गंगापुर ग्राम में उत्पन्न हुए। इनके पिता नारायण दास नामक एक सारस्वत ब्राह्मण थे। पांच वर्ष की अवस्था में ही शीतला के आक्रमण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ये अपनी नेत्र ज्योति खो बैठे। नारायण दास तथा उनकी पत्नी इन्हें बारह वर्ष का छोड़कर स्वर्गवासी हुए। भाई की पत्नी ने इन्हें क्लेश दिया अतः हरिद्वार में इन्होंने पूर्णानन्द से संन्यास ग्रहण किया। पिता के समीप इन्होंने सारस्वत तथा चन्द्रिका (व्याकरण ग्रन्थ) पढ़े, हरिद्वार में सिद्धान्त कौमुदी पढ़ी तथा काशी में अन्य ग्रन्थ पढ़े। १८९३ वि० से मथुरा में एक पाठशाला स्थापित की, जिसमें स्वामी दयानन्द ने शिक्षा प्राप्त की। १९२९ वि० में ७५ वर्ष की अवस्था में इन्होंने शरीर छोड़ा। इस उल्लेख में निम्नलिखित त्रुटियां स्पष्ट ही हैं—

१. स्वामी विरजानन्द के पिता का नाम नारायण दत्त था, नारायण दास नहीं।

२. उन्होंने ८० वर्ष से ऊपर आयु पाई, ७५ वर्ष नहीं, जैसा कि लिखा गया है।

अब इसी ग्रन्थ में स्वामी दयानन्द विषयक उल्लेख पढ़ें—

"अयं विक्रमस्य १९ शताब्द्या उत्तरार्द्धे काठियावाड़स्य मोरवी राज्ये जातः। अयं पूर्णानन्दस्य शिष्यतां प्राप्य मथुरायां प्रज्ञाचक्षु विरजानन्दात् संस्कृत भाषां पपाठ। अनेन सत्यपार्थप्रकाशः ऋग्वेददि भाष्यभू मिकादयो ग्रन्था हिन्दी भाषायां लिखिताः। अयं संस्कृत भाषायाः प्रचारं कामयते स्म। अनेनार्यसमाजश्चालितः। काश्या स्वामि-विशुद्धानन्देन सहास्य शास्त्रार्थो जातः। वेद प्रचारेऽयं सुयरनं कृतवान्। कयाचिद्र-मानाम्न्या स्त्रिया सहाऽस्यासीत् सम्बन्धः किन्तु केषां चिद्विचारे ऽस्य जन्मस्थान-जात्याचारादि विषये सत्यता न प्राप्यते। अयं प्रसिद्धो विद्वान् कयाचिद्वेश्यया विषद्वारा अजमेरे मारितो १८८३ ईसाब्दे।" पृ० १६४

भाषार्थ—स्वामी दयानन्द विक्रम की उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में काठियावाड़ के मोरवी राज्य में उत्पन्न हुए। पूर्णानन्द से संन्यास ग्रहण किया तथा मथुरा में प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द से संस्कृत भाषा पढ़ी। इन्होंने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वे-दादि भाष्य भूमिका आदि ग्रन्थ हिन्दी भाषा में लिखे। ये संस्कृत भाषा का प्रचार चाहते थे। इन्होंने आर्य समाज चलाया। काशी में स्वामी विशुद्धानन्द के साथ इनका शास्त्रार्थ हुआ। वेद प्रचार में इन्होंने प्रयत्न किया। किसी रमा नाम्नी स्त्री के साथ इनका सम्बन्ध था, परन्तु कइयों के विचार में इनके जन्मस्थान, जाति, आचार आदि के विषय में सत्य बातें ज्ञात नहीं होतीं। ये प्रसिद्ध विद्वान् १८८३ ई० में किसी वेश्या द्वारा विष दिये जाकर अजमेर में मृत्यु को प्राप्त हुए।

समीक्षा—स्पष्ट है कि कालीप्रसाद शास्त्री लिखित इस उल्लेख में स्वामी दयानन्द के विषय में अनेक भ्रमोत्पादक बातें लिखी गई हैं। प्रथम तो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को हिन्दी भाषा में लिखित बताना ही त्रुटि है। मूल भूमिका संस्कृत में लिखी गई है। काशी शास्त्रार्थ में केवल विशुद्धानन्द ही नहीं, बालशास्त्री आदि अन्य अनेक विद्वान् प्रतिपक्ष में उपस्थित थे। स्वामी जी के जन्मस्थान, जाति, आचार, मृत्यु तथा महाराष्ट्रीय महिला रमाबाई के विषय में जो भ्रान्त बातें समास रुप में ही उल्लिखित की गई हैं, वे लेखक के मन में विद्यमान कालुष्य की द्योतक हैं। रमाबाई संस्कृत की पण्डिता विदुषी स्त्री थी, जो स्वामी जी की शिष्या के रूप में उनके सम्पर्क में आई, परन्तु अपने अपरिपक्व विचारों के कारण उसने स्वामी जी द्वारा निर्दिष्ट धर्मोपदोशिका का कार्य स्वीकार करने की अपेक्षा एक बंगाली व्यक्ति से विवाह कर गृहस्थ भोगना ही उत्तम समझा। स्वामी जी ने रमाबाई को संस्कृत में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनेक उपदेश भरे पत्र लिखे हैं, जो ऋषि के पत्र व्यवहार में संग्रहीत हैं। रमा विषयक अश्लील और मिथ्या आरोप कालूराम, अखिलानन्द आदि उन सनातनी पण्डितों ने कल्पित किये, जिनका स्वामी जी से सहज द्वेष था। स्वामी जी की जाति आदि के विषय में भी जैनी जियालाल तथा अन्यान्य विद्वेष बुद्धि रखने वाले विधर्मियों द्वारा अनेक भ्रान्तियां फैलाई गई, जिनका उत्तर आर्य समाज द्वारा दिया जा चुका है। सर्वप्रथम जियालाल जैनी ने दयानन्द छल कपट दर्पण लिख कर स्वामी जी को कापड़ी खानदान में उत्पन्न बताया। कालूराम, अखिलानन्द, माधवाचार्य, दीनानाथ शास्त्री आदि की धूर्त्तमण्डली ने इस कथन को ही बार-बार उछाला। परन्तु स्वामी दयानन्द के जन्म, बाल्यकाल, जाति आदि के विषय में स्वःबाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय तथा अन्य गवेषक विद्वानों ने जो अनुसंधान किया, उससे उनका औदीच्य ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होना सिद्ध हो चुका है। श्री विजय शंकर मूलशंकर ने 'श्रीमद्दयानन्द जन्मस्थान निर्णय' लिखकर उस विषय को स्पष्ट कर दिया है। उसी प्रकार पं० शिवपूजन सिंह कुशवाहा ने "महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज को समझने में पौराणिकों का भ्रम" लिख कर उस प्रकार की समस्त भ्रान्तियों का उपशमन कर दिया है। अतः शास्त्री जी का उक्त उल्लेख दुर्भावनायुक्त ही समझा जायेगा। स्वामी जी के दिवंगत होने के विषय में भी जो पंक्ति लिखी गई है, वह तथ्यों का वास्तविक निर्देश नहीं करती। स्वामी जी को विष देने में केवल नन्हीं भगतन (वेश्या) का ही हाथ नहीं था, अपितु महर्षि के विरोधी मुसलमान, चक्रांकित (जोधपुर के फतहसागर तालाब के स्थित रामानुजकोट पीठ के आचार्य) आदि सभी तत्त्वों के सम्मिलित षड्यंत्र से महर्षि की जीवन हानि हुई।

आप भी हंसिए

परीक्षा भवन में एक विद्यार्थी को चुपचाप बैठा देख कर एक अध्यापक ने पूछा, 'क्या प्रश्न बहुत कठिन है ?

छात्र ने उत्तर दिया, 'जी नहीं।'

अध्यापक ने फिर प्रश्न किया, 'तो फिर चुपचाप क्यों बैठे हो ?'

छात्र बोला, 'सोच रहा हूँ कि किस प्रश्न का उत्तर मेरी कौन-सी जेब में है।'

× × ×

शिक्षक—तुम महाभारत के बारे में क्या जानते हो ?
विद्यार्थी—सर, उस समय मैं पैदा नहीं हुआ था।

× × ×

एक दिन मैं, मेरे बड़े भाई और तीन वर्षीय गीतू बैठे हुए थे। बातचीत के दौरान मेरा बड़ा भाई बोला, 'मैं तो डाक्टर बनूंगा।'

मैं बोली, 'मैं तो नर्स बनूंगी।'

गीतू को चुप देखकर मैंने पूछा, 'तुम क्या बनोगी, गीतू ?'

उसने कहा—'तो फिर मैं मरीज बन जाऊंगी।'

—अजय कुमार घोष, कोटा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परम ज्योति का आह्वान

—डा० बद्रीप्रसाद पंचोली

ध्रुवं ज्योतिर्निहितं दृशये कं मनो जविष्ठं पतयत्स्वन्तः ।
विश्वेदेवाः समनसः सकेता एकं क्रतुमभि वियन्ति साधु ।।
वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्वीदं ज्योतिर्हृदय आहितं यत् ।
वि मे मनश्चरति दूर आधीः किं स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये ।।
(ऋग्वेद ६।९।५-६)

(सु-अन्तः कं दृशये) सुखकर मार्ग प्रदर्शित करने के लिए (मनः जविष्ठम्) मन से अधिक वेगवान् (ध्रुवं ज्योतिः) निश्चल ज्योति (पतयत् निहितम्) गतिशील प्राणियों में अन्तर्हित है। (विश्वेदेवाः) समस्त देवगण (समनसः) एक मत (सकेताः) तथा समानप्रज्ञ होकर (साधु) सुष्ठु रूप से (एकं क्रतुम्) एक कर्म सामर्थ्यशील के (अभि, वि, यन्ति) अभिमुखवर्ती होते हैं।

(मे कर्णा) मेरे कान (वि पतयतः) गतिशील हों अर्थात् श्रवण कर्म में तत्पर हों, (चक्षुः वि पतयतः) चक्षु दर्शन कर्म में प्रवृत्त हों. (यत् इदं ज्योतिः हृदये आहितम्) जो यह ज्योति हृदय में व्याप्त है, वह भी (वि) विशेषरूप से गतिशील हो। (मे दूर आधीः मनः वि चरति) मेरा दूरस्थ-चिन्तन-जनित-प्रज्ञा-सम्पन्न मन विशेष रूप से दौड़े। (किम् स्वित् वक्ष्यामि) किसका अथवा किस रूप में व्याख्यान करूं। (किम उ नु मनिष्ये) किस रूप में मनन का विषय बनाऊँ।

उपर्युक्त मन्त्रों का द्रष्टा बार्हस्पत्य भरद्वाज है। ऋषि-नाम मन्त्रों के मूल भाव का संकेत करने वाले सूक्ष्म सूत्र होते हैं। (शक्ति का भरण करने वाला भरद्वाज (वाजं भरति इति) कहलाता है। बृहस्पति विज्ञानमय कोश की चैतन्य सत्ता का नाम है, जिसे अथर्ववेद में ब्रह्मचारी भी कहा गया है। यह अपनी सृजक शक्ति से संयुक्त होने पर सृजनकर्म में प्रवृत्त होता है और तब ब्रह्मणस्पति संज्ञा से जाना जाता है। भरद्वाज की शक्ति का स्रोत बृहस्पति है, जिसे उसका पालक—पिता माना जाता है।

मन्त्रों का छन्द त्रिष्टुप् है, जिसका सम्बन्ध मध्यम लोक से है। पिण्ड में मन ही मध्यम लोक है। मन्त्र मन को साधना के मार्ग पर चलाने के लिए प्रेरणा देते ज्ञात होते हैं।

मन्त्रों का देवता वैश्वानर है। यह पृथ्वीस्थानीय देवता है। निरुक्तकार यास्क के अनुसार वैश्वानर शब्द का तात्पर्य है—१. समस्त मनुष्यों को ले जाने या प्रेरित करने वाला २. समस्त मनुष्य जिसे ले जाते हैं या जिससे प्रेरणा पाते हैं तथा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३. विश्वानर का अपत्य। विश्वानर समस्त प्राणियों में निवास करता है और विश्वानर उसी का अपत्य है। (निरुक्त ७।६।२)। सूर्य को भी वैश्वानर कहा जाता है और पार्थिव अग्नि उसी से प्रादुर्भूत हुई है। शरीर में सूर्य विज्ञानमय कोश के बुद्धितत्त्व से अभिन्न है। अतः उसे बृहस्पति से भी अभिन्न माना जा सकता है। इस प्रकार अन्ततः वैश्वानर और भरद्वाज ये दोनों संज्ञाएं मन्त्र के भाव को स्पष्ट कर देती हैं।

भरद्वाज द्वारा भरण किया जाता हुआ वाज (अन्न) वैश्वानर से सीधा सम्बद्ध है। शतपथ ब्राह्मण (१०।८।१०।१) के अनुसार यह विश्वानर अग्नि पुरुष के शरीर में अन्न को पचाती है—अयमग्निर्वैश्वानरः योऽयमन्तः पुरुषे येनेदं अन्न पच्यते। इस सारे संसार में विश्वानर की सत्ता यज्ञ के रूप में निहित है। प्राण और अपान के संघर्षण से प्रतिक्षण उत्पन्न होने वाली अग्नि ही पं० मधुसूदन ओझा के अनुसार वैश्वानर है—प्राणादपानाच्च मिथोऽनुघर्षाद्वैश्वानरोऽग्निर्भवतीह देही (अहोरात्रवाद, पृ. २४)। सृष्टि की इस उष्णता के शरीरस्थ अंश को डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल ने आधुनिक वैज्ञानिक भाषा में फारेनहाइट ताप से अभिन्न माना है (वेदविद्या, पृ. २६१)। विश्वानर अग्नि के द्वारा सृष्टि का भूततत्त्व देवतत्व में परिवर्त्तित होता रहता है। यही वह यज्ञ है, जिसका संचालक वैश्वानर है। भौतिक सृष्टि में निहित सोमतत्त्व अग्नि से मिलता है और स्वयं अग्निरूप हो जाता है। इससे पुनः भूततत्त्व संवर्द्धित होता है। अग्नि प्रसारण-स्वभाव के कारण सोम के रूप में परिवर्त्तित हो जाता है। यह प्रक्रिया बराबर चलती रहती है और वैश्वानर इसको संचालित करता है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार ब्रह्मरूप केन्द्र से बाहर निकल कर सोममयी सृष्टि में परिवर्त्तित होने वाली अग्नि का अंश प्रवर्ग्य है और उसमें से अन्न के रूप केन्द्र को प्राप्त होने वाला अंश ब्रह्मौदन है। वैश्वानर इसी ब्रह्मौदन को पचाता है। भरद्वाज वह शरीरधारी मानव है, जो शरीरस्थ वैश्वानर अग्नि के लिए अन्न (ब्रह्मौदन) का भरण करता है।

शरीर में अन्न संचित करने वाली इन्द्रियां होती हैं। उनके संचय कर्म की एक सीमा है, परन्तु उनकी संचय-सामर्थ्य को बढ़ाया जा सकता है। परिवर्द्धित संचय-सामर्थ्य से शरीर में इन्द्रियों द्वारा चेतना के यज्ञ में जो आहुतियाँ दी जाती हैं, वे उसे साधारण यज्ञ से क्रतु बना देती हैं। इन्द्रियां क्रतु में अपना योगदान बाह्य विषयों से उपरत होकर, अन्तर्मुखी होकर ही दे सकती है। भरद्वाज संज्ञा से अभिहित साधक अन्तर्मुखी वृत्ति द्वारा क्रतु के अभिमुखवर्त्ती होकर अपनी इन्द्रियों को विश्वानर की ज्योति से अनुप्राणित कर लेता है और उसके माध्यम से परमज्योति की प्राप्ति के आनन्द का उपभोग करने लगता है। यही इन मंत्रों का भाव है।

प्रत्येक पदार्थ के केन्द्र में वैश्वानर अग्नि की ज्योति विद्यमान रहती है। शरीर में हृदय ही उस ज्योति का अधिष्ठान है। उसी के द्वारा साधारण रुप में शरीरस्थ यज्ञ और विशेष रूप में साधक द्वारा प्रवर्त्तित क्रतु चलता रहता है। इस यज्ञ को चलाने वाली इन्द्रियों की संज्ञा देव है। प्रतीक यज्ञ के ऋत्विज को भी देव कहा जाता है। इन्द्रियां शरीरस्थ आध्यात्मिकयज्ञ की ऋत्विज हैं। ऋग्वेद में इनके द्वारा मन, प्राण, वाक् में प्रवर्त्तित चेतना के यज्ञ का उल्लेख मिलता है—त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत (ऋग्वेद ८।१३।१८)

प्रथम मंत्र में 'सु-अन्तः' शब्द से स्पष्ट प्रतीत होता है कि इसमें जिस क्रतु का उल्लेख है, वह अन्तर्जगत् में प्रवर्तित हो रहा है। इसमें भाग लेने के लिए मन को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अतिशय वेगवान् (जविष्ठम्) बनाने की आवश्यकता है। मन की तीव्रगति लोक में प्रसिद्ध है। उसे तीव्रतम बनाने के लिए विशिष्ट साधना की आवश्यकता होगी। साधना यह है कि उसकी सहयोगिनी इन्द्रियों को बाह्य विषयों से उपरत करके केन्द्राभिमुख बनाया जाये। ऊपर कहा जा चुका है कि भौतिक सृष्टि केन्द्र के प्रवृक्त अंश से होती है। अतः स्पष्ट है कि इन्द्रियों की बाह्य सृष्टि के जिन पदार्थों से शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्धादि विषय प्राप्त होते हैं, उनका सूक्ष्म अंश केन्द्र में विद्यमान है। इन्द्रियों के केन्द्राभिमुख होने पर उनकी विषय ग्रहण क्षमता शतगुनी बढ़ जाती है, क्योंकि इन्द्रियों की प्रेरक सत्ता इन्द्र—सहस्राक्ष कही गई है। यह तभी संभव है, जब दस इन्द्रियों में से प्रत्येक की सामर्थ्य शतगुनी हो जाये। इन्द्रियों के लिए उत्तम व सुखकर (कम्) मार्ग इस प्रकार केन्द्राभिमुख होना ही है। इसके लिए केन्द्रस्थ वैश्वानर की निश्चल ज्योति (ध्रुवं ज्योतिः) पथप्रदर्शक बन जाती है। केन्द्रगामिनी इन्द्रियां मन में अन्तर्हित होकर उसके माध्यम से केन्द्रस्थ सत्ता तक पहुंचती हैं। अतः मंत्र में कहा गया है कि मन से संयुक्त (समनसः) होकर मन से भी ऊपर विज्ञानमय कोश की प्रज्ञाशक्ति (सकेताः) की सहायता से क्रतु (चेतना का यज्ञ) सम्पन्न करने में साधक—भरद्वाज की इन्द्रियाँ (विश्वेदेवाः) सहायक बन जाती हैं।

ऐसा होने पर सभी इन्द्रियों के कार्य में विशेष गरिमा का संचार हो जाता है। इस विशेष योग्यता के कारण प्रत्येक इन्द्रिय को ब्रह्म की परम ज्योति की अनुभूति हो जाती है, जिसका एक अंश साधक के हृदय में वैश्वानर ज्योति के रूप में विद्यमान है। दूसरे मंत्र मेंइसी अनुभूति को साधक—भरद्वाज शब्द बद्ध करता है। वह चाहता है कि उसके कान परमज्योति के उस अंश को अपना विषय बनायें, जिसका बाह्य रूप सृष्टि में शब्द तन्मात्रा और आकाश महाभूत के रूप में विद्यमान है, चक्षु उस अंश को अपना विषय बनायें, जिसका बाह्य रूप रूप-तन्मात्रा और अग्नि महाभूत के रुप में विद्यमान है तथा इस प्रकार सभी इन्द्रियों द्वारा स्वस्व-विषय के सूक्ष्मतम अंशों को विषय बना लिये जाने पर शरीरस्थ हृदय में निहित ज्योति भी उस परमज्योति में मिलने के लिए गतिशील हो जाये।

प्रथम मंत्र में अन्तर्जगत् की इस महती क्रतु-प्रक्रिया के प्रवर्त्तन का सूत्रधार जविष्ठ मन को माना गया है इसी तरह दूसरे मंत्र में भी इसका श्रेय अन्तर्जगत् और बाह्य जगत् में दूर तक गति करने में समर्थ (दूरआधीः) और विज्ञानमय कोश में स्वयं प्रज्ञानघन के रूप में परिवर्त्तित होने वावे मन को ही दिया गया है। उसका जितना तीव्र वेग होगा, उतनी ही शीघ्रता से अन्तर्जगत् में सम्पन्न होने वाले क्रतु में इन्द्रियां भाग ले सकेंगी और इस प्रकार अपने विषयों के सूक्ष्मतम अंश के माध्यम से परमज्योति की साक्षात् अनुभूति प्राप्त कर सकेंगी।

'किम् स्वित् वक्ष्यामि ? वाक्य द्वारा परमज्योति के अनिर्वचनीय स्वरूप की ओर संकेत किया गया ज्ञात होता है। इसी तरह 'किम् उ नु मनिष्ये ?' वाक्य में उस अनिर्वचनीय ज्योति की अनुभूति प्राप्त करने के लिए मन के वेग को बढ़ाने के लिए साधक की व्यग्रता व्यंजित होती है।

इस प्रकार दोनों मंत्रों का भाव है—'शरीर में वैश्वानर की ज्योति हृदय में निवास करती है। इन्द्रियाँ अपने विषयों की आहुति देकर उससे यह यज्ञ सम्पन्न कर रही हैं। इन्द्रियों को अन्तर्मुखी बना कर और इस प्रकार उनकी सामर्थ्य में वृद्धि करके इस सामान्य आध्यात्मिक यज्ञ को क्रतु (सामर्थ्य युक्त बृहत्कर्म) का रूप दिया जा सकता है, जिसमें परमज्योति की अनुभूति होती है। यह साधना मन की उत्कंठा व कर्म-प्रवृत्ति पर निर्भर होती है।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लोक में 'दीपक से दीपक जलाने' की उक्ति प्रसिद्ध है। इन मंत्रों में परम-ज्योति को, मन को साधना के मार्ग चला कर जीवन में अनुभूति और प्रेरणा का विषय बनाने की बात कही गई है। शरीर माटी का दीपक है। इसमें एक प्रच्छन्न ज्योति निहित है। उसे प्रत्यक्ष करने के लिए 'परमज्योति' रूपी सतत प्रज्वलित दीपक की लौ से माटी के इस दीपक को जलाने की आवश्यकता है। उपर्युक्त मंत्रों द्वारा हम अपने शरीर रूपी माटी के दीपक को जलाने के लिए उस परमज्योति का आह्वान करते हैं, जो घटघट में व्याप्त होकर जीवन पथ में प्राणिमात्र को आलोक प्रदान करती रहती है। दीपोत्सव पर जलाये जाने वाले दीपों का आलोक उस परम-ज्योति के आह्वान की प्रक्रिया का स्थूल प्रतीक मात्र है। सच्चा दीपोत्सव तो वह होगा, जब हम सब देशवासी उस परमज्योति का आह्वान अपने अन्तर्जगत् में करेंगे और उससे अपने हृदय का दीपक जला कर राष्ट्र-लक्ष्मी का स्वागत करने को तत्पर हो जायेंगे।

आप भी हंसिए

एक सज्जन तेजी से कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें सरदारजी मिले। सरदार जी बोले—भाई इतनी तेजी से कहाँ जा रहे हो? वे सज्जन बोले—अरे, पूछो मत। सरदार जी की उत्सुकता और भी बढ़ गयी। वे बोले—फिर भी कुछ तो बताओ। उन सज्जन ने जवाब दिया—जहां आप कभी नहीं गये। सरदार जी अपनी पूर्ण जिज्ञासा जाहिर करते हुए बोले—आखिर कहाँ? उन सज्जन ने तपाक से उत्तर दिया—नाई की दुकान पर, और आगे बढ़ गये।

× × ×

एक पिता ने अपने पुत्र से कहा—तुम्हारे अध्यापक जी की शिकायत है कि तुम स्कूल में लेट जाते हो।

पुत्र—नहीं पिताजी, स्कूल में तो मैं बैठा रहता हूं। हाँ, कभी-कभी खड़ा जरूर रहता हूं। परन्तु मेरा रिकार्ड है कि आज तक मैं स्कूल में लेटा कभी नहीं।

× × ×

अरुण (डाक्टर से)—डाक्टर साहब, समझ में नहीं आ रहा है कि आपकी अमूल्य सेवाओं का बदला कैसे चुकाऊं?

डाक्टर—फीस के पचास रुपये नकद दे कर।

× × ×

अजीत – तुम्हारे पास ४० पैसे हैं, यदि २० पैसे और आ जायें तो कितने पैसे हो जायेंगे?

राजू—इतने पैसे कि एक आइसक्रीम आसानी से आ जायेगी।

—वीरेन्द्र कुमार त्यागी, दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—भीमसेन शास्त्री

वेद ईश्वरीय ज्ञान है

अनन्त प्राणि-समुदाय में द्विपादचारी मनुष्य निश्चय ही सर्वश्रेष्ठ है। इसकी प्रगतियों की कोई सीमा नहीं। साधारण सफल योगिजन भी किसी स्थान पर बैठे हुए, संसार के किसी भी भाग का, वर्तमान का ही नहीं, भूतकाल का भी निखिल वृत्तान्त जानने में समर्थ होते हैं, यह कोई कल्पित कथा नहीं। ऐसे एक मनुष्य के दर्शन का सौभाग्य मैं स्वयं भी प्राप्त कर चुका हूँ। वैज्ञानिकों की उन्नति आश्चर्यकारी है। आधुनिक विमान न केवल आकाश में चमत्कार दिखाते हैं, वे पृथ्वी पर दौड़ते हैं तथा समुद्र में डुबकी लगाते हैं। रूस व अमरीका के वैज्ञानिक पृथ्वी की ही नहीं, अन्तरिक्ष की भी खोज कर रहे हैं। इसमें उन्होंने प्रशंसनीय सफलताएं प्राप्त की हैं। अनतिदूर काल में वे आकाश में थेगली लगाने की कहावत को पूरा करेंगे, ऐसी पूरी-पूरी आशा है।

निःसन्देह मनुष्य ने विद्या तथा कला के प्रत्येक क्षेत्र में असाधारण प्रगति की है और करेगा। परन्तु अपनी जन्मावस्था में यह प्राणि वर्ग मूर्धन्य मनुष्य अतीव दीन, हीन और असहाय है। हम देखते हैं कि गोवत्स जन्म के थोड़े समय पश्चात् ही अपनी लीलाओं से आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। चलने, फिरने, उछलने, कूदने का सामर्थ्य ही नहीं, आवश्यकता होने पर वह प्रथम सूर्य दर्शन के दिवस ही तैर भी सकता है। मृगशावक की चेष्टाएँ आरम्भ से ही सर्वजनरमणीय होती हैं। सर्पशिशु अण्डे में से निकलते ही रेंगने लगता है। नाग शावक के दंश की सांघातिकता स्वभावसिद्ध है परन्तु मूर्धन्यताभिमानी मानव जन्म के पश्चात् कई मास तक हिलने-डुलने योग्य भी नहीं हो पाता। बैठना भी कई मास में सीख पाता है—सो भी माता-पिता के अनेक प्रयत्नों से। खड़ा होना और चलना तो और भी महान् प्रयत्नों का अपेक्षी है।

पशु-पक्षियों को बोलना सिखाना नहीं पड़ता। सब कुछ उन्हें बिना विशेष प्रयत्न सहज सिद्ध-सा है। मनुष्य शिशु बोलना सिखाने पर वर्षों में सीख पाता है। कई बालक तो ३-४ वर्ष तक अथवा कुछ बाद तक भी तुतलाते रहते हैं।

पशु-पक्षी आदि में स्वजीवनयात्रार्थ अपेक्षित ज्ञान भी सहज सिद्ध है। राजस्थान में झालावाड़ के किसी समीपवर्ती वन में एक बार वानर और सर्प की लड़ाई हुई। कपि-वृषभ सर्प से दष्ट होकर मूर्च्छित हो गया। तत्काल एक अन्य कपि दौड़ा गया और कहीं से एक लकड़ी तोड़ लाया। उसने उसे घिसकर मूर्च्छित पशु के नेत्र में लगाया और वह निर्विष हो गया। कोई मनुष्य यह सब कौतुक देख रहा था। उसने वह लकड़ी उठा ली। वह सर्पविष की अत्युत्तम औषध थी। अनेक मनुष्यों के जीवन की उससे रक्षा हुई। पर वह पहचानी नहीं जा सकी। सर्पजाति के जन्मजात वैरी नकुल जन्म से सर्पविष की औषध जानते हैं और आवश्यकता होते ही दौड़ कर उसे खा लेते हैं। कुत्ते उदर-शोधनार्थ औषध जानते हैं और यथासमय उसका उपयोग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करते हैं। सभी मनुष्येतर प्राणियों में स्वापेक्षित ज्ञान आश्चर्यकारक मात्रा में जन्म-सिद्ध है। राजस्थान के कोटा नगर के समीप एक बड़ा तालाब है। वह नगर के प्रकोट के बड़े भाग को स्वकल्लोल माला के प्यार भरे स्पर्श से शीतल किया करता है। स्वर्गिय प्रजाप्रिय कोटापति श्री उमेदसिंह ने प्रकोट के तटानुतट नई सड़क का निर्माण प्रारम्भ किया था। वह कार्य अपूर्ण रह गया। प्रकोट के समानान्तर एक बहुत मोटी दीवार बनाई गई थी। प्रकोट तथा नवीन भित्ति के मध्य में मिट्टी का भराव देकर इस पर सड़क बनानी थी। वर्षा ऋतु में तालाब का जल अपूर्ण भित्ति से ऊँचा हो गया। फिर वह सूखने लगा। मैं सोचने लगा कि शीघ्र ही दीवार के दोनों ओर का जल विच्छिन्न हो जायेगा और तब प्रकोट तथा अभिनवभित्ति के मध्य भाग की असंख्या मछलियाँ तालाब से विच्छिन्न हो जायेंगी और इधर का जल सूखने पर मर जायेंगी। पर मुझे यह देखकर बड़ा विस्मय हुआ कि जल सम्बन्ध-विच्छेद होने पर एक भी मछली इस ओर न थी। यह तो अति साधारण उदाहरण है। पशु-पक्षियों को भावी वर्षा आदि का पूर्ण ज्ञान मनुष्य की अपेक्षा बहुत अधिक है। इंग्लैंड, अमरीका आदि में कुछ मत्स्य जातियां नदियों से चल कर गम्भीर सागर में अण्डे देती हैं और यहाँ मर जाती हैं। नवीन उत्पन्न मछलियां महासागर से सैकड़ों मील चल कर ठीक उन नदियों में पहुँच जाती हैं, जहां उनकी माताएं रहती थीं और वहीं रहने लगती हैं। इन सब परिस्थितियों का मनन हमें परमपिता जगदीश्वर का अस्तित्व मानने पर विवश करता है। ऋषियों ने ठीक कहा है—

भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः
प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।

परब्रह्म का अस्तित्व मेरे निबन्ध का विषय नहीं है। मेरा इतना ही अभिप्राय है कि मनुष्येतर सृष्टि को स्वापेक्षित संपूर्ण ज्ञान, अतिविस्मयकारिणी मात्रा में जन्मसिद्ध है, परन्तु सर्वप्राणिवर्ग मूर्धन्य मनुष्य स्वजन्म समय में अतीव दीन, हीन और असहाय है। वह अपनी किसी भी आवश्यकता की पूर्त्ति में अक्षम है। शारीरिक क्षमता प्राप्त होने पर भी वह प्रत्येक प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति में परसहायापेक्ष है। इस बात के निश्चय के लिए अनेक परीक्षण भी समय-समय पर किये गये हैं। अफ्रीका के किसी प्राचीन सम्राट् ने ऐसा परीक्षण किया था। महान् अकबर ने भी ऐसा परीक्षण किया था। मनुष्य शिशु का पालन गूंगे द्वारा कराया गया। वह बच्चा पल गया। वह केवल पास बँधने वाली बकरी का मिमियाना मात्र जानता था। भेड़ियों द्वारा पाले गये अनेक शिशु भी हमारी स्थापना में साक्षी हैं। इसका उदाहरण संसार की अनेक असभ्य जातियाँ हैं, जो इतने सुदीर्घकाल में कोई उन्नति नहीं कर सकीं।

आरम्भ में वेदों का प्रकाश

मनुष्य योनि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-चतुर्वर्ग सिद्ध्यार्थ है। यह कर्म अथवा भोग योनि है। इतर सृष्टि केवल भोगयोनियाँ हैं। मनुष्य में सहज ज्ञान का अभाव है, पर ज्ञान प्राप्त होने पर कर्मयोनि होने से मनुष्य को सतत उन्नतिशील बनाया गया है। पशु सृष्टि भोग योनि है, ज्ञान विषय में उन्नति शील बनने की आवश्यकता न थी। अतः दयामय परमपिता ने उनका अपेक्षित संपूर्ण ज्ञान जन्म से दे दिया है। वह परम दयामय पिता अपनी सर्वश्रेष्ठ सृष्टि मनुष्य को ज्ञान से वञ्चित कैसे रख सकता था? हां, कर्मयोनि मनुष्य की ज्ञान विषय में सृष्टि भिन्न प्रकार की है। उसे ज्ञान विषय में सतत उन्नतिशील बनाया गया है। अतः उसे सहज ज्ञान नहीं दिया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गया और इस प्रकार की रचना मनुष्य की स्वतः महती उन्नति तो दूर रही, साधारण जीवन यात्रा भी ज्ञान दान बिना असम्भव थी। परमपिता ने सृष्टि के प्रारम्भ में ही वेद ज्ञान दिया। ऋषि लोग पूर्व संस्कारों के कारण उसे ग्रहण करने में पूर्ण समर्थ थे। उन्होंने उसे धारण किया—उसका प्रचार किया। इस वेद ज्ञान से मनुष्य जाति के सर्वविधि अभाव मिट गये और वह जीवन यात्रा तथा मोक्षप्राप्ति में समर्थ हो गया।

कौरवों तथा पाण्डवों के पितामह महान् ज्ञानी श्री कृष्णद्वैपायन वेदव्यास ने अपने अनर्घ्य ग्रन्थ महाभारत में लिखा है—

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।

आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः

(महाभारत शान्तिपर्व २३१।५६)

अर्थात् अजन्मा परब्रह्म ने (मनुष्य सृष्टि के) आरम्भ में ही अनादि अमरण-धर्मा नित्य दिव्य वेदमयी वाणी प्रदान की। उसी वेदमयी दिव्य वाणी से (मनुष्यों की) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष विषयक सारी चेष्टाएँ प्रारम्भ हुईं।

ईश्वरीय ज्ञान की सत्ता पर आदि काल से विश्वास

हम धार्मिक इतिहास पर दृष्टिपात करें, तो सभ्य संसार में सर्वत्र ईश्वरीय ज्ञान की सत्ता पर सदा विश्वास रहा है।

वैसे तो आजकल जगत् में नये-नये ईश्वरीय ज्ञानों की चर्चा यत्र-तत्र सुनाई देती रहती है। ऐसे ईश्वरीय ज्ञानों की ही नहीं, आजकल ईश्वरावतारों की भी न्यूनता नहीं है। तथापि इन पर बहुसंख्यक सुशिक्षितों का अविश्वास है और यद्यपि हिन्दुओं तथा मुसलमानों में यत्र-तत्र ऐसी प्रतिज्ञाएँ की जा रही हैं, परन्तु तत्तत् धर्मों के प्रधान नेता स्वयं उनका तीव्र प्रतिवाद भी कर रहे हैं। अतः इस लुटेरा मण्डली की चर्चा यहां अनवकाश है। हम कोटिशः पुरुषों के धर्म ग्रन्थों के काल की ही चर्चा करेंगे।

१. अन्तिम ईश्वरीय ज्ञान कुरान के आविर्भाव को लगभग १३४९ वष हुए हैं।

यद्यपि हिजरी संवत् इस समय २००० है, पर इसका कारण यह है कि मुसलमानों का धार्मिक वर्ष सभ्य संसार के वर्ष से (चान्द्र गणना मात्र का आश्रय लेने के कारण) ११ दिन छोटा है। इसी कारण वास्तविक १०० वर्ष मुसलमानों की धार्मिक गणना में १०३ वर्ष २६ दिन से अधिक हो जाते हैं। इसी दोष के कारण इस चान्द्र वर्ष को शासन कार्यों में मुसलमान बादशाह भी प्रमाण न मान सके। अकबर ने भारतीय गणनानुसार फस्ली सन् चलाया।

२. बाइबिल का नूतन संदेश (न्यू टेस्टामेन्ट—ईसा मसीह के उपदेश) लगभग १९५० वर्ष पुराना है।

ईसा के जन्म को १९८० वर्ष हुए माने जाते हैं। ईसा ने लगभग ३० वर्ष की अवस्था में उपदेश प्रारम्भ किया था।

३. बाइबिल का पुरातन संदेश (ओल्ड टेस्टामेन्ट—मूसा के उपदेश) कई सौ वर्ष अधिक पुराना है।

४. पारसियों का धर्म ग्रन्थ जरदष्टि (जरतुश्त) का जन्दावस्था ३७५० वर्ष (अर्थात् महात्मा बुद्ध के जन्म से भी अधिक) पुराना है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भगवान् बुद्ध को २५०० वर्ष मात्र पुराना मानना वर्तमान ऐतिहासिकों का महान् प्रमाद है।

५. मनुष्य सृष्टि के प्रारम्भ काल में हुए ईश्वरीय ज्ञान वेद की चर्चा हम गत अनुच्छेद में कर आये हैं। वेदों को सभी विद्वान् संसार के पुस्तकालय का प्राचीनतम ग्रन्थ मानते हैं।

जन्दावस्था तथा कुरान के अनेक वचन वेद मन्त्रों अथवा ब्राह्मण वचनों के रूपान्तर मात्र हैं।

कुरान, नूतन धर्म नियम तथा पुरातन धर्म नियम की रचना अरब देश के एक छोटे-से क्षेत्र (मक्का, मदीना, यरूशलम तथा इस्राइल) में हुई थी। जन्दावस्था ईरान में रची गई थी। उपर्युक्त प्राचीन धर्म ग्रन्थ ही सम्पूर्ण सभ्य जगत् के धर्म गन्थ हैं। इस सम्पूर्ण स्थिति पर मनन करने से हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि सम्पूर्ण सभ्य जगत् सदा ईश्वरीय ज्ञान के अस्तित्व पर विश्वास करता रहा है।

साधारणतः महात्मा बुद्ध को नास्तिक माना जाता है। पर उन्होंने ने भी वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने का खण्डन नहीं किया। वह उसको ईश्वरीय ज्ञान ही मानते थे। पर तात्कालिक ब्राह्मण विद्वान् याज्ञिक हिंसा को भी वेद मूलक बताते थे अतः महात्मा बुद्ध ने वेद में प्रक्षेपों का होना मान लिया था।

आधुनिक विद्वान् वेद के ईवरकृत होने का खण्डन नहीं करते

किसी भी तथाकथित ईश्वरीय दूत जरतुश्त, मूसा, ईसा, मुहम्मद ने यह प्रतिज्ञा नहीं की कि मत्प्रस्तुत ग्रन्थमात्र ईश्वरीय ज्ञान है। सब ने प्राचीन ईश्वरीय ज्ञानों की प्रामाणिकता का खण्डन किये बिना यही कहा है कि नवीन परिस्थितियों के अनुसार परमात्मा ने यह नया ज्ञान और दिया है।

अरब के धर्म ग्रन्थ वेद की सत्ता को मानते हैं

मुसलमानों का कुरान, ईसाइयों का नूतन धर्म नियम तथा यहूदियों का प्रत्न धर्म नियम वेदों का साक्षात् नाम तो नहीं लेते, पर सबसे पुराने ज्ञान ईश्वरीय को इब्राहीम पर अवतीर्ण मानते हैं। इन तीनों धर्मों की एक-एक धर्म पुस्तक है। तथापि ये ग्रन्थ इब्राहीम के अनेक ग्रन्थों की चर्चा करते हैं। यद्यपि ये पुस्तकें उन ग्रन्थों की ठीक संख्या नहीं बतातीं, तथापि बहुवचन अवशतः तीन का बोधक होता है अर्थात् स्पष्ट ही इब्राहीम के ग्रन्थ तीन या अधिक थे।

एक बड़े मननशील मुसलमान विद्वान् हाफिज अताउल्ला यकता ने अपनी पुस्तक 'इस्लाम का पहला पाठ' में बलपूर्वक स्थापना की है कि इब्राहीमी सहीफे ब्रह्मा जी के चार वेद ही हैं। इब्राहीम शब्द ब्रह्म का ही रुपान्तर है। उपर्युक्त तीन ग्रन्थों (पुरानी बाइबिल, नई बाइबिल व कुरान में इब्राहीम को प्रथम ईश्वरीय दूत माना गया है।)

सृष्टि का प्रथम मानव 'ब्रह्मा'

अरब के तीनों धर्म ग्रन्थों की साक्षी की चर्चा ऊपर हो चुकी है। वेद में स्वयं परमपिता ने सृष्टि के प्रथम मानव का नाम 'ब्रह्मा' रखा है। तद् यथा—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भूतानां ब्रह्मा प्रथमोत जज्ञे ।

(अथर्व० १८,२२,२३)

अर्थात् प्राणियों (मनुष्यों) में ब्रह्मा प्रथम उत्पन्न होता है । हमारे प्राचीन ग्रन्थ मुण्डकोपनिषद् में भी वेद का आविर्भाव ब्रह्मा पर स्वीकार किया गया है । इस प्रतिष्ठित-उपनिषत् का प्रथम वचन है—

ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता ।
स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्या प्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राप ॥

एक अन्य प्राचीन मान्य उपनिषत् श्वेताश्वर में भी इसी बात को और भी स्पष्ट शब्दों में प्रतिपादित किया गया है—

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।
तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये ॥

(श्वेताश्वतर ६.२८)

वेद निश्चय ही इस सृष्टि के प्रथम ग्रन्थ हैं

जगतीतल के सकल महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष विद्या से पूर्वतन ग्रन्थों की ओर संकेत करते हैं । अर्थात् वे अपने से पूर्ववर्ती ग्रन्थों की सत्ता को स्वीकारते हैं । यह है भी सर्वथा स्वाभाविक । ग्रन्थ लेखक कभी तो पूर्व ग्रन्थों का आभार (उनकी उपजीव्यता) स्वीकार करते हैं और कभी किसी पूर्व ग्रन्थ की आलोचना करते हैं । किसी न किसी प्रकार पूर्व रचनाओं की चर्चा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष आ ही जाती है । धार्मिक ग्रन्थों में तो पूर्व रचना का संकेत अनिवार्य होता है— कथाओं-उपन्यासों तक में वह किसी न किसी प्रसंग में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष आ ही जाता है । कोई पौरुषेय महत्त्वपूर्व ग्रन्थ इसका अपवाद नहीं है ।

जो भी विद्वान् पूर्वग्रहरहित हो गम्भीरता से विचार करेंगे, वे हमसे पूर्णत सहमत होंगे कि ग्रन्थों में पूर्वरचनाओं का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष संकेत पाया जाता है । परन्तु कैसा विस्मयकर है यह तथ्य कि चारों वेद संहिताओं के विशाल कलेवर में कहीं किसी पूर्व ग्रन्थ की ओर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष संकेत नहीं है ।

यूरोप के महान् विद्वान् अल्फ्रेड लड्विश तथा विन्टर्निट्ज़ ने मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है कि संपूर्ण भारतीय साहित्य तथा भारतीय जीवन ऋग्वेद को अपने से पूर्व स्वीकारता है, पर ऋग्वेद किसी पूर्व रचना की ओर संकेत नहीं करता ।

यह तथ्य वस्तुतः अति महत्त्वपूर्ण है । इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि चार वेद ही सृष्टि के आदिम ग्रंथ हैं । इनसे पूर्व अन्य कोई ग्रंथ नहीं था । यदि इनसे पूर्व कोई ग्रन्थ होता, तो यह कैसे सम्भव है कि इतने विशाल कलेवर चार वेदों में उपजीव्य अथवा समालोच्य रूप में कहीं भी उसका संकेत न होता ।

अतः निश्चय ही ये चारों वेद सृष्टि के प्रथम ग्रंथ हैं । इसमें कोई मतभेद सम्भव नहीं है ।

वेद ईश्वरीय रचना हैं

पाश्चात्य विद्वान् निष्पक्षता का घोष तो बहुत करते हैं, पर वे सदा ही अनेक पूर्वग्रहों से गृहीत रहे हैं । एक ओर उनकी निजी धार्मिक मान्यताएं उनका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूर्ण बन्धन रही हैं। वे कभी ऐसे निर्णय का स्वागत नहीं करते, जो उनकी धार्मिक मान्यताओं पर आघात करें। उनके पैरों में दूसरी भयंकर बेड़ी विकासवाद है।

"विशाल वेदों में किसी पूर्व ग्रन्थ का संकेत नहीं, अतः वे सृष्टि के प्रथम ग्रन्थ सिद्ध होते हैं, पर भाषा वा काव्य का विकास शनैः-शनैः होता है, अतः निश्चय ही सहस्रों वर्षों में भाषा तथा काव्य इतने विकसित हो सके होंगे कि उत्तम काव्य ग्रन्थ वेद बन सके। अतः उनको प्रथम रचना कैसे माना जाये ?

"भारतीय सदा से मानते आये हैं कि वेद ईश्वरीय रचना है, अतः सृष्टि का आदि काव्य इतना उन्नत होने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। पर प्रथम तो विज्ञान ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता। इस अनिश्चित आधार पर वेद को ईश्वरीय काव्य कैसे माना जाये ? फिर यदि पवित्र बाइबिल के अनुसार ईश्वर की सत्ता को स्वीकार कर भी लिया जाये ये तो वेदों को ईश्वरीय काव्य मानकर क्या बाइबिल पर हरताल फेरनी है ? इस वैज्ञानिक युग में ईसाई धर्म व विज्ञान विरुद्ध बाइबिल का जनता के हृदय से वैसे ही लोप हो चुका है। यदि हम यूरोपीय विद्वान् भी वेद को ईश्वरीय काव्य घोषित कर दें, तो मृतप्राय बाइबिल की कब्र खोदने वाले हम लोग बन जायेंगे। ना प्रभु ईसा, ऐसा घोर पाप हम कभी नहीं करेंगे।

"बस वेदों को धीरे-धीरे विकसित हुए भारतीय ऋषियों की रचना मानना ही श्रेयस्कर मार्ग है।"

यह है विचारधारा यूरोपीय विद्वानों की। आज के अधिकतर भारतीय शिक्षित यूरोप के मानस पुत्र हैं। कुछ तो उनसे बहुत आगे बढ़े हुए हैं। यदि यूरोपियन वेद को चार-पांच सहस्र वर्ष पुराना कहें, तो ये दो सहस्र वर्ष पुराना ही घोषित करेंगे-करायेंगे। तभी तो संसार उन्हें निष्पक्ष मानेगा। तभी ईसाई और मुसलमान प्रसन्न रहेंगे।

इन सब स्वार्थि पूर्वग्रहयुक्तों को तो कोई विश्वास दिला नहीं सकता, पर पूर्वग्रह रहित आस्तिक जन निश्चय ही हर्षित हृदय से सृष्टि के इस प्रथम सुविकसित ज्ञान गरिमायुक्त काव्य को ईश्वरीय स्वीकार करेंगे।

'नास्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।

वेद को सृष्टि का प्रथम काव्य हम ऊपर सिद्ध कर चुके हैं और इतना सुविकसित गम्भीर ज्ञान पूर्णतः वैज्ञानिक विशाल प्रथम ग्रन्थ केवल ईश्वरीय कृति ही सम्भव है।

वस्तुतः वेद ईश्वर के अस्तित्व के भी प्रमाण हैं।

इस्लामी साम्राज्यवाद की चुनौती : ४०) सैकड़ा मंगायें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन-पथ

—बनारसी सिंह

जीवन क्या है ? अनेक कह उठते हैं कि धूल के तुल्य ही तो है यह । यह भी सत्य है कि धूल उठती है । तो उच्च गगन की विशातम गहराइयों तक-व्याप जाती है—शायद उस समय उस धूल की लालसा होती है फिर से अपने उद्गम स्थल का ओर-छोर पा लेने की । बस ऐसा ही कुछ है जीवन का क्रम भी । जीवन प्रारम्भ होता है—समाप्त हो जाताहै । सृष्टि का नियम है यह—ईश्वर का अटूट विधान भी यही है । यह आज भी उसी रूप में अविरत है और सभंवत: अविरत ही रहेगा भी ।

वाहन पगडंडी-राजमार्ग किसी पर भी दौड़ता है, तो आस-पास से धूल उठती है और फिर यह छा जाती है उस वाहन के ऊपर तक भी । यह जानते हुए भी कि वाहन गुजर जाने पर उसे पुन: लौटना ही होगा और फिर वह वहीं आ जाएगी—जहाँ से उठी है । फिर वह कुछ पैरों के तले आएगी । लोग उस पर से आगे बढ़ते जाएंगे । इस कटु सत्य से इनकार तो नहीं कर सकता है । यह कटु सत्य ही तो तथ्य है ।

बस, ऐसा ही कुछ होता है मानव-जीवन में भी । माया-मोह रूपी धूल का भंवर ग्रसता जाता है—प्रतिपल—प्रतिक्षण—पर न जाने क्यों? यह जानते हुए भी कि समाप्ति पर सब कुछ यहीं रह जाता है । बस यहीं से भेद हो जाता है—मानव और भगवान् में अल्पबुद्धि और बुद्धिमान में । जो भी मोह अथवा इस सृष्टि भी भूल भुलैया में ग्रस्त हो जाता है, वह तो उसी गति को प्राप्त होता है जो उस पापी की होती है जो भंवर में फस जाता है । जो भी इस भंवर में फंसे, वह पहले भले ही तीव्र गति से चक्कर काट ले—किन्तु फिर वह टकराकर ही डूब जाएगा—जल की अतल गहराइयों में और फिर कभी भी ऊपर न आ सकेगा । उसका प्रमाद ही उसे निगल जाएगा ।

यही तथ्य और सत्य किसी भी राष्ट्र व जाति के जीवन की भी परिणति का द्योतक है । व्यक्ति के समान जातियों की भी यही नियति है । क्योंकि जातियों व राष्ट्रों का सृजन भी तो व्यक्ति ही करते हैं । क्या हम वैदिक धर्मी, जिन्हें सामान्य संसार आज हिन्दू के नाम से जानता है, व्यक्तिश: अपनी कल्पना में ऊँची उड़ान का सामान जुटाने को ही जीवन का आदर्श नहीं मान बैठे ? हमें अपने सिद्धान्तों की उच्चता पर गर्व है । अपने दर्शन की महानता की चर्चा करने में धरती आकाश के कुलावे मिलाने में हम किसी से पीछे नहीं रहते । किन्तु वास्तविकता के धरातल पर खड़े होकर हमें यह सोचने का अवकाश ही नहीं कि जिस जाति के महान् आदर्शों की हम चर्चा करते हैं, वे हमारे जीवन में कितनी गहनता तक उतरे हैं । क्या हमने जीवन में उतारा है उस दर्शन को ? हमने सर्वे भवन्तु सुखिन: का उच्चार तो अनेकों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या हम अपने जीवन में भी सुख को ला पाए हैं ? हमने तो मात्र धनोपार्जन को अपने जीवन का लक्ष्य मान लिया है। हमारा यह धन राष्ट्र का है—समाज का है, समाज के लिए है, इस भावना से अनुप्राणित होकर भी क्या हम कभी कर्त्तव्य के समरांगण में अवतरित होने को आतुर हुए हैं ? हम भौतिक लिप्सा और सामग्री के बल पर ही उन्नति की चेष्टा करते हुए क्या वास्तविक शांति का सोपान प्राप्त कर सके हैं ? क्या हम विचार भी करते हैं कि सतत संघर्ष के उपरान्त भी अन्त शुभ क्यों नहीं !

वस्तुतः आज आर्य जाति के जीवन में भटकाव है। उस भटकाव की परिणति ही उसे उस दिशा में ले जा रही है, जहां धूल के तुल्य ऊँची उड़ान के सामान को हैं, किन्तु धूल के भंवर में ग्रस्त होकर एक गतिमान् वाहन की स्थिति को प्राप्त करने का सामान नहीं। युग की पुकार है कि हम आत्मावलोकन करें—आत्मनिरीक्षण करें। यह आत्मनिरीक्षण ही हमें इस तथ्य से अवगत करायेगा कि वास्तविक गति धूल के तुल्य उड़ना नहीं, अपितु जड़-चेतनमय, विष-अमृतमय, अंधकार-प्रकाशमय जीवन में न्याय के लिए कार्य करना ही वास्तविक गति है। अतः आर्य जाति को उसी गति की आवश्यकता है। हिन्दू समाज को ऐसा ही गतिमय बनाना समय की मांग है।

आज इस महान् जाति के समक्ष साम्प्रदायिकता का विषधर फुंकार मारे रहा है। तन्द्राग्रस्त इस महान राष्ट्र का निगलने के लिए साम्राज्यवादी शक्तियों के हस्तक विभिन्न मुद्राओं में यहां तक कि संन्यासी तुल्य वेशभूषा भी धारण कर इस जाति को लील जाने के लिए आतुर हैं। साम्यवादी अजगर भी अपना विकराल मुख फैला कर इस महान् जाति को लीलने को आतुर है।

उनका सामना करने के लिए कर्त्तव्य के समरांगण में उतरना होगा उनको, जो बुद्धिपूर्वक नेत्र खोल कर समक्ष विद्यमान खतरों को देख सकते हैं, जो धूल बनने को या धूल के समान ऊंची उड़ान भरने को जीवन नहीं समझते अपितु जो उन शक्तियों के अपावन सपनों को धूलि धूसरित करने को कमर बांधकर तैयार हों। जयकारों में जिन्हें जीवन का सार नहीं प्रतीत होता, अपितु जो देव दयानन्द के सपनों को नेत्रों में संजोकर कहनी को नहीं करनी को महत्त्व देते हैं। मेरी पुकार है उन्हीं से। मेरी गुहर है उन्हीं से।

सर्वनाश की जलती हुई आग इस आर्य वसुन्धरा के पूर्वांचिल को निगल रही है, उत्तरांचल पर गिद्ध दृष्टि लगाए कुछ महाशक्तियां झांक रही हैं, तो दक्षिणांचल पर भी किसी की नजर है।

मैं पुकार रहा हूँ। क्या कोई सुनेगा मेरी गुहार, मेरी पुकार। क्या भारत के लौह लाडलों के समक्ष धूल के स्थान पर चट्टान बनने की लालसा ही नहीं? क्या इस वीर जाति का पौरुष सुस्त हो गया है ?

इतिहास तो बताता है कि जब-जब यह जाति निराशा के निविड अंधकार की अपनी ही कल्पनाओं के तान-वितान में प्रमाद-ग्रस्त हो गयी है तो कोई शंकर, कोई प्रताप, कोई शिवा, कोई गुरु गोविन्द, कोई दयानन्द, कोई श्रद्धानन्द। क्या पुनः ऐसा नहीं होगा ? मेरा विश्वास है कि मेरी पुकार व्यर्थ नहीं जाएगी। कोई तो सुनेगा ही। इसी विश्वास के साथ मैं गुहार लगा रहता हूँ। जब युग की पुकार सुन कर बलिदानी युवक कर्त्तव्य के समरांगण में डटेंगे तभी विश्व इस महान् राष्ट्र के शांति संदेश को भी सुन पाएगा। वह बलिदानी भावना जगेगी वेद के संदेश के प्रचार और प्रचार से। उसी की ओर प्रवृत्त होने का मेरा आह्वान है। सोचो, समझो सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दो रास्ते : प्रवृत्ति और निवृत्ति

—डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री

लेखक के सब विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

भारतीय संस्कृति में धर्म के दो मार्ग मिलते हैं—पहला प्रवृत्ति का और दूसरा निवृत्ति का। वैदिक परम्परा का स्वर प्रवृत्ति का रहा है। ईशोपनिषद् में आया है कि मनुष्य को कर्म करते हुए ही दीर्घ-जीवन की आकांक्षा करनी चाहिए।

दूसरा मार्ग निवृत्ति का है। सांख्य, वेदान्त, जैन, बौद्ध आदि परम्पराओं ने इस दूसरे मार्ग पर बल दिया। उन्होंने निर्वाण अथवा मोक्ष के रूप में जिस लक्ष्य का प्रतिपादन किया है, वह निष्क्रिय अवस्था है।

भारतीय मानस में एक प्रकार का द्वंद्व चल रहा है। वह कभी पुरुषार्थ और सक्रिय जीवन की ओर झुकता है, अपने को समृद्ध एवं सुखी बनाना चाहता है। कभी भौतिक आकांक्षाओं को निस्सार बता कर शान्ति से बैठना चाहता है। कभी कर्मठ जीवन की ओर झुकता है और कभी नैष्कर्म्य की ओर। मनोविज्ञान की दृष्टि से उन्हें क्रमशः स्वस्थ और रुग्ण मानस की प्रतिक्रियाएं कहा जायेगा। स्वस्थ व्यक्ति जीवन को उत्तरोत्तर समृद्ध बनाना चाहता है। दूसरी ओर रोगी रोग से छुटकारा पाना चाहता है। जब ज्ञात होता है कि जीवन रहते छुटकारा नहीं हो सकता, तब ऐसे जीवन को भी हेय मानता है। उपर्युक्त दो मनोवृत्तियों को लेकर धर्म के भी दो रूप हो गये। एक मनोवृत्ति ने धर्म का लक्ष्य अभ्युदय माना। इसके दो रूप हैं—अर्थ और काम। दूसरी रुग्ण मनोवृत्ति ने धर्म का लक्ष्य मोक्ष बताया। बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञल्क्य ऋषि मैत्रेयी को कहते हैं—**'अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन'** अर्थात् धन से अमृतत्व की आशा नहीं है। प्रश्न होता है कि इस अमृतत्व का क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ मृत्यु नहीं? ऐसी मृत्यु जिस के पश्चात् जीवन न हो।

आर्य जाति ने कर्म अर्थात् प्रवृत्तिमय जीवन को अपना धर्म माना। उस का स्वर था **'वयं स्याम पतयो रयीणाम्'** अर्थात् हम सम्पत्तियों के स्वामी बनें। विवाह के समय प्रार्थना की जाती थी **'दशास्यां पुत्रानाधहि पतिमेत्रादशं कृधी'** अर्थात् हे भगवान्, नववधू को दस पुत्र देना और ग्याहरवां पति हो जायेगा।

किन्तु उपनिषदों का स्वर है कि जब जीवन का ही ठिकाना नहीं है, तब सन्तान और धन का क्या करेंगे। सभी त्यागमार्गी परम्पराओं में यही स्वर गुंजरित हुआ। वैदिक मानव ने नारी को जीवन का आवश्यक साथी माना। उसके बिना यज्ञ नहीं हो सकता था, किन्तु उत्तरवर्ती परम्पराओं ने उससे भागने को कहा—बन्धन और माया कह कर भरपेट निन्दा की।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनु ने आश्रम-व्यवस्था के रूप में समझौते का प्रयत्न किया। उस ने युवावस्था का धर्म प्रवृत्तिप्रधान और वृद्धावस्था का निवृत्तिप्रधान बताया। जीवन के स्वाभाविक क्रम की दृष्टि से यह विभाजन अत्यन्त उपयोगी है। युवक को संघर्ष करना चाहिए और जब शरीर साथ न दे, तब महत्त्वाकांक्षाएं छोड़ कर सन्तोष वृत्ति अपना लेनी चाहिए।

किन्तु यह विचारणीय है कि यह क्रम भारतीय जीवन में कहां तक उतरा? राजा, पुरोहित आदि जिन व्यक्तियों ने प्रवृत्ति-मार्ग अपनाया, वे सारे जीवन उसी में लगे रहे। दूसरी ओर संन्यासप्रधान परम्पराओं ने बचपन से ही संन्यास पर बल देना आरम्भ किया। बाल्यावस्था से ही मन में भाव भरे जाने लगे कि संसार नश्वर है। नारी नरक का द्वार है। धन, सम्पत्ति तथा राज्य सभी हेय हैं। शरीर को शक्तिशाली बनाने के स्थान पर उसे सुखा डालने को कहा।

नैष्कर्म्य की इस उपासना को दार्शनिक परम्पराओं ने इतना तूल दे दिया कि साधारण व्यक्ति उसके विरुद्ध बोलने में संकोच करने लगा। भय हुआ कि कहीं इसे अज्ञान न समझ लिया जाये। किन्तु प्रश्न होता है कि क्या यह आलस्य एवं अकर्मण्यता को प्रश्रय देने का अभियान नहीं था? पुरुषार्थी को परिश्रम करना पड़ता है। आशा और निराशा के झूले में झूलता हुआ वह आगे बढ़ता है। पद-पद पर संघर्ष करता है। दूसरी ओर एक ऐसा वर्ग अस्तित्व में में आया, जो न परिश्रम करना चाहता था और न संकट उठाना। वह ऐसी बातें करने लगा, जो किसी की समझ में न आयें। रोचक शब्दावली द्वारा उसने श्रमजीवी वर्ग को अपना भक्त बना लिया और उसकी रोटी की समस्या सुलझ गई। भारतीय संस्कृति में यह वर्ग अब भी अपने को उत्कृष्ट मानता है। खेत अथवा कारखाने में काम करने वाले मजदूर की तुलना में विशेष प्रकार की वेशभूषा पहन कर दूसरी दुनियां की बाते करने वाला ऊंचा माना जाता है।

हमारे यहां कृतकृत्य शब्द प्रशंसावाची माना जाता है। इस का अर्थ है वह व्यक्ति, जिस ने अपना काम पूरा कर लिया। किन्तु प्रश्न होता है, क्या काम कभी पूरा हो सकता है? हम भूख लगने पर भोजन करते हैं, थोड़ी देर बाद फिर भूख लग जाती है। यह जीवन का स्वाभाविक क्रम है। जहां भूख नहीं है, वहां जीवन भी नहीं है। पत्थर को भूख नहीं लगती। जब तक भूख है, कर्तव्य भी बना रहेगा। व्यापारी जीवन भर के लिए बहुत-सा अन्न संग्रह करके कह सकता है—मैं कृतकृत्य हो गया, किन्तु क्या इसे आदर्श माना जायेगा। जब तक पड़ोसी का पेट खाली है, उसे कृतकृत्य नहीं कहा जा सकता। गीता में भगवान् कृष्ण कहते हैं कि मुझे कोई अभाव नहीं है, फिर भी मैं निरन्तर काम में लगा हूँ। यदि मैं काम करना छोड़ दूं, तो देखादेखी दूसरे भी छोड़ देंगे। इस प्रकार अव्यवस्था फैल जायेगी। मैं चाहता हूं, कि प्रत्येक व्यक्ति अपना-अपना काम करे और काम करता हुआ अन्तिम सांस ले।

सभी परम्पराएं यह मानती हैं कि संसार अनादि काल से चल रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा। समस्याएँ खड़ी होती हैं और समाधान ढूंढ़े जाते हैं। कुछ दिन सान्त्वना दे कर वे स्वयं समस्या बन जाते हैं, फिर नये समाधान ढूंढ़े जाते हैं। यह शाश्वत क्रम चल रहा है। किसी भी अवस्था को शाश्वत समाधान मनाने का अर्थ है इस सत्य की उपेक्षा।

दार्शनिक जगत् में नैष्कर्म्य साधना का उच्चतम रूप है। निकम्मा शब्द इसी का अपभ्रंश है, जो सर्वसाधारण में घृणा का सूचक है। जो राष्ट्र अथवा जाति शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें कर्म की उपासना करनी होगी। वर्त्तमान जीवन को ऊंचा उठाना होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तीसरे विश्व-युद्ध की भूमिका लिखी गई

काबुल—उद्यान—पर रूसी स्वामित्व व अधिकार भारत प्रायद्वीप व भारत राष्ट्र एवं आर्य जाति पर रूसी स्लावों का प्रबल आक्रमण है

अफगानिस्तान : इतिहास और हम

—अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

२७ दिसम्बर १९७९ को रूसी ऐतिहासिक एंड्री अमालरिक की भविष्यवाणी पूरी हुई। इस ऐतिहासिक ने भविष्यवाणी की थी कि तीसरा महायुद्ध १९८० में छिड़ेगा। रूसी सम्राज्य इससे छिन्न-भिन्न हो जायेगा। इसके कारण यह सत्यवक्ता साइबेरिया की जेलों में १५ वर्ष रखा गया। इस समय पेरिस में है।

काबुल-ह्यून सांग ने इसका नाम उद्यान लिखा है—के एरोड्रोम पर रजतरंगी 'एस्टानोव' परिवहन विमान ३० दिसम्बर तक लगभग ३०,००० से ५०,००० तक सैनिक टैंक और शस्त्रास्त्र रूस में उतार चुका था। इसमें दो मोटरी डिवीजन राइफल मैन भी थे। ये अफगानिस्तान—पक्य आर्यों के देश— केनंगे पर्वतों में फैल गये हैं। कम्युनिज्म युद्धप्रिय है। रक्तपिपासु है, यह इससे प्रकट हो गया।

सामरिक महत्त्व

अफगानिस्तान पर हुए रूसी भयंकर हमले ने राजनीतिक स्थिति सर्वथा बदल दी है। दक्षिणी एशिया और भारत प्रायद्वीप की शान्ति और स्थिरता नष्ट हो गई है। तीसरे विश्व युद्ध का यह एक रणक्षेत्र बन गया है। इस स्थिति के लिए एकमात्र भारत विभाजक उत्तरदायी हैं। भारत के संयुक्त रहते क्या रूस यह साहस कर सकता था ? अकेले राष्ट्रद्रोही कम्युनिस्ट भारत के रूसी हमले का स्वागत कर रहे हैं। लार्ड वेवल इसी कारण भारत विभाजन के विरोधी थे। मार्शल अयूब खां इसी कारण विभक्त भारत की संयुक्त सेना बनाने के पक्ष में था। ब्रिटिश भक्त श्री नेहरू की सत्ता पिपासा इसमें बाधक सिद्ध हुई। भारत भूमि के प्रति इस्लाम और ब्रिटिश एवं कांग्रेस ने भक्ति भावना नष्ट की। फलतः जार जो साहस नही कर सके थे वह बीमार प्रेजीडेंट ब्रेजनेव ने किया है।

इसका सामरिक महत्त्व कम नहीं। रण-नीति में इस कारण परिवर्तन होना सम्भव है। १९५३ में खुरश्चेव टैंक सेना लेकर बूडापेस्ट विद्रोह दबाने पहुँचा था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९६८ में ब्रेजनेव हवाई सेना के साथ प्राग गये थे। किन्तु ५०० से अधिक सैनिक प्राग में रूस नहीं उतार सका था, पर १९७९ में रूस पहली ही रात गैरहाजिर बारबक कारमल को सिंहानासीन करने के समय १०,००० सैनिक काबुल में उतार चुका था। मोटर से राइफल सेना आकंसस (बक्षु) नदी पार कर काबुल आई। जाहिर शाह के समय ही रूस मास्को से काबुल तक मोटर रोड बना चुका था। पश्चिमी इस तीव्र तूफानी गति को देखकर चकित हैं। भारत को नपुंसक बनाकर रखने वाला भारत का शासक वर्ग क्या इसकी कल्पना भी कर सकता था ?

उद्देश्य और लक्ष्य

वर्तमान रूसी साम्राज्य के संस्थापक पीटर दी ग्रेट की परराष्ट्र नीति की रीगा (बाल्टिक सागर) से व्लाडीवोस्टक (प्रशान्त महासागर) तक रूसी साम्राज्य लंगड़ा-लूला रहेगा। क्योंकि मुरमास्क (आर्कटिक सागर) बन्दरगाह सुरक्षित है। पर हिमयुक्त नहीं। रूस को बारह महीने चलने वाला बन्दरगाह चाहिए। ईरान की खाड़ी का विस्तार होने पर भी यह पर्शियन गल्फ पर रूस का स्वामित्व और अधिकार होने से ही सम्भव है। ओर यह भारत जीतने से ही सम्भव है। पर ब्रिटेन रूस का विजय मार्ग रोके रहा। अब पुरानी बाधा नहीं है। भारत का शासक वर्ग रूस प्रेमी है। अतः यह अनुकूल समय है। रूस अफगानिस्तान से वापस लौटने के लिए इतनी तैयारी के साथ नहीं आया। इसकी भनक तक वाशिंगटन को होने नहीं दी। अतः नपुंसक देशों की "लौट जाओ" की प्रार्थना व्यर्थ है। रूस को पर्शियन गल्फ का स्वामित्व चाहिए इसके वास्ते भारत प्रायःद्वीप पर आधिपत्य चाहिए। अमेरिकी बेड़े का इसके बिना क्या रूस मुकाबला कर सकेगा ? विश्व युद्ध इन दोनों की टक्कर से ही होगा। विश्व साम्राज्य का स्वामी तो एक ही देश होगा। यही कारण है कि दक्षिणी यमन की कम्युनिस्ट सरकार ने रूसी हमले का समर्थन किया है।

इतिहास दुहराता है

१९वीं सदी के १८७८--१८७९ में भी ब्रिटिश लोग काबुल में लड़ रहे थे। अफगानिस्तानी गोरिल्ले ब्रिटिश सेना पर पहाड़ों से उतर कर छापा मारते थे। ब्रिटिश सेना को भारी हानि पहुँचाते थे। दर्रों में आती-जाती गोरी सेना पर पत्थर लुढ़का कर ब्रिटिश सेना का नाश करते थे। ब्रिटिश शाह शुजा को गद्दी पर बिठाकर उसके संरक्षक बने थे। भारत के पैसे से अंग्रेजों ने अफगानिस्तान में तीन भारी लड़ाइयां लड़ीं। पर सफल मनोरथ नहीं हुए। शस्त्र-बल से जो नहीं कर सके, वह रुपये के बल से किया। अफगानिस्तान के अमीर को हर साल एक निश्चित राशि देते रहे कबीलों को देते रहे। हबीबुल्ला को भारत में बुलाया गया। शानदार स्वागत किया। अमानुल्ला ने मैत्री भंग की। १९१८ में हमला किया। मंसूरी सन्धि हुई। स्तालिन ने १९२८ में अमानुल्ला का शाही स्वागत किया। ब्रिटिश ने बच्चा सक्का को अमीर बनाकर काबुल भेजा। अमानुल्ला को इटली जाने का आदेश हुआ। नादिरशाह आया। इसका स्थान जाहिरशाह ने लिया। रूस की सहायता से दाऊदखां ने जाहिर को देशनिर्वासित रखा। पर दाऊदखां रूस को अपनी बैरकों में स्थान देने को तैयार नहीं हुआ।

फलतः अप्रैल १९७८ में दाऊद खां को हटाकर नूर मुहम्मद तरक्की को प्रेजीडेंट बनाया गया, परन्तु यह नेशनलिस्ट मुसलमानों के विद्रोह का शमन नकर सका। न इसने रूसी सेना को आमंत्रित किया अतः सितम्बर १९७९ में हाफिजुलअमीन को रूसी सेना ने प्रेजीडेंट बनाया। इसने कठोरता से दमन किया, किन्तु विद्रोह बढ़ा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू जनसंख्या में भारी कमी

—इन्द्रसेन शर्मा

१९५१ से १९७१ तक की अवधि में हिन्दुओं की जनसंख्या ४९ प्रतिशत बढ़ी, जबकि मुसलमानों की ७४ प्रतिशत। यदि यही अनुपात आगे भी जारी रहा, तो भारत के अनेक क्षेत्र मुस्लिमबहुल हो जायेंगे। तब एक नये पाकिस्तान की मांग भी उठ सकती है। प्रस्तुत लेख इस खतरे पर प्रकाश डालता है।

जब हिन्दुस्तान परतन्त्र था, तब विदेशी शासक अपना हित इसमें समझते थे कि देश में हिन्दू जनसंख्या का अनुपात घटाया जाये। हिन्दू तो स्वतन्त्रता आन्दोलन को सफल बनाने में व्यस्त रहे, किन्तु विदेशी तत्त्व अपनी जनसंख्या बढ़ाने और हिन्दुओं की संख्या घटाने में संलग्न रहे। इसी उद्देश्य के वशीभूत भारतीय कांग्रेस के काकीनाड़ा अधिवेशन के अध्यक्षपद से बोलते हुए मौलाना मुहम्मद अली ने कहा था कि छोटे काम करने वाली हिन्दू जातियों के उत्थान के लिए इन्हें हिन्दुओं और मुसलमानों में आधा-आधा बांट दिया जाये।

१८८१ से १९४१ तक हिन्दुस्थान में हिन्दू जनसंख्या ४३.६ प्रतिशत की दर से बढ़ी, जबकि मुस्लिम जनसंख्या में ८८.० प्रतिशत की वृद्धि हुई। फलस्वरूप हिन्दुस्थान के उत्तर-पश्चिमी और उत्तर-पूर्वी अंचलों में मुस्लिम बहुसंख्या हो गई, मुस्लिम लीग की मांग पर हिंदू एवं मुस्लिम बहुसंख्या क्षेत्रों के आधार पर देश का दुःखद विभाजन हुआ और हिन्दुस्थान की धरती पर संसार का सबसे बड़ा मुस्लिम राज्य (पाकिस्तान) स्थापित हो गया, जहां से लगभग सब हिन्दुओं को निकाल दिया गया। उस समय मुस्लिम लीग का उद्घोष था "हंसकर लिया है पाकिस्तान, लड़ कर लेंगे हिन्दुस्तान"। इसी हेतु भारत पर तीन बार पाकिस्तानी आक्रमण हुए। अब पाकिस्तान को अमेरिका और चीन द्वारा भयंकर शस्त्रास्त्र दिये जा रहे हैं और पाकिस्तान में इस्लामी अणुबम बनाने की योजनाएं चल रही हैं।

हिन्दुस्थान की धरती पर पाकिस्तान स्थापित हो जाने और वहां से लगभग सब हिन्दुओं के निकाल दिये जाने के पश्चात् दोनों देशों में हिन्दू और मुस्लिम जनसंख्या का विनिमय होना स्वाभाविक, उचित और न्यायसंगत था, किन्तु इस देश के सत्ताधारी नेताओं ने इसे अपनी मिली-जुली संस्कृति की विचारधारा की हार मानते हुए स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार पूर्वी पाकिस्तान में रह गये हिंदुओं को इस्लामी अत्याचार के नीचे मरने के लिए छोड़ दिया गया। यदि पश्चिमी पाकिस्तान की तरह पूर्वी पाकिस्तान के साथ भी हिन्दू और मुस्लिम जनसंख्या का शान्तिपूर्वक और राजकीय स्तर पर विनिमय हो गया होता, तो हिन्दुस्तान के इस भाग में भी मुस्लिम साम्प्रदायिकता का प्रश्न समाप्त हो जाता और पूर्वी पंजाब की तरह समस्त भारत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का आर्थिक निर्माण सुगमता से हो सकता। पूर्वी पंजाब से मुसलमान चले गये, लिए यह राज्य आर्थिक दृष्टि से भारत के अन्य सब राज्यों से आगे है।

भारत सरकार की मुस्लिमपोषक नीतियों के फलस्वरूप भारत में मुस्लि जनसंख्या पुनः द्रुतगति से बढ़ने लगी। १९५१-७१ के बीस वर्षों में हिन्दू जनसं ४९ प्रतिशत की दर से बढ़ी, जबकि मुस्लिम जनसंख्या ७४ प्रतिशत की दर से यदि मुसलमान भी ४९ प्रतिशत की दर से बढ़ते, तो १९७१ में मुस्लिम जनसं ९० लाख कम होती अर्थात् ६ करोड़ १४ लाख के स्थान पर ५ करोड़ २४ ल होती। (१९५१ की जनगणना के अनुसार भारत में मुस्लिम जनसंख्या ३ क ५४ लाख अथवा ९.९१ प्रतिशत थी)।

मुस्लिम जनसंख्या में विशेष वृद्धि दो मुख्य कारणों से हुई—(१) लाखों पा स्तानी मुसलमान पूर्वी पाकिस्तान से अवैध घुसपैठ द्वारा असम, बिहार और प बंगाल में बसते जा रहे हैं। यह क्रम गत ३२ वर्षों से चल रहा है और अस पश्चिम बंगाल सरकारों के कई मंत्री इसमें सहयोग देते रहे हैं। १९६१ की गणना के अनुसार सारे देश में मुस्लिम जनसंख्या १९५१-६१ के दशक में २५ प्रतिशत की दर से बढ़ी, किन्तु असम में ३८.५६ प्रतिशत, पश्चिम बंगाल में ३६ प्रतिशत और बिहार में ३२.२९ प्रतिशत की दर से बढ़ी। स्पष्ट है कि इन सीमा राज्यों में मुस्लिम जनसंख्या में अतिरिक्त भारी वृद्धि पूर्वी पाकिस्तान से मुसल की योजनाबद्ध अवैध घुसपैठ का परिणाम थी। भारत सरकार सब कुछ जानते भी मूक दर्शक बनी रही। असम की जनता ने इतने समय के पश्चात् बंगलादे मुसलमानों की इस भारी अवैध घुसपैठ के खतरे को अनुभव किया है और विदे के नाम मतदाता सूचियों से निकालने हेतु जोरदार आन्दोलन आरम्भ कि जिसके सामने सरकार को झुकना पड़ा और वहाँ लोकसभा के चुनाव स्थगित क पड़े।

मुस्लिम जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि का दूसरा बड़ा कारण यह है कि भ में रहने वाले मुसलमान आम तौर पर राजनैतिक लाभ की दृष्टि से सरकार के वार नियोजन उपायों में भाग लेने को राजी नहीं। राजकीय प्रतिवेदनों में अंकित है कि मुसलमान किसी श्रेणी के हों, परिवार नियोजन उपायों में भाग सबसे कम रहा है। हिन्दुओं ने साधारणतया "छोटे परिवार" की आवश्य को स्वीकार कर लिया है, किन्तु इसके विपरीत एक साधारण मुस्लिम परिव बच्चों की संख्या ७, ८, ९, १० और कहीं-कहीं इससे भी अधिक है। बहुत मुसलमान अपने बच्चों को पढ़ाते-लिखाते नहीं। वे उन्हें छोटे-छोटे काम कर मजदूर बना देते हैं और इस प्रकार देश की निर्धनता में वृद्धि करने के दो मुसलमानों को चार तक बहुविवाह करने और घर बैठे सुगम तलाक देने के विशेषाधिकार प्राप्त हैं। अतः एक मुसलमान बहुत-सी स्त्रियों से सन्तानें उत्पन्न सकता है।

अगली जनगणना १९८१ में होगी। तब हिन्दू जनसंख्या का अनुपात अधिक घटेगा। इस प्रकार भारत का हिन्दू बहुसंख्या का रूप समाप्त हो रहा इसके गम्भीरतम परिणाम होने निश्चित हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यदि सरकार के परिवार नियोजन उपाय इसी प्रकार चलते रहे और एक विशेष विधि पारित कर किसी भेदभाव के विना प्रति पुरुष सन्तानों की सीमा निर्धारित नहीं की गई और अधिक सन्तान पैदा करना दण्डनीय नहीं ठहराया गया, तो जिन क्षेत्रों में मुस्लिम जनसंख्या १९७१ में २० प्रतिशत से अधिक थी, वहाँ हिन्दू बहुसंख्या के पीछे से आगे की मुस्लिम जनसंख्या की गति १० प्रतिशत प्रति दशक हो जायेगी और सन् २००१ के पश्चात् यह १३ प्रतिशत प्रति दशक हो जायेगी। इसके फलस्वरूप उत्तर प्रदेश के ११ जिले (मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, विजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत, बहराइच, गोंडा और बस्ती) व असम, विहार और पश्चिम बंगाल के सीमावर्ती ११ जिले (कामरूप, नवगाँव, गोलपाड़ा, पूर्णिया, कूच-बिहार, पश्चिम दीनाजपुर, मालवा, वीरभूमि, नादिया, चौबीस परगना और मुर्शिदाबाद) लगभग ४० वर्षों में मुस्लिम बहुसंख्यक हो जायेंगे। क्या हिन्दू स्थिति की गम्भीरता को समझेंगे और और अपनी भावी सन्तानों के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए कटिबद्ध होंगे? समय की मांग है कि भारतवर्ष में हिन्दू रक्षार्थ शान्तिमय किन्तु प्रभावशाली "हिन्दू-जागृति आन्दोलन" आरम्भ किया जाये और सब हिन्दू इस आन्दोलन का पूर्ण समर्थन करें।

बाइबल और कुरान पर ऋषि दयानन्द सरस्वती के विचार

बाइबल

अब कहाँ तक लिखें इनकी बाइबल में लाखों बातें खण्डनीय हैं। थोड़ी सी बातों को छोड़ शेष सब झूठ भरा है। जैसे झूठ के संग से सत्य भी शुद्ध नहीं रहता वैसा ही बाइबल पुस्तक भी माननीय नहीं हो सकता।

कुरान

यह पुस्तक कैसा है? मुझ से पूछो तो यह किताब न ईश्वर, न विद्वान् की बनाई और न विद्या की हो सकती है। यह तो बहुत थोड़ा सा दोष प्रकट किया। इस लिए कि लोग धोखे में पड़ कर अपना जन्म व्यर्थ न गमावें। जो कुछ इसमें थोड़ा सा सत्य है वह वेदादि विद्या पुस्तकों के अनुकूल होने से जैसे मुझको ग्राह्य है वैसे अन्य भी मजहब के हठ और पक्षपात रहित विद्वानों और बुद्धिमानों को ग्राह्य है। इसके विना जो कुछ इसमें है वह सब अविद्या, भ्रमजाल और मनुष्य की आत्मा को पशुवत् बनाकर शांतिभंग कराके उपद्रव मचा मनुष्यों में विद्रोह फैला परस्पर दुःखोन्नति करने वाला विषय है और पुनरुक्त दोष का तो कुरान जानो भण्डार ही है। परमात्मा सब मनुष्यों पर कृपा करें कि सबके सब प्रीति, परस्पर मेल और एक दूसरे के सुख की उन्नति करने में प्रवृत्त हों।

—सत्यार्थ प्रकाश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—अवनीन्द्र कुमार विद्या

हम समय रहते चेतें

★ ★★ ★ ★★

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति ॥

१९८१ की जन गणना निकट है । दासता का अन्त करें।

आर्य जाति के, विशेषतः भारतीय आर्य जाति के, कुल व वंश में उत्पन्न होने गर्व और अभिमान होना उचित है ।

५०० ई० पूर्व के फारस के सम्राट् डेरियस का एक लेख मिला है। डेरियस ने अपने को आर्य कुल दिवाकर कहा है । साथ ही उसने अपना परि 'भारती आर्य' कहकर दिया है । अतः आर्यजन अगली जनगणना में अपने को हि काफिर, गुलाम, दास, बंटमार न लिखायें । अपदस्थ ईरान के शाह अपने को "आ मेहर" कहते थे । आयतुल्ला खोमेनी को इस पर भारी आपत्ति थी, क्योंकि ई यदि अपने को प्राचीन आर्य जाति का कहने और मानने लगे तो १४०० साल पु इस्लाम कहां रहेगा । इसी समय आज के मुसलमानों ने पाकिस्तान मांगा नपुंसक ब्रिटिश एजेंट कांग्रेस ने सत्ता पाने के लोभ में आत्मसमर्पण कर दिया। कारण है कि शिक्षा का माध्यम १९८० में भी अंग्रेजी बनी हुई है । उर्दू की वा शिक्षा दी जा रही है । संस्कृत का प्रचार नहीं किया जा रहा है । जर्मनी के ने जब संस्कृत को १५ मिनट किये तब शरमो-शरमी भारत के रेडियो ने संस्कृत ५ मिनट दिये । किन्तु वेद पाठ को नहीं ।

वेद है जिसमें भारत राष्ट्र के प्राण बसते हैं ।"नमस्ते" का क्या किसी ने प्र किया ? केवल ऋषि ने इसका व्यवहार किया । बस, यह मास्को तक फैल गया। निकिता ख्रुश्चेव ने राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् को विमान से बाहर आता देखकर से कहा 'गुरुदेव, नमस्ते' । यह नमस्ते वेद का शब्द है । वेद आर्य जाति की अन राष्ट्रीय सम्पत्ति है । भारत ने इसको जब विस्मृत कर दिया, तब वह वि साम्राज्य का स्वामी नहीं रहा । फलतः आज यह अविस्मरणीय ऋषि वाणी ह हृदय में स्फुरण तक उत्पन्न नहीं करती ।

शुंगवंश के शासन से लेकर ऋषि दयानन्द तक किसी सुधारक, मत प्र एवं सम्प्रदाय चलाने वाले ने सम्पूर्ण भारत का दर्शन नहीं किया । बुद्ध से व्य पूजा शुरू हुई । यद्यपि भगवान् बुद्ध ने अजीवक घोसाल से यही कहा था कि किसी धर्म व नये समुदाय को नहीं चला रहे—केवल "आर्यपथ" का परिष्कार रहे हैं । परन्तु उनके शिष्यों ने कहा—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बुद्धं शरणं गच्छामि,
संघं शरणं गच्छामि।
धम्मं शरणं गच्छामि ॥

इसके बाद जितने भी नये मत सम्प्रदाय उत्पन्न हुए वे सब व्यक्तिपूजक थे। राष्ट्रवाद के परम शत्रु हैं। आर्य जाति के अस्तित्व को चुनौती है। क्योंकि एकमात्र भारती आर्य जाति कहती है और मानती है—

माता पृथ्वी पुत्रोहं पृथिव्याः। (अथर्व १२।१।१२)

भारती आर्य जाति का विश्वास है कि विश्व नियन्ता ने उसको विश्व की वसुधा का शासन करने के लिए उत्पन्न किया है।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तो,
अरण्येने पृथ्वी स्योनमस्तु ।
वयुं कृष्णां रोहिणी विश्वरूपां,
श्रुवा भूमिं पृथ्वीमिन्दु गुप्ताम्।
अजीनो हसो आत्यो
अध्यष्ठां पृथ्वीमहम् ॥

इसी कारण हम कामना करते हैं—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥

आज क्या इसका कोई महत्त्व है? यह केवल नपुंसक का ब्रह्मचारी होने का दावा करने के समान है। इसका महत्त्व तब था जब ऋषि के शब्दों में पांच हजार वर्ष पूर्व सम्पूर्ण ज्ञात संसार पर आर्य जाति का सार्वभौम चक्रवर्त्ती राज्य था। अन्य राजा माण्डलिक थे।

ऋषि ने समस्त ज्ञात संसार की बात कही है। प्रश्न पूछा जा सकता कि है ज्ञात संसार की सीमा क्या थी? इसका उत्तर यालू द्वीप-दक्षिण अटलांटिक महासागर आज भी जीवित बची भारतीय नारी दे रही है। 'हिन्दू' नाम का यह अभिशाप कि हम उस नारी को अर्घ्य तक देने नहीं पहुंचे। पेरू की राजधानी लीमा से लगभग १०० मील दूर एण्डेज पर्वतमाला के शिखर पर बना सूर्य मन्दिर ऋषि की बात की यथार्थता का प्रमाण दे रहा है। अमेरिका १९८० की जनगणना में अमेरिकी एण्डियनों की पृथक् गणना कर रहा है। ये भारत वंशी यूरोपियन आहार में ब्रैड, केक और यूरोपियन खाद्य नहीं खाते। क्योंकि विजय जैसा स्पेनिशों का यह भोजन है। ये खाते हैं दाल-रोटी, दाल भात जैसे मसूर की दाल और रोटी। इसी वास्ते हम स्मरण करते हैं—

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः, सनातनोप्यसि पिंगली च।
सप्त स्वराः सप्त रसातलानि, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

भारत देश व राष्ट्र का मंगल तभी होगा, जब सात महादेशों और सात पाताल लोकों पर भारत का शासन होगा। तभी विश्व शान्ति होगी। दुनिया से 'माया' का अन्त होगा। इस देश का 'भारत' नाम तब सार्थक होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस देश का प्रायद्वीप का नाम भारत है, क्यों कि यह विश्व भर का भरण-पोषण करता है । हमारा आदि पूर्वज यह उत्तरदायित्व हमें विरासत में सौंप गया है । यथा—

य इमे रोदसी उभे, अहमिन्दुमतुस्तवम् ।
विश्वमित्रस्य रक्षति, ब्रह्मेदं भारतं जनम् ॥

'हिन्दू' नाम दासता का सूचक है । ब्राह्मण, बनिया, उच्च वर्ग ने इस्लामी दासता को दासता ही नहीं माना । ६वीं सदी में मुल्तान का सूर्य मन्दिर मीर कासिम ने गिराया । क्या कभी यह फिर खड़ा हुआ ? ढाई दिन का झोपड़ा क्या यही कहानी नहीं कह रहा है ? जेरूसलम का यहूदी मन्दिर तीन बार गिराया गया और तीन बार खड़ा किया गया । नाना प्रकार के अत्याचार सहे, उत्पीड़न सहा, परन्तु किंग सोलोमन और डेविड को सदा याद रखा । फलतः आज इस्राईल राज्य वहीं स्थापित है जहां से खलीफा ने उनको भगाया था । इस के विपरीत हम ऋषि की इस बात को भूल गये—

इदं नमः ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पथिकृद्भ्यः ॥

भारत राष्ट्र का प्रारम्भ 'अग्निमीले' से नहीं होता । ऋग्वेद का ऋषि अपने से पहले की कम से कम चार पीढ़ियों का उल्लेख कर रहा है । अभिमान पतन का कारण है । माया जन का मिला एक लेख भी कहता है कि अभिमान के कारण माया जन का तीन बार नाश हुआ । परन्तु अभिमान शून्य का भी नाश होता है । प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार नोबेल पुरस्कार प्राप्त निर्वासित सोल्जेनित्सीन ने कहा है—जो देश व राष्ट्र अपने पूर्वजों को भूल जाता है वह अपना इतिहास खो देता है । जो अपना इतिहास खो देता है वह नष्ट हो जाता है । सम्भूति और असम्भूति, विद्या और अविद्या दोनों की उपासना करने वाला ही जीता रहता है । एक का उपासक नष्ट हो जाता है । राम त्रेता युग में जन्मे । यह काल ग्यारह लाख वर्ष पहले ठहरता है । परन्तु सृष्टि संवत् तो १९७ करोड़ वर्ष है । सृष्टि संवत् का व्यवहार आज कितने लोग जीवन में कितनी बार करते हैं ? "हिन्दू" नाम ने दासता की मनोवृत्ति पैदा की है । भाग्यवादी बनाया है । भारत मां की स्तुति में —भारत की महिमा में विष्णु पुराण के कवि ने लगभग २०० ई० पहले गाया था—

गायन्ति देवाः किल गीतिकानि, धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे ।
स्वर्गापवर्गस्य च हेतुभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥

क्या इसके अतिरिक्त कोई और पद १८ पुराणों में है ? परन्तु भारत राष्ट्र के निर्माताओं ने तो कहा है—

ये ग्रामा यदरण्यं, या सभा अधिभूम्याम् ।
ये संग्रामा समितयः, तेषु चारु वदेम ते ॥

इसका पालन न करने के कारण ही भारत आज भी न केवल विखण्डित है बल्कि पराजित और एंग्लो-मुस्लिम-रूसी युति का दास भी है । श्रीमती इन्दिरा गांधी का १४ जनवरी १९८० को पुनः प्रधानमंत्री बनना क्या इसका प्रमाण नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हाई कोर्ट में झूठ बोलने वाली प्रधान मंत्री भी दुबारा चुनी गई, जब कि हमारी मान्यता है सत्येनोत्तभिता भूमिः। भूमि सत्य पर टिकी हुई है।

यह अदम्य और अक्षय शक्ति भारत माता—भारत भूमि के प्रति निष्ठा एवं श्रद्धा से प्राप्त होती है। क्या हम महान् संन्यासी स्वामी विवेकानन्द की पुकार सुनेंगे ? इस महान् संन्यासी ने आह्वान किया था—

हृदय की पूरी शक्ति से उच्च स्वर से कहो कि हम भारत सन्तान हैं—भारत सन्तान हैं।

सब भारतीय हमारे भाई हैं। सब भारतीय हमारे बन्धु हैं।

हमारी सब समस्याओं का हल इसमें निहित है। अतः दासता वाचक 'हिन्दू' नाम का त्याग करें। विजय पथ को पकड़ें। भूलें नहीं पराजय पाप है। पराजित ईश्वर की स्तुति करने का अधिकारी नहीं, क्यों कि अपवित्र और मलिन मन से परमात्मा की आराधना-उपासना नहीं हो सकती। कहा है—

मा पापासो मनामहे।

ब्राह्मण ग्रन्थ इसका समर्थन करते हैं, यथा

यस्माद् ब्राह्मणेन न आयज्ञिः।
न पापो पुरुषो याज्यः ॥

धर्म में युद्ध का महत्त्व

धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयो ऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते।
यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥

(अ० २ श्रीमद्भगद्गीता)

धर्मयुद्ध से बढ़कर क्षत्रिय के लिये दूसरा कोई कल्याणकारक कर्त्तव्य नहीं।

हे पार्थ ! युद्ध क्या है ? इच्छानुसार खुला हुआ स्वर्ग का द्वार हैं और बड़े भाग्यशाली क्षत्रियों को युद्धों की प्राप्ति होती है। यदि तू युद्ध में मारा गया तो स्वर्ग को प्राप्त करेगा और यदि जीत गया तो पृथ्वी का राज्य करेगा अतः हे कुन्ती पुत्र ! उठ और यूद्ध का निश्चय कर।

किन्तु सुख दुःख, लाभ अलाभ और जय पराजय की चिन्ता न करते हुए तू युद्ध को कर्तव्य समझते हुए युद्ध कर, तुझे कोई पाप नही लगेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आप को ज्ञात है कि

दिल्ली का निर्माण श्रीकृष्ण ने किया था ?

—श्रीचक्र

आप कदाचित् नहीं जानते होंगे कि भारत की राजधानी दिल्ली को आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व श्रीकृष्ण ने बसाया था। उन राष्ट्रपुरुष श्रीकृष्ण ने, जिनकी मुरली माधुर्य को जीवन देती थी तो जिनकी वाणी गीता के रूप में आज भी विश्व को ज्ञान की ज्योति से जाग्रत कर रही है, जिनकी महिमामय कीर्त्ति अकल्पनीय और जिनके शौर्य की समता महाभारत युद्ध का एक भी योद्धा नहीं कर सकता।

लेकिन दिल्ली का निर्माण श्रीकृष्ण ने अपने लिए नहीं किया था, उसे निर्मित किया था उन्होंने धर्मराज युधिष्ठिर के लिए। उस समय सर्वमान्य कर्माचरण आग्रही शासक की वह राजधानी बने, इसीलिए उस नगर की स्थापना की गयी थी। यों उस समय इसका नाम न दिल्ली था और न देहली, नाम था इन्द्रप्रस्थ। और इन्द्रप्रस्थ इसका नाम कैसे पड़ा, इसके भी ऐतिहासिक कारण हैं।

बात तब की है जब पांडवों को दुर्योधन का कूट प्रयत्न लाक्षागृह में जला नहीं सका था और वे माता कुंती के साथ बच निकले थे। वन-वन भटकते वे पांचाल (पंजाब) पहुंचे थे महाराजा द्रुपद की राजधानी में, और वहां सव्यसाची अर्जुन ने राजाओं की भरी सभा में मत्स्यभेद करके द्रुपद की राजकन्या द्रौपदी को प्राप्त किया था।

श्रीकृष्ण वहीं पर पांडवों से मिले थे। पूरे देश में यह समाचार थोड़े ही समय में फैल गया था कि पांडु के धर्मात्मा पुत्र जीवित हैं, और उन्होंने द्रुपद की पुत्री से विवाह किया है।

कौरवों के अन्धे पिता धृतराष्ट्र को विदुर ने समझाया : प्रजा पाँडवों को प्राण के समान प्यार करती है। वे लाक्षागृह में आपके पुत्र दुर्योधन द्वारा जलाये गये, यह बात किसी से छिपी नहीं है। लोग बहुत दुःखी थे। दुर्योधन से अतीव रुष्ट थे, किन्तु निरुपाय थे। अब पता लग गया कि वे अग्निदाह से बच निकले हैं। उन्हें अब द्रुपद की पूरी सहायता प्राप्त है, और श्रीकृष्ण उनके नित्य सहायक हैं। ऐसी अवस्था में अच्छा यही होगा कि आप उन्हें स्नेहपूर्वक बुला लें और युधिष्ठिर को उनका राज्य सौंप दें। ऐसा करने से कौरवों की अपकृति मिट जायेगी, ऐसा न करने से प्रजा विद्रोह कर देगी। पांडव द्रुपद की सेना लेकर आयें अथवा श्रीकृष्ण उन्हें ले आयें, बात एक ही है। तब आपके पुत्र को बैठने का ठिकाना भी नहीं लगेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदुर की बात धृतराष्ट्र को ठीक लगी। उन्होंने विदुर को ही पांडवों को लिवा लाने भेजा, और द्रौपदी तथा माता कुंती के साथ पांचों भाई हस्तिनापुर आ गये। युधिष्ठिर को राज्य का संचालन तो प्राप्त हुआ, किन्तु धृतराष्ट्र ने उन्हें सलाह देते हुए कहा : "बेटा, दुर्योधन तुम लोगों से चिढ़ता है। तुम यहाँ रहोगे, तो परस्पर का द्वेष बढ़ता ही जायेगा। किसी भी समय कोई दुर्घटना हो सकती है। इसीलिए मैं चाहता हूं कि तुम भाइयों के साथ किसी दूसरे स्थान में निवास करो।"

एक गांव मात्र

युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र का यह परामर्श स्वीकार कर लिया। वे भाइयों तथा सभी स्वजन परिजनों के साथ हस्तिनापुर छोड़कर यमुना किनारे आ गये। उस समय वह स्थान एक ग्राम मात्र था जहां युधिष्ठिर ने निवास किया। पांडव प्रकट हो गये हैं, वे द्रुपद की राजधानी से हस्तिनापुर पहुंच गये हैं और वहां से भी धृतराष्ट्र की सम्मति से पृथक् होकर यमुना तट पर जा बसे हैं, यह समाचार द्वारिका भी पहुंचा। श्रीकृष्ण पांडवों की प्रत्येक गतिविधि को जानने के लिए उत्सुक रहते थे, और उन्होंने तत्-सम्बन्धित सारे समाचार प्राप्त करने की सम्यक् व्यवस्था भी कर रखी थी। यह खबर मिलते ही वे पांडवों से मिलने के लिए चल पड़े।

श्रीकृष्ण आये तो पांडवों को जैसे जीवन का बड़ा वरदान मिल गया हो। माता कुंती का वात्सल्य, पांडुपुत्रों की श्रद्धासमन्वित आत्मीयता, इन सबकी श्रीकृष्ण को प्रचुर मात्रा में प्राप्ति हुई, परन्तु वह प्रसन्न नहीं हो पाये। स्वागत-सत्कार के बाद पहले ही दिन उन्होंने अर्जुन से कहा था—"यह सामान्य भवन, यह तुच्छ-सा ग्राम क्या धर्मराज की गरिमा के उपयुक्त है?"

अर्जुन ने अश्रुपूरित नेत्रों से जवाब दिया था—"धर्मराज तो वन में वृक्ष के नीचे भी संतुष्ट थे, और पूरे वनवास हम लोग प्रायः झोंपड़ियों में ही रहे हैं। वासुदेव का स्वागत करने में भी हमें कोई संकोच नहीं, क्योंकि हम जानते हैं कि वे राज-प्रसादों की अपेक्षा कुटीरों के अधिक आत्मीय हैं।

देव शिल्पी का चमत्कार

तब कृष्ण बोले थे—"संकोच तुम्हें नहीं, मुझे हो रहा है, और इसीलिए तत्-सम्बन्धित व्यवस्था भी मैं ही करूंगा। और उसी रात्रि के प्रथम प्रहर में देवशिल्पी विश्वकर्मा श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित हुए। श्रीकृष्ण ने उनको स्मरण किया था, इससे महान् सम्मान उनकी कला का और क्या हो सकता था भला!

"यहाँ एक नगर का निर्माण करना है आपको, ऐसा नगर जो द्वारिका से भी ज्यादा रमणीक और सुन्दर हो, जो विश्व सम्राट् की राजधानी बनने के उपयुक्त माना जाये और जिसके राजसदन की समता पृथ्वी और स्वर्ग में भी न हो सके। "श्रीकृष्ण ने विश्वकर्मा को आदेश दिया, और देवशिल्पी ने उसे अपना अहोभाग्य माना।

तभी, देवराज इन्द्र ने, राजसदन की सज्जा के लिए विशिष्ट भवनों को सुन्दर-तम बनाने के लिए, विश्वकर्मा को प्रस्थ (अंजुलि) भर कर रत्न दिये थे। इसीलिए जब उस नगर का निर्माण हो गया, तो उसका नाम पड़ा—इन्द्रप्रस्थ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेकिन नगर निर्माण के उपरान्त भी उसके दो अभाव श्रीकृष्ण को खटकते थे। एक तो अब तक राजसत्ता नहीं बन पायी थी, और दूसरे नगर के पार्श्व में हिंसक प्राणियों से परिपूर्ण घोर वन था। कुछ कारणों से देवराज इन्द्र स्वयं उस वन की रक्षा करते थे, जिससे वह आस-पास के नागरिकों के लिए सचमुच एक समस्या का रूप धारण कर गया था।

खाण्डव वन का दाह

यह देख श्रीकृष्ण अर्जुन के साथ एक रथ पर बैठे, और उन्होंने उस खांडव वन को अग्नि के अर्पण कर दिया। वन धू-धू करके जलता रहा, किन्तु इन्द्र असमर्थ हो गये उस अग्नि को बुझाने में। अर्जुन के बाणों तथा श्रीकृष्ण के चक्र ने उस भयंकर वन से किसी भी प्राणी को भागने नहीं दिया। केवल दानवेन्द्र मय बच सके, वह भी इसलिए कि उन्होंने प्राणों की भिक्षा के लिए अर्जुन की शरण ली थी। मय अमर हैं, लेकिन उन्होंने उस दिन देख लिया कि श्रीकृष्ण का चक्र उनके अमरत्व को भी समाप्त कर देने में पूर्णतः सक्षम है। इसकी ज्वाला का सृष्टि में कोई प्रतिकार नहीं।

"मैं इस प्राणदान के प्रतिकार स्वरूप आपकी कुछ सेवा करना चाहता हूं।"-मय ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक अपने शरणदाता अर्जुन से प्रार्थना की थी।

"श्रीकृष्ण की सेवा ही हम सबकी सेवा है।"—अर्जुन ने यह कहते हुए मय को श्रीकृष्ण के समीप भेज दिया था।

मय अपने समय का सबसे बड़ा शिल्पी था, श्रीकृष्ण इस तथ्य को जानते थे। उसके आते ही उन्होंने उससे कहा—दानवेन्द्र, आपके शिल्प नैपुण्य की समता विश्वकर्मा भी नहीं कर पाते। मेरी इच्छा है कि आप खांडव वन की इसी भूमि पर धर्मराज युधिष्ठिर के लिए एक राजसभा निर्मित कर दें, ऐसी राजसभा जिसको समता कहीं न पायी जा सके।

और मय ने अपनी समस्ता कला साकार कर दी उस राजसभा के रूप में। और नव नगर की रचना से द्वारिकाधीश को संतुष्टि मिल पायी।

युधिष्ठिर की उस राजधानी, इन्द्रप्रस्थ में, देव और दानव शिल्प, दोनों का चरमोत्कर्ष एक साथ व्यक्त हुआ, और श्रीकृष्ण ने स्वयं ही वहाँ पर धर्मराज को प्रतिष्ठित किया। राजसूय यज्ञ करके वही युधिष्ठिर चक्रवर्ती सम्राट् के रूप में अभिहित किये गये।

वहि भूमि आज स्वतन्त्र भारत की राजधानी है, लेकिन उसका आदि निर्माण श्रीकृष्ण के हाथों हुआ था, इस तथ्य से कितने लोग परिचित हैं?

इस्लामी साम्राज्यवाद की चुनौती ४०) सैकड़ा मंगाएं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आंकड़े बोलते हैं

भारत में जनसंख्या निरोध

हिन्दू बहुसंख्या का योजनाबद्ध ह्रास

भारत सरकार की जनसंख्या नियन्त्रण नीतियां हिन्दुओं का विनाश कर रही हैं। हमारे राष्ट्रीय नेताओं द्वारा मुस्लिम तुष्टकीरण के कारण ठीक निर्णय नहीं लिए जाते। अतः भारत सरकार के परिवार नियोजन कार्यक्रम इस प्राचीन हिन्दू देश में बहुसंख्या का नियोजित ढंग से ह्रास कर रहे हैं। परिवार नियोजन कार्यक्रम तभी सफल हो सकते हैं, जब भारत सरकार एक केन्द्रीय विधि पारित कर जाति, विश्वास और सम्प्रदाय की चिन्ता किये बिना सन्तानोत्पत्ति योग्य प्रति पुरुष के लिए अधिकतम सन्तानों की संख्या निश्चित करे। निश्चित से अधिक सन्तानों को जन्म देना दण्डनीय अपराध घोषित किया जाये। भारत सरकार को जनसंख्या नियन्त्रण हेतु इस मार्ग को अपनाना होगा। संविधान की धारा ३२ में संशोधन करके ऐसा किया जाना चाहिये।

देश में अधिक जन्म दर के लिए साधारणतया मुस्लिम समुदाय उत्तरदायी है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार परिवार नियोजन उपायों में मुसलमानों का भाग सबसे न्यून रहा है। ऐसा राजनैतिक लाभ प्राप्ति की दृष्टि से ही किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त मुसलमान पुरुषों को एक साथ चार तक निकाह (विवाह) करने, सरलता से तलाक देने के कानूनी अधिकार प्राप्त हैं अतः एक मुसलमान पुरुष बहुत-सी स्त्रियों से बड़ी संख्या में सन्तानें उत्पन्न कर सकता है। इस प्रकार इस देश का हिन्दू बहुसंख्यक रूप परिवर्तित हो रहा है। इससे एक गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो रही है।

परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश के निम्नलिखित ११ जिले और बंगलादेश की सीमा पर स्थिति असम, बिहार और पश्चिम बंगाल के ग्यारह जिले लगभग ४० वर्षों के भीतर पूरे के पूरे मुस्लिम बहुसंख्यक हो जायेंगे, यह निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है। इन क्षेत्रों में १९७१ की जनगणना के अनुसार मुस्लिम जनसंख्या का अनुपात २० प्रतिशत से अधिक था और इन क्षेत्रों में परिवार नियोजन उपायों में मुसलमानों का भाग हिन्दुओं के भाग का १/४ रहा। हिसाब से उनकी हिन्दू बहुसंख्या के पीछे से आगे बढ़ने की दर १९७१ से २००१ तक १० प्रतिशत और तदुपरान्त १३ प्रतिशत निकली है।

नाम जिला	हिन्दू प्रतिशत	मुस्लिम प्रतिशत	हिन्दुओं और मुसलमानों के अनुपातों का अन्तर	मुस्लिम जनसंख्या कितने वर्षों में आगे निकल जायेगी	सन्
उत्तर प्रदेश					
सहारनपुर	६७.५६	३१.११	३६.४५	३५.००	२००६
मुजफ्फरनगर	७०.१४	२८.८३	४१.३१	३८.७०	२०१०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरठ	७५.७०	२२.१४	५३.५६	४८.१२	२०१९
बिजनौर	६१.९६	३६.६६	२५.३०	२५.३०	१९९६
मुरादाबाद	६१.२३	३८.१५	२३.०८	२३.०८	१९९४
रामपुर	४९.९८	४५.७६	४.२२	१९७६ में ही मुस्लिम बहुमत	
बरेली	६९.७४	२९.२०	४०.५४	३८.१०	२००९
पीलीभीत	७४.०३	२१.६२	५२.४१	४७.२३	२०१८
बहराइच	७२.८१	२६.९९	४५.८२	४२.१६	२०१३
गोंडा	७७.३५	२२.५७	५४.७८	४९.०६	२०२०
बस्ती	७९.६७	२०.३०	५९.३७	५२.०६	२०२३
असम					
कामरूप	६९.९६	२८.९३	४१.०३	३८.५०	२००९
नवगांव	५९.७०	३९.३९	२०.३१	२०.३१	१९९१
गोलपारा	५३.९२	४२.२५	११.६७	११.६७	१९८२
बिहार					
पूर्णिया	५९.९२	३९.६२	२०.३०	२०.३०	१९९१
पश्चिम बंगाल					
कूच-बिहार	७८.५६	२१.२५	५७.३१	५१.००	२०२२
पश्चिम दिनाजपुर	६३.०७	३५.८९	२७.१८	२७.१८	१९९८
मालदा	५६.६३	४६.१३	१६.५०	१३.५०	१९८४
बीरभूम	७०.५६	२९.१९	४१.३७	३८.७५	२०१०
नदिया	७५.९१	२३.३४	५२.५७	४७.३५	२०१८
चौबीस परगना	७५.७०	२३.६८	५२.०२	४७.००	२०१८
मुर्शिदाबाद	४३.४६	५६.३४	मुस्लिम बहुमत अभी हो गया		

धर्म के आधार

गीता का दुःखनाशक योग

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ।।

युक्त आहार, विहार, युक्त चेष्टा एवं कर्म और युक्त सोने एवं जागने से योग दुःखनाशक होता है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी दयानद हिंदुस्तान को गौरवशाली बनाना चाहते थे

—भाई परमानन्द

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रबल आकांक्षा थी कि उनका देश गौरवशाली राष्ट्र बने। इसी उद्देश्य से उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज के नाम पर एक नया सम्प्रदाय चलाने का उनका इरादा नहीं था। बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना के बाद महर्षि पूना गये और वहां दो महीने ठहर कर उन्होंने पन्द्रह व्याख्यान दिये। उनके प्रवचनों के विषय थे—ईश्वर की सत्ता और महत्ता, धर्म, अधर्म, वेद, पुनर्जन्म, पंचमहायज्ञ और रीति रिवाज इत्यादि। इन धार्मिक विषयों के पश्चात् उन्होंने राष्ट्रीय इतिहास पर आठ प्रवचन दिये। उनके मार्मिक प्रवचनों प्रकट हो जाता है कि उनमें राष्ट्र-प्रेम कितना कूट-कूटकर भरा था और वह देश की तत्कालीन दुरवस्था से कितने दुःखित थे। उन्होंने आर्य समाज के द्वारा आर्य धर्म अथवा राष्ट्र धर्म की व्याख्या प्रस्तुत की। कोई आर्य समाज जो राष्ट्र पर गर्व तथा आत्म सम्मान पर आधारित न हो वह स्वामी दयानन्द की आर्य समाज नहीं हो सकती। वह इतिहास के अत्यन्त विद्वान् थे और वैदिक काल से ही इसकी प्रस्थापना करते थे।

सृष्टि

संसार की सृष्टि कैसे हुई? आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। ईश्वर की शक्ति का नाम प्रकृति है, जो सृष्टि निर्माण में सहयोगी है। यह ईश्वर की तरह अनादि और अनन्त है।

ईश्वर की अपरिसीम सामर्थ्य की अभिव्यक्ति का नाम ही सृष्टि है।

असंख्य परमाणुओं के संयोग से पंचमहाभूतोंका विन्यास इसमें हुआ। इनसे सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि की उत्पत्ति हुई। मानव-जाति की उत्पत्ति हुई। ऐसा समझा जाता है कि पहला मानव हिमालय के शिखर पर उत्पन्न हुआ था।

भाषा

सृष्टि के आदिकाल में आर्यों की एक ही भाषा थी। कालगणना प्रणाली एक ही थी। जलवायु के वैषम्य से और परिस्थितियों के उतार-चढ़ाव के कारण उनमें परिवर्त्तन आया और एक मातृभाषा के गर्भ से अनेकानेक भाषाएं फूट निकलीं।

वेद

आदिकालीन ज्ञान-विज्ञान के भंडार का नाम वेद है। इसके प्रथम वाचक ब्रह्मा हुए, जिन्होंने इसका अध्ययन और अध्यापन किया। ब्रह्मा ने यह विद्या अपने पुत्र विराट् को दी—कालक्रम से स्वायंभव मनु को प्राप्त हुई। आचार्य मनु ने अपनी मनुस्मृति में इसका विवरण दिया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्ण-विभाजन

आदिकालीन समाज में केवल एक ही वर्ग था। ऋग्वेद काल में इसके दो भाग हो गए—ब्राह्मण (विद्वान्), क्षत्रिय (शूरवीर), वैश्य (व्यापारी) और शूद्र (सेवक)। ब्राह्मण अध्ययन-अध्यापन एवं यज्ञ-योगादि पौरोहित्य कर्म करके जीवन यापन करता था। क्षत्रियों का धर्म युद्ध कर्म था। वह राज्य की रक्षा करता एवं राजा का वेतन-भोगी होता था। कृषि कर्म और व्यापार वैश्यों के लिए और सेवा कर्म शूद्रों के लिए विहित थे।

प्रशासन

वर्ण विभाजन की यह प्रक्रिया मनु के काल में पूरी हुई। मनु के दस पुत्र थे। भरीचि प्रथम क्षत्रिय राजा था। कश्मीर से नेपाल तक देवताओं का शासन था। आजकल की तरह पहले यहाँ बर्फ नहीं जमा करती थी। यहाँ की राज-परम्परा में छह राजा हुए।

विष्णु का राजा वैकुण्ठ कहलाता था। तहादेव ने कैलाश की स्थापना की थी। इन्हीं दिनों विश्वकर्मा नामक एक यान्त्रिक ने विमान की रचना की थी। आर्य राजा आवागमन के लिए विमानों का प्रयोग किया करते थे।

आर्यावर्त्त

राजा इक्ष्वाकु का राजा आर्यावर्त्त कहलाता था। आर्यावर्त्त के पश्चिम में सरस्वती अथवा सिन्धु नदी, पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी, उत्तर में हिमालय पर्वत तथा दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत विद्यमान थे।। इस देश की जलवायु उत्तम थी। यहां की भूमि उपजाऊ थी। यहां छह ऋतुएं क्रमशः आती जाती रहती थीं। यहां के निवासी 'देव' कहलाते थे। गंगा नदी को देव नदी कहा जाने लगा। इसका पूर्व नाम पद्मा था। राजा भगीरथ ने इसमें से एक नहर निकाली थी। इसलिये इसका नाम भागीरथ पड़ा।

राजा इक्ष्वाकु के समय में ही स्याही से लिखने की प्रणाली का आविष्कार हुआ। इस काल में जो लिपि प्रचलित थी—उसे 'देव नागरी' कहते थे। पुस्तक-लेखन का प्रारम्भ इसी युग में हुआ।

वेदों के आदेश

देश की प्रजा वेदों के आदेशों का पालन करती थी। भृगुसंहिता के अनुसार सौ घरों का एक ग्राम, एक हजार घरों का महाग्राम, दस हजार घरों का नगर और इससे अधिक घरों का पुर हुआ करता था। राजा अपने प्रशासनाधिकारियों द्वारा सब पर शासन करता था।

प्रशासनाधिकारी

प्रशासनाधिकारी चार श्रेणियों में विभक्त होते थे—राज-अधिकारी (गृह विभाग), सेना अधिकारी (रक्षा विभाग), न्याय अधिकारी (विधि विभाग) और कोष अधिकारी (वित्त विभाग)। कई सभा-समितियों का भी प्रचलन था, जैसे राज सभा, धर्म सभा आदि। अपराध सिद्ध होने पर राजा भी दण्ड का भागी होता था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सैनिक व्यवस्था

सेना में अनुशासन का महत्व था। सैनिक आज्ञाकारी होते थे। उन्हें वैज्ञानिक प्रणाली, से दीक्षा मिली होती थी। चक्रव्यूह, मकर व्यूह इत्यादि सैनिक संरचनाओं का विधान था। असि (तलवार), भुशुण्डी (बन्दूक), शतघ्नी (तोप) आदि शस्त्रास्त्रों का प्रयोग होता था।

सैन्य संचालन

यह अत्यधिक विकसित और वैज्ञानिक रूप में प्रचलित था। सैनिकों को सभी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त थीं। मरणोपरान्त उनके परिवारों का व्यय राज-शासन वहन करता था।

राजा और प्रजा

राजा इक्ष्वाकु ने अनेक वर्षों तक सफलता पूर्वक राज्य किया। इसी वंश में राजा सागर भी एक प्रसिद्ध राजा हुए। वह बड़े उदार व धर्मनिष्ठ थे। उनका पुत्र हुआ असमंजस, जो अयोग्य तथा दुष्ट प्रकृति का था। एक बार उसने एक निर्धन बालक को पानी में फेंक दिया। उसे बन्दी बनाकर उसे घनघोर जंगल में छोड़ दिया गया। राजा नल भी एक प्रसिद्ध राजा हुए। दमयन्ती के साथ उनकी प्रेम कहानी को सभी जानते हैं। भारत देश रघुवंशी राजा भरत के नाम पर पड़ा है, जो बाल्य-काल से ही शूरवीर थे

देवराज्य

सर्वत्र देवताओं का राज्य था। ये लोग असुरों से युद्ध करते थे। देवताओं के ये राजा प्रायः विमान में इधर से उधर जाया करते थे। इन दिनों स्वयंवर की प्रथा प्रचलित थी। देश-विदेश के राजा लोग इन स्वयंवरों में भाग लेते थे और अपने शौर्य का प्रदर्शन करते थे।

शिक्षा

वैदिक युग में गुरुकुलों का प्रचलन था। यहां वेद वेदांगों एवं दर्शन शास्त्रों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा प्राप्त करना विधि के अनुसार अनिवार्य था। इसका उल्लंघन करने वालों को दण्ड दिया जाता था। शिक्षा जीवनोपयोगी होती थी। तत्कालीन विद्वानों की कृतियों का आज तक समादर किया जाता है।

समाज में नारी का स्थान

वैदिक युग में नर-नारी को समान अधिकार प्राप्त थे। गार्गी, मैत्रेयी आदि विदुषियां पुरुष विद्वानों से शास्त्रों में टक्कर लेती थीं। यह कहना पूर्णतया मिथ्या है कि हिन्दू परम्परा में नारी को विद्या का अधिकार नहीं था।

विवाह

युवकों के लिए कम से कम २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन करने के बाद ही विवाह का विधान था। बाल विवाह का कहीं प्रसंग ही नहीं था। इस प्रथा के कारण आज हिन्दुओं में विधवाओं की भरमार है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—अशोक कुमार शर्मा

देवनागरी : विशुद्ध भाषा-विज्ञान

यह देवनागरी नहीं देवनगरी है अर्थात् यह शरीर रूपी देवनगरी में ऋषियों के द्वारा समाधिस्थ होकर विभिन्न अक्षरों की ध्वनियों को सुनाया गया जो कि अष्ट-चक्रों के कमल दलों से पृथक्-पृथक् सुनाई दीं। अक्षरों के साथ अं की ध्वनि मिश्रित थी। बाद में 'अं' की ध्वनि को अलग कर अक्षरों को उचित ध्वनि दी गई। क्योंकि अं जल की ध्वनि है। (देखें तालिका)

ऋषियों ने बच्चे के जमीन पर आते ही उसके द्वारा की गई ध्वनि अ—म—मा से ही समझ गये थे कि वर्ण माला में अक्षर अ और म के मध्य ही होंगे।

ए, ऐ, ओ, औ क्रमशः अ + इ = ए + ए = ऐ अ + उ = ओ + ओ = औ बनते हैं।

इ और उ को छोड़कर अ स्वर सब स्वरों व व्यजंनों में पाया जाता है।

जल चन्द्रमा की शक्ति को अपने में समा लेता है इसलिए कोई अक्षर की ध्वनि न आ सकी। पृथ्वी पर तो क्या ही ध्वनि प्रकट होगी। (देखें तालिका)

आकाश, वायु, अग्नि, पृथ्वी के मूल अक्षर क्रमशः क, छ, ड, ध, म है।

अः, ष, ङ, ञ, ण खाली हैं अर्थात् इनसे शुरू होने वाला कोई शब्द नही है, कारण यह है कि पृथ्वी पर आकर सूर्य, सूर्य-चन्द्रमा, आकाश, वायु और अग्नि की शक्ति को पृथ्वी अपने अन्दर सोख लेती है। ये अक्षर देवता/तत्वों की अपनी शक्ति के ही कारण हैं। क्ष, त्र, ज्ञ क्रमशः क् + श, र + र् ज्, + ञ हैं।

ऊपर दी हुई तालिका के माध्यम से किसी भी शब्द एवं व्यक्ति के नाम को जानकर उसके गुण, कर्म और स्वभाव के विषय में जाना जा सकता है (शब्द चाहे किसी भी भाषा का हो) इसी प्रकार किसी वस्तु के गुण, कर्म स्वभाव को जानकर उसको शब्द दिया जा सकता है।

भिन्न-भिन्न ध्वनियों को पृथक करने के लिए जो प्रतीक बनाये गये, वे तत्वों की गति का अध्ययन करके ही बनाये हैं। जैसे इ सूर्य की क्रिया-प्रतिक्रिया वायु के साथ है। यदि हम वायु की गति व इ के स्वरूप को ध्यान से देखें तो काफी समानता दिखती है। इसी प्रकार र, स, ख, छ, ठ, थ और फ में काफी समानता है।

सत्त्व गुण—सबके लिए कल्याण की भावना से किया गया प्रयास जैसे ऋषियों द्वारा दिया गया परम पवित्र वेदों का ज्ञान।

रजो गुण—भावना तो कल्याण की ही होती है। लेकिन दूसरों को बुरी लगती है, जैसे पिता द्वारा पुत्र को दी गई सीख, वैद्य द्वारा दी गई कड़वी औषधि, सत्य वचन इत्यादि।

तमो गुणः—दूसरों का अहित सोच कर किया गया कार्य अपने लिए भी अहितकर होता है, क्योंकि हाथ तो हमारे भी बुराई में रंग जाते हैं जैसे चापलूस होना, अयथार्थवादी होना आदि।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू जनसंख्या में भारी कमी

—इन्द्रसेन शर्मा

१९५१ से १९७१ तक की अवधि में हिन्दुओं की जनसंख्या ४९ प्रतिशत बढ़ी, जबकि मुसलमानों की ७४ प्रतिशत। यदि यही अनुपात आगे भी जारी रहा, तो भारत के अनेक क्षेत्र मुस्लिमबहुल हो जायेंगे। तब एक नये पाकिस्तान की मांग भी उठ सकती है। प्रस्तुत लेख इस खतरे पर प्रकाश डालता है।

जब हिन्दुस्तान परतन्त्र था, तब विदेशी शासक अपना हित इसमें समझते थे कि देश में हिन्दू जनसंख्या का अनुपात घटाया जाये। हिन्दू तो स्वतन्त्रता आन्दोलन को सफल बनाने में व्यस्त रहे, किन्तु विदेशी तत्त्व अपनी जनसंख्या बढ़ाने और हिन्दुओं की संख्या घटाने में संलग्न रहे। इसी उद्देश्य के वशीभूत भारतीय कांग्रेस के काकीनाड़ा अधिवेशन के अध्यक्षपद से बोलते हुए मौलाना मुहम्मद अली ने कहा था कि छोटे काम करने वाली हिन्दू जातियों के उत्थान के लिए इन्हें हिन्दुओं और मुसलमानों में आधा-आधा बांट दिया जाये।

१८८१ से १९४१ तक हिन्दुस्थान में हिन्दू जनसंख्या ४३.६ प्रतिशत की दर से बढ़ी, जबकि मुस्लिम जनसंख्या में ८८.० प्रतिशत की वृद्धि हुई। फलस्वरूप हिन्दुस्थान के उत्तर-पश्चिमी और उत्तर-पूर्वी अंचलों में मुस्लिम बहुसंख्या हो गई, मुस्लिम लीग की मांग पर हिंदू एवं मुस्लिम बहुसंख्या क्षेत्रों के आधार पर देश का दुःखद विभाजन हुआ और हिन्दुस्थान की धरती पर संसार का सबसे बड़ा मुस्लिम राज्य (पाकिस्तान) स्थापित हो गया, जहां से लगभग सब हिन्दुओं को निकाल दिया गया। उस समय मुस्लिम लीग का उद्घोष था "हंसकर लिया है पाकिस्तान, लड़ कर लेंगे हिन्दुस्तान"। इसी हेतु भारत पर तीन बार पाकिस्तानी आक्रमण हुए। अब पाकिस्तान को अमेरिका और चीन द्वारा भयंकर शस्त्रास्त्र दिये जा रहे हैं और पाकिस्तान में इस्लामी अणुबम बनाने की योजनाएं चल रही हैं।

हिन्दुस्थान की धरती पर पाकिस्तान स्थापित हो जाने और वहां से लगभग सब हिन्दुओं के निकाल दिये जाने के पश्चात् दोनों देशों में हिन्दू और मुस्लिम जनसंख्या का विनिमय होना स्वाभाविक, उचित और न्यायसंगत था, किन्तु इस देश के सत्ताधारी नेताओं ने इसे अपनी मिली-जुली संस्कृति की विचारधारा की हार मानते हुए स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार पूर्वी पाकिस्तान में रह गये हिंदुओं को इस्लामी अत्याचार के नीचे मरने के लिए छोड़ दिया गया। यदि पश्चिमी पाकिस्तान की तरह पूर्वी पाकिस्तान के साथ भी हिन्दू और मुस्लिम जनसंख्या का शान्तिपूर्वक और राजकीय स्तर पर विनिमय हो गया होता, तो हिन्दुस्तान के इस भाग में भी मुस्लिम साम्प्रदायिकता का प्रश्न समाप्त हो जाता और पूर्वी पंजाब की तरह समस्त भारत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का आर्थिक निर्माण सुगमता से हो सकता। पूर्वी पंजाब से मुसलमान चले गये, इसी लिए यह राज्य आर्थिक दृष्टि से भारत के अन्य सब राज्यों से आगे है।

भारत सरकार की मुस्लिमपोषक नीतियों के फलस्वरूप भारत में मुस्लिम जनसंख्या पुनः द्रुतगति से बढ़ने लगी। १९५१-७१ के बीस वर्षों में हिन्दू जनसंख्या ४९ प्रतिशत की दर से बढ़ी, जबकि मुस्लिम जनसंख्या ७४ प्रतिशत की दर से बढ़ी। यदि मुसलमान भी ४९ प्रतिशत की दर से बढ़ते, तो १९७१ में मुस्लिम जनसंख्या ९० लाख कम होती अर्थात् ६ करोड़ १४ लाख के स्थान पर ५ करोड़ २४ लाख होती। (१९५१ की जनगणना के अनुसार भारत में मुस्लिम जनसंख्या ३ करोड़ ५४ लाख अथवा ९.९१ प्रतिशत थी)।

मुस्लिम जनसंख्या में विशेष वृद्धि दो मुख्य कारणों से हुई—(१) लाखों पाकिस्तानी मुसलमान पूर्वी पाकिस्तान से अवैध घुसपैठ द्वारा असम, बिहार और पश्चिम बंगाल में बसते जा रहे हैं। यह क्रम गत ३२ वर्षों से चल रहा है और असम व पश्चिम बंगाल सरकारों के कई मंत्री इसमें सहयोग देते रहे हैं। १९६१ की जनगणना के अनुसार सारे देश में मुस्लिम जनसंख्या १९५१-६१ के दशक में २५.६१ प्रतिशत की दर से बढ़ी, किन्तु असम में ३८.५६ प्रतिशत, पश्चिम बंगाल में ३६.४८ प्रतिशत और बिहार में ३२.२९ प्रतिशत की दर से बढ़ी। स्पष्ट है कि इन सीमावर्ती राज्यों में मुस्लिम जनसंख्या में अतिरिक्त भारी वृद्धि पूर्वी पाकिस्तान से मुसलमानों की योजनाबद्ध अवैध घुसपैठ का परिणाम थी। भारत सरकार सब कुछ जानते हुए भी मूक दर्शक बनी रही। असम की जनता ने इतने समय के पश्चात् बंगलादेश से मुसलमानों की इस भारी अवैध घुसपैठ के खतरे को अनुभव किया है और विदेशियों के नाम मतदाता सूचियों से निकालने हेतु जोरदार आन्दोलन आरम्भ किया, जिसके सामने सरकार को झुकना पड़ा और वहाँ लोकसभा के चुनाव स्थगित कराने पड़े।

मुस्लिम जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि का दूसरा बड़ा कारण यह है कि भारत में रहने वाले मुसलमान आम तौर पर राजनैतिक लाभ की दृष्टि से सरकार के परिवार नियोजन उपायों में भाग लेने को राजी नहीं। राजकीय प्रतिवेदनों में स्पष्ट अंकित है कि मुसलमान किसी श्रेणी के हों, परिवार नियोजन उपायों में उनका भाग सबसे कम रहा है। हिन्दुओं ने साधारणतया "छोटे परिवार" की आवश्यकता को स्वीकार कर लिया है, किन्तु इसके विपरीत एक साधारण मुस्लिम परिवार में बच्चों की संख्या ७, ८, ९, १० और कहीं-कहीं इससे भी अधिक है। बहुत अधिक मुसलमान अपने बच्चों को पढ़ाते-लिखाते नहीं। वे उन्हें छोटे-छोटे काम सिखला कर मजदूर बना देते हैं और इस प्रकार देश की निर्धनता में वृद्धि करने के दोषी हैं। मुसलमानों को चार तक बहुविवाह करने और घर बैठे सुगम तलाक देने के भी विशेषाधिकार प्राप्त हैं। अतः एक मुसलमान बहुत-सी स्त्रियों से सन्तानें उत्पन्न कर सकता है।

अगली जनगणना १९८१ में होगी। तब हिन्दू जनसंख्या का अनुपात और अधिक घटेगा। इस प्रकार भारत का हिन्दू बहुसंख्या का रूप समाप्त हो रहा है। इसके गम्भीरतम परिणाम होने निश्चित हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

यदि सरकार के परिवार नियोजन उपाय इसी प्रकार चलते रहे और एक विशेष विधि पारित कर किसी भेदभाव के बिना प्रति पुरुष सन्तानों की सीमा निर्धारित नहीं की गई और अधिक सन्तान पैदा करना दण्डनीय नहीं ठहराया गया, तो जिन क्षेत्रों में मुस्लिम जनसंख्या १९७१ में २० प्रतिशत से अधिक थी, वहाँ हिन्दू बहुसंख्या के पीछे से आगे की मुस्लिम जनसंख्या की गति १० प्रतिशत प्रति दशक हो जायेगी और सन् २००१ के पश्चात् यह १३ प्रतिशत प्रति दशक हो जायेगी। इसके फलस्वरूप उत्तर प्रदेश के ११ जिले (मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत, बहराइच, गोंडा और बस्ती) व असम, बिहार और पश्चिम बंगाल के सीमावर्ती ११ जिले (कामरूप, नवगाँव, गोलपाड़ा, पूर्णिया, कूच-बिहार, पश्चिम दीनाजपुर, मालवा, बीरभूमि, नादिया, चौबीस परगना और मुर्शिदाबाद) लगभग ४० वर्षों में मुस्लिम बहुसंख्यक हो जायेंगे। क्या हिन्दू स्थिति की गम्भीरता को समझेंगे और और अपनी भावी सन्तानों के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए कटिबद्ध होंगे? समय की मांग है कि भारतवर्ष में हिन्दू रक्षार्थ शान्तिमय किन्तु प्रभावशाली "हिन्दू-जागृति आन्दोलन" आरम्भ किया जाये और सब हिन्दू इस आन्दोलन का पूर्ण समर्थन करें।

बाइबल और कुरान पर ऋषि दयानन्द सरस्वती के विचार

बाइबल

अब कहाँ तक लिखें इनकी बाइबल में लाखों बातें खण्डनीय हैं। थोड़ी सी बातों को छोड़ शेष सब झूठ भरा है। जैसे झूठ के संग से सत्य भी शुद्ध नहीं रहता वैसा ही बाइबल पुस्तक भी माननीय नहीं हो सकता।

कुरान

यह पुस्तक कैसा है? मुझ से पूछो तो यह किताब न ईश्वर, न विद्वान् की बनाई और न विद्या की हो सकती है। यह तो बहुत थोड़ा सा दोष प्रकट किया। इस लिए कि लोग धोखे में पड़ कर अपना जन्म व्यर्थ न गमावें। जो कुछ इसमें थोड़ा सा सत्य है वह वेदादि विद्या पुस्तकों के अनुकूल होने से जैसे मुझको ग्राह्य है वैसे अन्य भी मजहब के हठ और पक्षपात रहित विद्वानों और बुद्धिमानों को ग्राह्य है। इसके बिना जो कुछ इसमें है वह सब अविद्या, भ्रमजाल और मनुष्य की आत्मा को पशुवत् बनाकर शांतिभंग कराके उपद्रव मचा मनुष्यों में विद्रोह फैला परस्पर दुःखोन्नति करने वाला विषय है और पुनरुक्त दोष का तो कुरान जानो भण्डार ही है। परमात्मा सब मनुष्यों पर कृपा करें कि सबके सब प्रीति, परस्पर मेल और एक दूसरे के सुख की उन्नति करने में प्रवृत्त हों।

—सत्यार्थ प्रकाश

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

हम समय रहते चेतें

★★★ ★★★

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति ॥

१९८१ की जन गणना निकट है । दासता का अन्त करें ।

आर्य जाति के, विशेषतः भारतीय आर्य जाति के, कुल व वंश में उत्पन्न होने का गर्व और अभिमान होना उचित है ।

५०० ई० पूर्व के फारस के सम्राट् डेरियस का एक लेख मिला है । इसमें डेरियस ने अपने को आर्य कुल दिवाकर कहा है । साथ ही उसने अपना परिचय 'भारती आर्य' कहकर दिया है । अतः आर्यजन अगली जनगणना में अपने को हिन्दू, काफिर, गुलाम, दास, बंटमार न लिखायें । अपदस्थ ईरान के शाह अपने को "आर्य-मेहर" कहते थे । आयतुल्ला खोमेनी को इस पर भारी आपत्ति थी, क्योंकि ईरानी यदि अपने को प्राचीन आर्य जाति का कहने और मानने लगे तो १४०० साल पुराना इस्लाम कहां रहेगा । इसी समय आज के मुसलमानों ने पाकिस्तान मांगा और नपुंसक ब्रिटिश एजेंट कांग्रेस ने सत्ता पाने के लोभ में आत्मसमर्पण कर दिया । यही कारण है कि शिक्षा का माध्यम १९८० में भी अंग्रेजी बनी हुई है । उर्दू की बाधित शिक्षा दी जा रही है । संस्कृत का प्रचार नहीं किया जा रहा है । जर्मनी के रेडियो ने जब संस्कृत को १५ मिनट किये तब शरमो-शरमी भारत के रेडियो ने संस्कृत को ५ मिनट दिये । किन्तु वेद पाठ को नहीं ।

वेद है जिसमें भारत राष्ट्र के प्राण बसते हैं ।"नमस्ते" का क्या किसी ने प्रचार किया ? केवल ऋषि ने इसका व्यवहार किया । बस, यह मास्को तक फैल गया । स्वयं निकिता ख्रुश्चेव ने राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् को विमान से बाहर आता देखकर जोर से कहा 'गुरुदेव, नमस्ते' । यह नमस्ते वेद का शब्द है । वेद आर्य जाति की अनमोल राष्ट्रीय सम्पत्ति है । भारत ने इसको जब विस्मृत कर दिया, तब वह विश्व साम्राज्य का स्वामी नहीं रहा । फलतः आज यह अविस्मरणीय ऋषि वाणी हमारे हृदय में स्फुरण तक उत्पन्न नहीं करती ।

शुंगवंश के शासन से लेकर ऋषि दयानन्द तक किसी सुधारक, मत प्रवर्तक एवं सम्प्रदाय चलाने वाले ने सम्पूर्ण भारत का दर्शन नहीं किया । बुद्ध से व्यक्ति-पूजा शुरू हुई । यद्यपि भगवान् बुद्ध ने अजीवक घोसाल से यही कहा था कि वह किसी धर्म व नये समुदाय को नहीं चला रहे—केवल "आर्यपथ" का परिष्कार कर रहे हैं । परन्तु उनके शिष्यों ने कहा—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बुद्धं शरणं गच्छामि,
संघं शरणं गच्छामि।
धम्मं शरणं गच्छामि ॥

इसके बाद जितने भी नये मत सम्प्रदाय उत्पन्न हुए वे सब व्यक्तिपूजक थे। राष्ट्रवाद के परम शत्रु हैं। आर्य जाति के अस्तित्व को चुनौती है। क्योंकि एकमात्र भारती आर्य जाति कहती है और मानती है—

माता पृथ्वी पुत्रोहं पृथिव्याः। (अथर्व १२।१।१२)

भारती आर्य जाति का विश्वास है कि विश्व नियन्ता ने उसको विश्व की वसुधा का शासन करने के लिए उत्पन्न किया है।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तो,
अरण्येने पृथ्वी स्योनमस्तु ।
वयुं कृष्णां रोहिणी विश्वरूपां,
श्रुवा भूमि पृथ्वीमिन्दु गुप्ताम् ।
अजीनो हसो आत्यो
अध्यष्ठां पृथ्वीमहम् ॥

इसी कारण हम कामना करते हैं—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥

आज क्या इसका कोई महत्त्व है ? यह केवल नपुंसक का ब्रह्मचारी होने का दावा करने के समान है। इसका महत्त्व तब था जब ऋषि के शब्दों में पांच हजार वर्ष पूर्व सम्पूर्ण ज्ञात संसार पर आर्य जाति का सार्वभौम चक्रवर्त्ती राज्य था। अन्य राजा माण्डलिक थे।

ऋषि ने समस्त ज्ञात संसार की बात कही है। प्रश्न पूछा जा सकता कि है ज्ञात संसार की सीमा क्या थी ? इसका उत्तर यालू द्वीप-दक्षिण अटलांटिक महासागर में आज भी जीवित बची भारतीय नारी दे रही है। 'हिन्दू' नाम का यह अभिशाप है कि हम उस नारी को अर्घ्य तक देने नहीं पहुंचे। पेरू की राजधानी लीमा से लगभग १०० मील दूर एण्डेज पर्वतमाला के शिखर पर बना सूर्य मन्दिर ऋषि की बात की यथार्थता का प्रमाण दे रहा है। अमेरिका १९८० की जनगणना में अमेरिकी इण्डियनों की पृथक् गणना कर रहा है। ये भारत वंशी यूरोपियन आहार में ब्रैड, केक और यूरोपियन खाद्य नहीं खाते। क्योंकि विजय जैसा स्पेनिशों का यह भोजन है। ये खाते हैं दाल-रोटी, दाल भात जैसे मसूर की दाल और रोटी। इसी वास्ते हम स्मरण करते हैं—

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः, सनातनोप्यसि पिंगली च।
सप्त स्वराः सप्त रसातलानि, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

भारत देश व राष्ट्र का मंगल तभी होगा, जब सात महादेशों और सात पाताल लोकों पर भारत का शासन होगा। तभी विश्व शान्ति होगी। दुनिया से 'क्षुधा' का अन्त होगा। इस देश का 'भारत' नाम तब सार्थक होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस देश का प्रायद्वीप का नाम भारत है, क्यों कि यह विश्व भर का भरण-पोषण करता है । हमारा आदि पूर्वज यह उत्तरदायित्व हमें विरासत में सौंप गया है । यथा—

य इमे रोदसी उभे, अहमिन्दुमतुस्तवम् ।
विश्वमित्रस्य रक्षति, ब्रह्मेदं भारतं जनम् ॥

'हिन्दू' नाम दासता का सूचक है । ब्राह्मण, बनिया, उच्च वर्ग ने इस्लामी दासता को दासता ही नहीं माना । ६वीं सदी में मुल्तान का सूर्य मन्दिर मीर कासिम ने गिराया । क्या कभी यह फिर खड़ा हुआ ? ढाई दिन का झोपड़ा क्या यही कहानी नहीं कह रहा है ? जेरूसलम का यहूदी मन्दिर तीन बार गिराया गया और तीन बार खड़ा किया गया । नाना प्रकार के अत्याचार सहे, उत्पीड़न सहा, परन्तु किंग सोलोमन और डेविड को सदा याद रखा । फलतः आज इस्राईल राज्य वहीं स्थापित है जहां से खलीफा ने उनको भगाया था । इस के विपरीत हम ऋषि की इस बात को भूल गये—

इदं नमः ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पथिकृद्भ्यः ॥

भारत राष्ट्र का प्रारम्भ 'अग्निमीले' से नहीं होता । ऋग्वेद का ऋषि अपने से पहले की कम से कम चार पीढ़ियों का उल्लेख कर रहा है । अभिमान पतन का कारण है । माया जन का मिला एक लेख भी कहता है कि अभिमान के कारण माया जन का तीन बार नाश हुआ । परन्तु अभिमान शून्य का भी नाश होता है । प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार नोबेल पुरस्कार प्राप्त निर्वासित सोल्जेनित्सीन ने कहा है—जो देश व राष्ट्र अपने पूर्वजों को भूल जाता है वह अपना इतिहास खो देता है । जो अपना इतिहास खो देता है वह नष्ट हो जाता है । सम्भूति और असम्भूति, विद्या और अविद्या दोनों की उपासना करने वाला ही जीता रहता है । एक का उपासक नष्ट हो जाता है । राम त्रेता युग में जन्मे । यह काल ग्यारह लाख वर्ष पहले ठहरता है । परन्तु सृष्टि संवत् तो १९७ करोड़ वर्ष है । सृष्टि संवत् का व्यवहार आज कितने लोग जीवन में कितनी बार करते हैं ? "हिन्दू" नाम ने दासता की मनोवृत्ति पैदा की है । भाग्यवादी बनाया है । भारत मां की स्तुति में —भारत की महिमा में विष्णु पुराण के कवि ने लगभग २०० ई० पहले गाया था—

गायन्ति देवाः किल गीतिकानि, धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे ।
स्वर्गापवर्गस्य च हेतुभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥

क्या इसके अतिरिक्त कोई और पद १८ पुराणों में है ? परन्तु भारत राष्ट्र के निर्माताओं ने तो कहा है—

ये ग्रामा यदरण्यं, या सभा अधिभूम्याम् ।
ये संग्रामा समितयः, तेषु चारु वदेम ते ॥

इसका पालन न करने के कारण ही भारत आज भी न केवल विखण्डित है, बल्कि पराजित और एंग्लो-मुस्लिम-रूसी युति का दास भी है । श्रीमती इन्दिरा गांधी का १४ जनवरी १९८० को पुनः प्रधानमंत्री बनना क्या इसका प्रमाण नहीं ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हाई कोर्ट में झूठ बोलने वाली प्रधान मंत्री भी दुबारा चुनी गई, जब कि हमारी मान्यता है सत्येनोत्तभिता भूमिः। भूमि सत्य पर टिकी हुई है।

यह अदम्य और अक्षय शक्ति भारत माता—भारत भूमि के प्रति निष्ठा एवं श्रद्धा से प्राप्त होती है। क्या हम महान् संन्यासी स्वामी विवेकानन्द की पुकार सुनेंगे ? इस महान् संन्यासी ने आह्वान किया था—

हृदय की पूरी शक्ति से उच्च स्वर से कहो कि हम भारत सन्तान हैं—भारत सन्तान हैं।

सब भारतीय हमारे भाई हैं। सब भारतीय हमारे बन्धु हैं।

हमारी सब समस्याओं का हल इसमें निहित है। अतः दासता वाचक 'हिन्दू' नाम का त्याग करें। विजय पथ को पकड़ें। भूलें नहीं पराजय पाप है। पराजित ईश्वर की स्तुति करने का अधिकारी नहीं, क्यों कि अपवित्र और मलिन मन से परमात्मा की आराधना-उपासना नहीं हो सकती। कहा है—

मा पापासो मनामहे।

ब्राह्मण ग्रन्थ इसका समर्थन करते हैं, यथा

यस्माद् ब्राह्मणेन न आयज्ञिः।
न पापो पुरुषो याज्यः ॥

धर्म में युद्ध का महत्त्व

धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयो ऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते।
यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥

(अ० २ श्रीमद्भगद्गीता)

धर्मयुद्ध से बढ़कर क्षत्रिय के लिये दूसरा कोई कल्याणकारक कर्त्तव्य नहीं।

हे पार्थ ! युद्ध क्या है ? इच्छानुसार खुला हुआ स्वर्ग का द्वार हैं और बड़े भाग्यशाली क्षत्रियों को युद्धों की प्राप्ति होती है। यदि तू युद्ध में मारा गया तो स्वर्ग को प्राप्त करेगा और यदि जीत गया तो पृथ्वी का राज्य करेगा अतः हे कुन्ती पुत्र ! उठ और यूद्ध का निश्चय कर।

किन्तु सुख दुःख, लाभ अलाभ और जय पराजय की चिन्ता न करते हुए तू युद्ध को कर्तव्य समझते हुए युद्ध कर, तुझे कोई पाप नही लगेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आप को ज्ञात है कि

दिल्ली का निर्माण श्रीकृष्ण ने किया था ?

—श्रीचक्र

आप कदाचित् नहीं जानते होंगे कि भारत की राजधानी दिल्ली को आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व श्रीकृष्ण ने बसाया था। उन राष्ट्रपुरुष श्रीकृष्ण ने, जिनकी मुरली माधुर्य को जीवन देती थी तो जिनकी वाणी गीता के रूप में आज भी विश्व को ज्ञान की ज्योति से जाग्रत कर रही है, जिनकी महिमामय कीर्त्ति अकल्पनीय और जिनके शौर्य की समता महाभारत युद्ध का एक भी योद्धा नहीं कर सकता।

लेकिन दिल्ली का निर्माण श्रीकृष्ण ने अपने लिए नहीं किया था, उसे निर्मित किया था उन्होंने धर्मराज युधिष्ठिर के लिए। उस समय सर्वमान्य कर्माचरण आग्रही शासक की वह राजधानी बने, इसीलिए उस नगर की स्थापना की गयी थी। यों उस समय इसका नाम न दिल्ली था और न देहली, नाम था इन्द्रप्रस्थ। और इन्द्रप्रस्थ इसका नाम कैसे पड़ा, इसके भी ऐतिहासिक कारण हैं।

बात तब की है जब पांडवों को दुर्योधन का कूट प्रयत्न लाक्षागृह में जला नहीं सका था और वे माता कुंती के साथ बच निकले थे। वन-वन भटकते वे पांचाल (पंजाब) पहुंचे थे महाराजा द्रुपद की राजधानी में, और वहां सव्यसाची अर्जुन ने राजाओं की भरी सभा में मत्स्यभेद करके द्रुपद की राजकन्या द्रौपदी को प्राप्त किया था।

श्रीकृष्ण वहीं पर पांडवों से मिले थे। पूरे देश में यह समाचार थोड़े ही समय में फैल गया था कि पांडु के धर्मात्मा पुत्र जीवित हैं, और उन्होंने द्रुपद की पुत्री से विवाह किया है।

कौरवों के अन्धे पिता धृतराष्ट्र को विदुर ने समझाया : प्रजा पाँडवों को प्राण के समान प्यार करती है। वे लाक्षागृह में आपके पुत्र दुर्योधन द्वारा जलाये गये, यह बात किसी से छिपी नहीं है। लोग बहुत दुःखी थे। दुर्योधन से अतीव रुष्ट थे, किन्तु निरुपाय थे। अब पता लग गया कि वे अग्निदाह से बच निकले हैं। उन्हें अब द्रुपद की पूरी सहायता प्राप्त है, और श्रीकृष्ण उनके नित्य सहायक हैं। ऐसी अवस्था में अच्छा यही होगा कि आप उन्हें स्नेहपूर्वक बुला लें और युधिष्ठिर को उनका राज्य सौंप दें। ऐसा करने से कौरवों की अपकृति मिट जायेगी, ऐसा न करने से प्रजा विद्रोह कर देगी। पांडव द्रुपद की सेना लेकर आयें अथवा श्रीकृष्ण उन्हें ले आयें, बात एक ही है। तब आपके पुत्र को बैठने का ठिकाना भी नहीं लगेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदुर की बात धृतराष्ट्र को ठीक लगी। उन्होंने विदुर को ही पांडवों को लिवा लाने भेजा, और द्रौपदी तथा माता कुंती के साथ पांचों भाई हस्तिनापुर आ गये। युधिष्ठिर को राज्य का संचालन तो प्राप्त हुआ, किन्तु धृतराष्ट्र ने उन्हें सलाह देते हुए कहा : "बेटा, दुर्योधन तुम लोगों से चिढ़ता है। तुम यहाँ रहोगे, तो परस्पर का द्वेष बढ़ता ही जायेगा। किसी भी समय कोई दुर्घटना हो सकती है। इसीलिए मैं चाहता हूं कि तुम भाइयों के साथ किसी दूसरे स्थान में निवास करो।"

एक गांव मात्र

युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र का यह परामर्श स्वीकार कर लिया। वे भाइयों तथा सभी स्वजन परिजनों के साथ हस्तिनापुर छोड़कर यमुना किनारे आ गये। उस समय वह स्थान एक ग्राम मात्र था जहां युधिष्ठिर ने निवास किया। पांडव प्रकट हो गये हैं, वे द्रुपद की राजधानी से हस्तिनापुर पहुंच गये हैं और वहां से भी धृतराष्ट्र की सम्मति से पृथक् होकर यसुना तट पर जा बसे हैं, यह समाचार द्वारिका भी पहुंचा। श्रीकृष्ण पांडवों की प्रत्येक गतिविधि को जानने के लिए उत्सुक रहते थे, और उन्होंने तत-सम्बन्धित सारे समाचार प्राप्त करने की सम्यक् व्यवस्था भी कर रखी थी। यह खबर मिलते ही वे पांडवों से मिलने के लिए चल पड़े।

श्रीकृष्ण आये तो पांडवों को जैसे जीवन का बड़ा वरदान मिल गया हो। माता कुंती का वात्सल्य, पांडुपुत्रों की श्रद्धासमन्वित आत्मीयता, इन सबकी श्रीकृष्ण को प्रचुर मात्रा में प्राप्ति हुई, परन्तु वह प्रसन्न नहीं हो पाये। स्वागत-सत्कार के बाद पहले ही दिन उन्होंने अर्जुन से कहा था—"यह सामान्य भवन, यह तुच्छ-सा ग्राम क्या धर्मराज की गरिमा के उपयुक्त है?"

अर्जुन ने अश्रुपूरित नेत्रों से जवाब दिया था—"धर्मराज तो वन में वृक्ष के नीचे भी संतुष्ट थे, और पूरे वनवास हम लोग प्रायः झोंपड़ियों में ही रहे हैं। वासुदेव का स्वागत करने में भी हमें कोई संकोच नहीं, क्योंकि हम जानते हैं कि वे राज-प्रसादों की अपेक्षा कुटीरों के अधिक आत्मीय हैं।

देव शिल्पी का चमत्कार

तब कृष्ण बोले थे—"संकोच तुम्हें नहीं, मुझे हो रहा है, और इसीलिए तत-सम्बन्धित व्यवस्था भी मैं ही करूंगा। और उसी रात्रि के प्रथम प्रहर में देवशिल्पी विश्वकर्मा श्रीकृष्ण के सम्मुख उपस्थित हुए। श्रीकृष्ण ने उनको स्मरण किया था, इससे महान् सम्मान उनकी कला का और क्या हो सकता था भला!

"यहाँ एक नगर का निर्माण करना है आपको, ऐसा नगर जो द्वारिका से भी ज्यादा रमणीक और सुन्दर हो, जो विश्व सम्राट् की राजधानी बनने के उपयुक्त माना जाये और जिसके राजसदन की समता पृथ्वी और स्वर्ग में भी न हो सके। "श्रीकृष्ण ने विश्वकर्मा को आदेश दिया, और देवशिल्पी ने उसे अपना अहोभाग्य माना।

तभी, देवराज इन्द्र ने, राजसदन की सज्जा के लिए विशिष्ट भवनों को सुन्दर-तम बनाने के लिए, विश्वकर्मा को प्रस्थ (अंजुलि) भर कर रत्न दिये थे। इसीलिए जब उस नगर का निर्माण हो गया, तो उसका नाम पड़ा—इन्द्रप्रस्थ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेकिन नगर निर्माण के उपरान्त भी उसके दो अभाव श्रीकृष्ण को खटकते थे। एक तो अब तक राजसत्ता नहीं बन पायी थी, और दूसरे नगर के पार्श्व में हिंसक प्राणियों से परिपूर्ण घोर वन था। कुछ कारणों से देवराज इन्द्र स्वयं उस वन की रक्षा करते थे, जिससे वह आस-पास के नागरिकों के लिए सचमुच एक समस्या का रूप धारण कर गया था।

खाण्डव वन का दाह

यह देख श्रीकृष्ण अर्जुन के साथ एक रथ पर बैठे, और उन्होंने उस खांडव वन को अग्नि के अर्पण कर दिया। वन धू-धू करके जलता रहा, किन्तु इन्द्र असमर्थ हो गये उस अग्नि को बुझाने में। अर्जुन के बाणों तथा श्रीकृष्ण के चक्र ने उस भयंकर वन से किसी भी प्राणी को भागने नहीं दिया। केवल दानवेन्द्र मय बच सके, वह भी इसलिए कि उन्होंने प्राणों की भिक्षा के लिए अर्जुन की शरण ली थी। मय अमर हैं, लेकिन उन्होंने उस दिन देख लिया कि श्रीकृष्ण का चक्र उनके अमरत्व को भी समाप्त कर देने में पूर्णतः सक्षम है। इसकी ज्वाला का सृष्टि में कोई प्रतिकार नहीं।

"मैं इस प्राणदान के प्रतिकार स्वरूप आपकी कुछ सेवा करना चाहता हूं।"- मय ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक अपने शरणदाता अर्जुन से प्रार्थना की थी।

"श्रीकृष्ण की सेवा ही हम सबकी सेवा है।"—अर्जुन ने यह कहते हुए मय को श्रीकृष्ण के समीप भेज दिया था।

मय अपने समय का सबसे बड़ा शिल्पी था, श्रीकृष्ण इस तथ्य को जानते थे। उसके आते ही उन्होंने उससे कहा—दानवेन्द्र, आपके शिल्प नैपुण्य की समता विश्वकर्मा भी नहीं कर पाते। मेरी इच्छा है कि आप खांडव वन की इसी भूमि पर धर्मराज युधिष्ठिर के लिए एक राजसभा निर्मित कर दें, ऐसी राजसभा जिसको समता कहीं न पायी जा सके।

और मय ने अपनी समस्ता कला साकार कर दी उस राजसभा के रूप में। और नव नगर की रचना से द्वारिकाधीश को संतुष्टि मिल पायी।

युधिष्ठिर की उस राजधानी, इन्द्रप्रस्थ में, देव और दानव शिल्प, दोनों का चरमोत्कर्ष एक साथ व्यक्त हुआ, और श्रीकृष्ण ने स्वयं ही वहाँ पर धर्मराज को प्रतिष्ठित किया। राजसूय यज्ञ करके वही युधिष्ठिर चक्रवर्ती सम्राट् के रूप में अभिहित किये गये।

वहि भूमि आज स्वतन्त्र भारत की राजधानी है, लेकिन उसका आदि निर्माण श्रीकृष्ण के हाथों हुआ था, इस तथ्य से कितने लोग परिचित हैं?

इस्लामी साम्राज्यवाद की
चुनौती ४०) सैकड़ा मंगाएं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत में जनसंख्या निरोध

हिन्दू बहुसंख्या का योजनाबद्ध ह्रास

भारत सरकार की जनसंख्या नियन्त्रण नीतियां हिन्दुओं का विनाश कर रही हैं। हमारे राष्ट्रीय नेताओं द्वारा मुस्लिम तुष्टकीरण के कारण ठीक निर्णय नहीं लिए जाते। अतः भारत सरकार के परिवार नियोजन कार्यक्रम इस प्राचीन हिन्दू देश में बहुसंख्या का नियोजित ढंग से ह्रास कर रहे हैं। परिवार नियोजन कार्यक्रम तभी सफल हो सकते हैं, जब भारत सरकार एक केन्द्रीय विधि पारित कर जाति, विश्वास और सम्प्रदाय की चिन्ता किये बिना सन्तानोत्पत्ति योग्य प्रति पुरुष के लिए अधिकतम सन्तानों की संख्या निश्चित करे। निश्चित से अधिक सन्तानों को जन्म देना दण्डनीय अपराध घोषित किया जाये। भारत सरकार को जनसंख्या नियन्त्रण हेतु इस मार्ग को अपनाना होगा। संविधान की धारा ३२ में संशोधन करके ऐसा किया जाना चाहिये।

देश में अधिक जन्म दर के लिए साधारणतया मुस्लिम समुदाय उत्तरदायी है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार परिवार नियोजन उपायों में मुसलमानों का भाग सबसे न्यून रहा है। ऐसा राजनैतिक लाभ प्राप्ति की दृष्टि से ही किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त मुसलमान पुरुषों को एक साथ चार तक निकाह (विवाह) करने, सरलता से तलाक देने के कानूनी अधिकार प्राप्त हैं अतः एक मुसलमान पुरुष बहुत-सी स्त्रियों से बड़ी संख्या में सन्तानें उत्पन्न कर सकता है। इस प्रकार इस देश का हिन्दू बहुसंख्यक रूप परिवर्तित हो रहा है। इससे एक गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो रही है।

परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश के निम्नलिखित ११ जिले और बंगलादेश की सीमा पर स्थिति असम, बिहार और पश्चिम बंगाल के ग्यारह जिले लगभग ४० वर्षों के भीतर पूरे के पूरे मुस्लिम बहुसंख्यक हो जायेंगे, यह निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है। इन क्षेत्रों में १९७१ की जनगणना के अनुसार मुस्लिम जनसंख्या का अनुपात २० प्रतिशत से अधिक था और इन क्षेत्रों में परिवार नियोजन उपायों में मुसलमानों का भाग हिन्दुओं के भाग का १/४ रहा। हिसाब से उनकी हिन्दू बहुसंख्या के पीछे से आगे बढ़ने की दर १९७१ से २००१ तक १० प्रतिशत और तदुपरान्त १३ प्रतिशत निकली है।

नाम जिला	हिन्दू प्रतिशत	मुस्लिम प्रतिशत	हिन्दुओं और मुसलमानों के अनुपातों का अन्तर	मुस्लिम जनसंख्या कितने वर्षों में आगे निकल जायेगी	सन्
उत्तर प्रदेश					
सहारनपुर	६७.५६	३१.११	३६.४५	३५.००	२००६
मुजफ्फरनगर	७०.१४	२८.८३	४१.३१	३८.७०	२०१०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरठ	७५.७०	२२.१४	५३.५६	४८.१२	२०१९
बिजनौर	६१.९६	३६.६६	२५.३०	२५.३०	१९९६
मुरादाबाद	६१.२३	३८.१५	२३.०८	२३.०८	१९९४
रामपुर	४९.९८	४५.७६	४.२२	१९७६ में ही मुस्लिम बहुमत	
बरेली	६९.७४	२९.२०	४०.५४	३८.१०	२००९
पीलीभीत	७४.०३	२१.६२	५२.४१	४७.२३	२०१८
बहराइच	७२.८१	२६.९९	४५.८२	४२.१६	२०१३
गोंडा	७७.३५	२२.५७	५४.७८	४९.०६	२०२०
बस्ती	७९.६७	२०.३०	५९.३७	५२.०६	२०२३
असम					
कामरूप	६९.९६	२८.९३	४१.०३	३८.५०	२००९
नवगांव	५९.७०	३९.३९	२०.३१	२०.३१	१९९१
गोलपारा	५३.९२	४२.२५	११.६७	११.६७	१९८२
बिहार					
पूर्णिया	५९.९२	३९.६२	२०.३०	२०.३०	१९९१
पश्चिम बंगाल					
कूच-बिहार	७८.५६	२१.२५	५७.३१	५१.००	२०२२
पश्चिम दिनाजपुर	६३.०७	३५.८९	२७.१८	२७.१८	१९९८
मालदा	५६.६३	४६.१३	१६.५०	१३.५०	१९८४
बीरभूम	७०.५६	२९.१९	४१.३७	३८.७५	२०१०
नदिया	७५.९१	२३.३४	५२.५७	४७.३५	२०१८
चौबीस परगना	७५.७०	२३.६८	५२.०२	४७.००	२०१८
मुर्शिदाबाद	४३.४६	५६.३४	मुस्लिम बहुमत अभी हो गया		

धर्म के आधार

गीता का दुःखनाशक योग

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥

युक्त आहार, विहार, युक्त चेष्टा एवं कर्म और युक्त सोने एवं जागने से योग दुःखनाशक होता है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी दयानद हिंदुस्तान को गौरवशाली बनाना चाहते थे

—भाई परमानन्द

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रबल आकांक्षा थी कि उनका देश गौरवशाली राष्ट्र बने। इसी उद्देश्य से उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज के नाम पर एक नया सम्प्रदाय चलाने का उनका इरादा नहीं था। बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना के बाद महर्षि पूना गये और वहां दो महीने ठहर कर उन्होंने पन्द्रह व्याख्यान दिये। उनके प्रवचनों के विषय थे—ईश्वर की सत्ता और महत्ता, धर्म, अधर्म, वेद, पुनर्जन्म, पंचमहायज्ञ और रीति रिवाज इत्यादि। इन धार्मिक विषयों के पश्चात् उन्होंने राष्ट्रीय इतिहास पर आठ प्रवचन दिये। उनके मार्मिक प्रवचनों प्रकट हो जाता है कि उनमें राष्ट्र-प्रेम कितना कूट-कूटकर भरा था और वह देश की तत्कालीन दुरवस्था से कितने दुःखित थे। उन्होंने आर्य समाज के द्वारा आर्य धर्म अथवा राष्ट्र धर्म की व्याख्या प्रस्तुत की। कोई आर्य समाज जो राष्ट्र पर गर्व तथा आत्म सम्मान पर आधारित न हो वह स्वामी दयानन्द की आर्य समाज नहीं हो सकती। वह इतिहास के अत्यन्त विद्वान् थे और वैदिक काल से ही इसकी प्रस्थापना करते थे।

सृष्टि

संसार की सृष्टि कैसे हुई? आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। ईश्वर की शक्ति का नाम प्रकृति है, जो सृष्टि निर्माण में सहयोगी है। यह ईश्वर की तरह अनादि और अनन्त है।

ईश्वर की अपरिसीम सामर्थ्य की अभिव्यक्ति का नाम ही सृष्टि है।

असंख्य परमाणुओं के संयोग से पंचमहाभूतोंका विन्यास इसमें हुआ। इनसे सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि की उत्पत्ति हुई। मानव-जाति की उत्पत्ति हुई। ऐसा समझा जाता है कि पहला मानव हिमालय के शिखर पर उत्पन्न हुआ था।

भाषा

सृष्टि के आदिकाल में आर्यों की एक ही भाषा थी। कालगणना प्रणाली एक ही थी। जलवायु के वैषम्य से और परिस्थितियों के उतार-चढ़ाव के कारण उनमें परिवर्त्तन आया और एक मातृभाषा के गर्भ से अनेकानेक भाषाएं फूट निकलीं।

वेद

आदिकालीन ज्ञान-विज्ञान के भंडार का नाम वेद है। इसके प्रथम वाचक ब्रह्मा हुए, जिन्होंने इसका अध्ययन और अध्यापन किया। ब्रह्मा ने यह विद्या अपने पुत्र विराट् को दी—कालक्रम से स्वायंभव मनु को प्राप्त हुई। आचार्य मनु ने अपनी मनुस्मृति में इसका विवरण दिया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्ण-विभाजन

आदिकालीन समाज में केवल एक ही वर्ग था। ऋग्वेद काल में इसके दो भाग हो गए—ब्राह्मण (विद्वान्), क्षत्रिय (शूरवीर), वश्य (व्यापारी) और शूद्र (सेवक)। ब्राह्मण अध्ययन-अध्यापन एवं यज्ञ-योगादि पौरोहित्य कर्म करके जीवन यापन करता था। क्षत्रियों का धर्म युद्ध कर्म था। वह राज्य की रक्षा करता एवं राजा का वेतन-भोगी होता था। कृषि कर्म और व्यापार वश्यों के लिए और सेवा कर्म शूद्रों के लिए विहित थे।

प्रशासन

वर्ण विभाजन की यह प्रक्रिया मनु के काल में पूरी हुई। मनु के दस पुत्र थे। भरीचि प्रथम क्षत्रिय राजा था। कश्मीर से नेपाल तक देवताओं का शासन था। आजकल की तरह पहले यहाँ बर्फ नहीं जमा करती थी। यहाँ की राज-परम्परा में छह राजा हुए।

विष्णु का राजा वैकुण्ठ कहलाता था। तहादेव ने कैलाश की स्थापना की थी। इन्हीं दिनों विश्वकर्मा नामक एक यान्त्रिक ने विमान की रचना की थी। आर्य राजा आवागमन के लिए विमानों का प्रयोग किया करते थे।

आर्यावर्त्त

राजा इक्ष्वाकु का राजा आर्यावर्त्त कहलाता था। आर्यावर्त्त के पश्चिम में सरस्वती अथवा सिन्धु नदी, पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी, उत्तर में हिमालय पर्वत तथा दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत विद्यमान थे।। इस देश की जलवायु उत्तम थी। यहाँ की भूमि उपजाऊ थी। यहां छह ऋतुएं क्रमशः आती जाती रहती थीं। यहां के निवासी 'देव' कहलाते थे। गंगा नदी को देव नदी कहा जाने लगा। इसका पूर्व नाम पद्मा था। राजा भगीरथ ने इसमें से एक नहर निकाली थी। इसलिये इसका नाम भागीरथ पड़ा।

राजा इक्ष्वाकु के समय में ही स्याही से लिखने की प्रणाली का आविष्कार हुआ। इस काल में जो लिपि प्रचलित थी—उसे 'देव नागरी' कहते थे। पुस्तक-लेखन का प्रारम्भ इसी युग में हुआ।

वेदों के आदेश

देश की प्रजा वेदों के आदेशों का पालन करती थी। भृगुसंहिता के अनुसार सौ घरों का एक ग्राम, एक हजार घरों का महाग्राम, दस हजार घरों का नगर और इससे अधिक घरों का पुर हुआ करता था। राजा अपने प्रशासनाधिकारियों द्वारा सब पर शासन करता था।

प्रशासनाधिकारी

प्रशासनाधिकारी चार श्रेणियों में विभक्त होते थे—राज-अधिकारी (गृह विभाग), सेना अधिकारी (रक्षा विभाग), न्याय अधिकारी (विधि विभाग), और कोष अधिकारी (वित्त विभाग)। कई सभा-समितियों का भी प्रचलन था, जैसे राज सभा, धर्म सभा आदि। अपराध सिद्ध होने पर राजा भी दण्ड का भागी होता था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सैनिक व्यवस्था

सेना में अनुशासन का महत्व था। सैनिक आज्ञाकारी होते थे। उन्हें वैज्ञानिक प्रणाली, से दीक्षा मिली होती थी। चक्रव्यूह, मकर व्यूह इत्यादि सैनिक संरचनाओं का विधान था। असि (तलवार), भुशुण्डी (बन्दूक), शतघ्नी (तोप) आदि शस्त्रास्त्रों का प्रयोग होता था।

सैन्य संचालन

यह अत्यधिक विकसित और वैज्ञानिक रूप में प्रचलित था। सैनिकों को सभी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त थीं। मरणोपरान्त उनके परिवारों का व्यय राज-शासन वहन करता था।

राजा और प्रजा

राजा इक्ष्वाकु ने अनेक वर्षों तक सफलता पूर्वक राज्य किया। इसी वंश में राजा सागर भी एक प्रसिद्ध राजा हुए। वह बड़े उदार व धर्मनिष्ठ थे। उनका पुत्र हुआ असमंजस, जो अयोग्य तथा दुष्ट प्रकृति का था। एक बार उसने एक निर्धन बालक को पानी में फेंक दिया। उसे बन्दी बनाकर उसे घनघोर जंगल में छोड़ दिया गया। राजा नल भी एक प्रसिद्ध राजा हुए। दमयन्ती के साथ उनकी प्रेम कहानी को सभी जानते हैं। भारत देश रघुवंशी राजा भरत के नाम पर पड़ा है, जो बाल्य-काल से ही शूरवीर थे

देवराज्य

सर्वत्र देवताओं का राज्य था। ये लोग असुरों से युद्ध करते थे। देवताओं के ये राजा प्रायः विमान में इधर से उधर जाया करते थे। इन दिनों स्वयंवर की प्रथा प्रचलित थी। देश-विदेश के राजा लोग इन स्वयंवरों में भाग लेते थे और अपने शौर्य का प्रदर्शन करते थे।

शिक्षा

वैदिक युग में गुरुकुलों का प्रचलन था। यहां वेद वेदांगों एवं दर्शन शास्त्रों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा प्राप्त करना विधि के अनुसार अनिवार्य था। इसका उल्लंघन करने वालों को दण्ड दिया जाता था। शिक्षा जीवनोपयोगी होती थी। तत्कालीन विद्वानों की कृतियों का आज तक समादर किया जाता है।

समाज में नारी का स्थान

वैदिक युग में नर-नारी को समान अधिकार प्राप्त थे। गार्गी, मैत्रेयी आदि विदुषियां पुरुष विद्वानों से शास्त्रों में टक्कर लेती थीं। यह कहना पूर्णतया मिथ्या है कि हिन्दू परम्परा में नारी को विद्या का अधिकार नहीं था।

विवाह

युवकों के लिए कम से कम २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन करने के बाद ही विवाह का विधान था। बाल विवाह का कहीं संग ही नहीं था। इस प्रथा के कारण आज हिन्दुओं में विधवाओं की भरमार है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—अशोक कुमार शर्मा

देवनागरी : विशुद्ध भाषा-विज्ञान

यह देवनागरी नहीं देवनगरी है अर्थात् यह शरीर रूपी देवनगरी में ऋषियों के द्वारा समाधिस्थ होकर विभिन्न अक्षरों की ध्वनियों को सुनाया गया जो कि अष्ट-चक्रों के कमल दलों से पृथक्-पृथक् सुनाई दीं। अक्षरों के साथ अं की ध्वनि मिश्रित थी। बाद में 'अ' की ध्वनि को अलग कर अक्षरों को उचित ध्वनि दी गई। क्योंकि अं जल की ध्वनि है। (देखें तालिका)

ऋषियों ने बच्चे के जमीन पर आते ही उसके द्वारा की गई ध्वनि अ—म—मा से ही समझ गये थे कि वर्ण माला में अक्षर अ और म के मध्य ही होंगे।

ए, ऐ, ओ, औ क्रमशः अ + इ = ए + ए = ऐ अ + उ = ओ + ओ = औ बनते हैं।

इ और उ को छोड़कर अ स्वर सब स्वरों व व्यजंनों में पाया जाता है।

जल चन्द्रमा की शक्ति को अपने में समा लेता है इसलिए कोई अक्षर की ध्वनि न आ सकी। पृथ्वी पर तो क्या ही ध्वनि प्रकट होगी। (देखें तालिका)

आकाश, वायु, अग्नि, पृथ्वी के मूल अक्षर क्रमशः क, छ, ड, ध, म है।

अः, ष, ङ, ञ, ण खाली हैं अर्थात् इनसे शुरू होने वाला कोई शब्द नही है, कारण यह है कि पृथ्वी पर आकर सूर्य, सूर्य-चन्द्रमा, आकाश, वायु और अग्नि की शक्ति को पृथ्वी अपने अन्दर सोख लेती है। ये अक्षर देवता/तत्त्वों की अपनी शक्ति के ही कारण हैं। क्ष, त्र, ज्ञ क्रमशः क् + श, र + र् ज् + ञ हैं।

ऊपर दी हुई तालिका के माध्यम से किसी भी शब्द एवं व्यक्ति के नाम को जानकर उसके गुण, कर्म और स्वभाव के विषय में जाना जा सकता है (शब्द चाहे किसी भी भाषा का हो) इसी प्रकार किसी वस्तु के गुण, कर्म स्वभाव को जानकर उसको शब्द दिया जा सकता है।

भिन्न-भिन्न ध्वनियों को पृथक करने के लिए जो प्रतीक बनाये गये, वे तत्त्वों की गति का अध्ययन करके ही बनाये हैं। जैसे इ सूर्य की क्रिया-प्रतिक्रिया वायु के साथ है। यदि हम वायु की गति व इ के स्वरूप को ध्यान से देखें तो काफी समानता दिखती है। इसी प्रकार र, स, ख, छ, ठ, थ और फ में काफी समानता है।

सत्त्व गुण—सबके लिए कल्याण की भावना से किया गया प्रयास जैसे ऋषियों द्वारा दिया गया परम पवित्र वेदों का ज्ञान।

रजो गुण—भावना तो कल्याण की ही होती है। लेकिन दूसरों को बुरी लगती है, जैसे पिता द्वारा पुत्र को दी गई सीख, वैद्य द्वारा दी गई कड़वी औषधि, सत्य वचन इत्यादि।

तमो गुणः—दूसरों का अहित सोच कर किया गया कार्य अपने लिए भी अ-हितकर होता है, क्योंकि हाथ तो हमारे भी बुराई में रंग जाते हैं जैसे चापलूस होना, अयथार्थवादी होना आदि।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

		क्रिया प्रतिक्रिया / देवता/तत्व	आकाश	वायु	अग्नि	जल	पृथ्वी	लक्षण★
सत्त्व	स्वर	सूर्य	अ	इ	उ	अं	अः	सूर्य—धुरी पर स्थिर, स्वनाभिकीय प्रणाली, स्वावलम्बी तिमिरनाशक, ऊर्जा का अन्तत स्रोत, निरन्तर प्रकाश करने हारा, स्वर्ण रश्मियों का बिखेरने वाला। इत्यादि।
रज	संयुक्त अक्षर	सूर्य-चन्द्रमा संयुक्त रूप से	य	र	ल	व	ष	सूर्य-चन्द्रमा—जीवन क्रम, तुलनात्मक आधार प्रदान करना, समभाव, जिम्मेदारी को मानने वाला, दिशा को मोड़ने की क्षमता, आकर्षक इत्यादि।
		चन्द्रमा	श	स	ह	×	×	चन्द्रमा—शान्त, शीतल, घटने-बढ़ने वाला, मधुर स्वर, गायन में रुचि, पृथ्वी के लिए सहायक, सलाह से काम करना, पराश्रितता, साथ में अच्छा लगना, सौन्दर्यपूर्ण इत्यादि।
	व्यंजन	आकाश	क	ख	ग	घ	ङ	आकाश – शब्द, सर्वत्र व्यापकता, साफ स्पष्टवादी अन्दर बाहर एक सा, उदार, अपने में समा लेने की क्षमता, सबको अच्छा लगना, जितना ले उससे अधिक देना इत्यादि।
		वायु	च	छ	ज	झ	ञ	वायु—स्पर्श, गति देना, प्राण, कर्मठ, मृत्यु, प्रहार शक्ति, संवेदन शील, वर्तमान, को अधिक महत्त्व देना इत्यादि।
तम		अग्नि	ट	ठ	ड	ढ	ण	अग्नि—रूप दहनशील, शुद्ध करना, भस्म करने की शक्ति, संगठन के गुण को खत्म करना, अपना वर्चस्व स्थापित करना, उर्ध्वगामी इत्यादि।
		जल	त	थ	द	ध	न	जल—रस, अपने में एकाकार करना, संगठन करने का विशेष गुण, भेदभाव रहित, निरन्तर सेवा की भावना, जीवन देना, अद्भुत क्षमता, लक्ष्मी का आधार, मर्यादा में रहना इत्यादि।
		पृथ्वी	प	फ	ब	भ	म	पृथ्वी—गन्ध, सहनशीलता, स्थिति प्रदान करना, भेद न मिलना, भौतिकवादी होना, अहंकारी, सोख लेना, शक्ति खींचना इत्यादि।

★पर्यायवाची शब्दों को भी शब्द कोश की सहायता से लिया जा सकता है।

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हर अक्षर में सत्त्व, रज और तम क्रमशः चेतना, ध्वनि और प्रतीक के रूप में एक साथ रहते हैं जिस प्रकार से इस शरीर में पंच तत्त्व, ये सब हिण्डोले के पालने की भाँति ऊपर नीचे आते जाते रहते हैं।

उदाहरण :

ओ३म्	भूर्भुवः स्वः
महाव्याहृति	व्याहृति

ओ३म् के मध्य में जो तीन का अंक है वह इस बात की ओर संकेत करता है कि जैसे हम दौड़ने के लिए संकेत देते हैं कि १—२—३ भागो। ठीक इसी प्रकार प्राण वायु का ९० प्रतिशत भाग "ओ" का वाचिक उच्चारण करने में शेष होठ बन्द करके नासिका से प्राण वायु बाहर निकाल दी जाय तो म् अपने आप हो जायेगा।

व्याहृति कहते हैं इकट्ठा करके लाने वाली शक्ति को, इस प्रकार जब हम महा व्याहृति प्रणव 'ओ३म्' ब्रह्मनाद करते हैं तो यह शरीर की सारी शक्तियों को इकट्ठा (अन्तर्मुखी) करके ब्रह्म रन्ध्र की ओर बढ़ा देती है। शारीरिक शक्तियां अनुशासित एवं संयमित होकर अपने आप सहयोग करने लगती हैं।

तालिका के आधार पर देखें तो जान पड़ता है कि प्रणव के वाचिक नाद से पंच तत्त्वों का मंथन हो जाता है।

पांच तत्त्व	देवता/तत्त्व	अक्षर
आकाश	सूर्य	अ
वायु	वायु	प्राणवायु
अग्नि	सूर्य	उ
जल	जल	प्राण वायु के साथ
पृथ्वी	पृथ्वी	म्

व्याहृति भूर्भुवः स्वः के गुण, कर्म और स्वभाव को समझने के लिए तालिका में भ, उ+उ, र्, भ, उ, व, अः और स्, व, अः के देवता तत्त्वों की तत्त्वों के साथ क्रिया-प्रतिक्रिया को देखना होगा।

अपने नाम के हर अक्षर के बाईं ओर दिये देवता-तत्त्व के सामने के व तत्त्व के साथ क्रिया-प्रतिक्रिया के लक्षण देखें जैसे नरेन्द्र में न के लिये जल और पृथ्वी के लक्षण देखने होंगे।

* स्वास्तिक 'मगल प्रतीक' ब्रह्मनाद करने पर ब्रह्मरन्ध्र पर बनने वाले भंवर की दिशा है अर्थात् ब्रह्म लोक को पहुंचाने की दिशा, इसकी विपरीत दिशा विनाश की दिशा है जैसे समुद्र व नदियों में होने वाले भंवर, आरा मशीन, सुदर्शन चक्र आदि, इसलिए स्वास्तिक बनाते समय दिशा का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है। अन्यथा लाभ क्षीण हो जाने पर विनाश अवश्यंभावी है।

अक्षरों की ध्वनियां हुईं, उन ध्वनियों में पृथक्ता लाने के लिए प्रतीक बनाये गये, प्रतीक व ध्वनि एक दूसरे के पर्याय बने। इन ध्वनियों के पीछे एक चेतना हुई और चेतना का अपना गुण, कर्म और स्वभाव हुआ। इस बात को समझ कर मनुष्य को किसी की निन्दा व झूठ नहीं बोलना चाहिए, क्योंकि अक्षरों से बनने वाले शब्दों का अपना प्रभाव होता है।

विद्वान् लोग और अधिक मनन व चिन्तन कर रहस्यों को जान सकते हैं। यह लेख एक परिचय मात्र है। इससे भी आगे बहुत कुछ है। कारण व परिणाम के क्रम को जान कर यहां तक पहुंचा जा सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

विक्रम का पत्र

—विनय

जाड़े की सिहरती रात। महाराज की नींद अकस्मात् खुल गयी है। वे पुकारते हैं —"कोई है यहां ?"

"हाँ, महाराज, मैं आपका सेवक मातृगुप्त हूं।"

"अभी कितनी रात बाकी है ?" महाराज ने पूछ लिया।

कवि मातृगुप्त को यह उपयुक्त अवसर लगा जबकि वह अपनी दीन स्थिति का संकेत महाराजा को कराता। उसने एक श्लोक पढ़ा, जिसमें उसने अपनी दरिद्रता का उल्लेख कर दिया।

महाराज "अच्छा" कहकर चुप हो गये।

कवि काफी समय से महाराज विक्रम की सेवा में समर्पित था। वह जल्दी सवेरे आ जाता और देर रात तक महाराज की सेवा करता। फिर भी महाराज ने उसे कभी कुछ न दिया। वह जब-जब मातृगुप्त को कुछ देने के लिए सोचते, तो उसकी निष्ठा, योग्यता आदि का विचार आ जाता और उन्हें हर चीज कवि को देने के लिए बहुत छोटी लगती। वे थम जाते। दिन, सप्ताह, महीने, वर्ष तो बीतते गये और वह मातृगुप्त को कुछ भी न दे सके।

मातृगुप्त की आर्थिक दशा गिरती गयी। दूसरे दरबारी राजा की निन्दा करते तो कोई मातृगुप्त को ही मूर्ख बताते, जो ऐसे कृपण राजा की सेवा में इस तरह लगा है। मातृगुप्त और उसका परिवार भूख की ज्वाला को झेलता रहा, जीर्ण वस्त्रों में गुजर करता रहा, फिर भी उज्जयिनी-नरेश की सेवा का त्याग करने का विचार नहीं किया।

उस दिन भी मातृगुप्त एक धोती और एक सूती कुर्ता पहने था। कश्मीर की ठंडी रात की हवा उसे बार-बार कंपा जाती। कवि का श्लोक सुनकर भी जब महाराज ने कुछ न कहा तो उसे बेहद निराशा हुई।

लेकिन महाराज विक्रम को उस रात फिर नींद नहीं आयी। उन्होंने कुछ सोचकर निश्चय कर लिया।

'ऐसे राजा की सेवा से क्या लाभ, जो सेवक के भोजन वस्त्र आदि के लिए भी वृत्ति न दे। मैं आज ही किसी अन्य राजा की सेवा में चला जाऊंगा।'

ऐसे अनेक ऊहापोह मातृगुप्त के मन में उठते-बैठते रहे।

'सवेरा हुआ' महाराज ने उसे दरबार में बुला भेजा। मातृगुप्त का मन आज दरबार जाने को तैयार नहीं है ; लेकिन आज्ञा का उलंघन नहीं किया जा सकता।

'महाराज ने क्यों बुलाया है ? उन्हें तो मुझसे कठिन से कठिन काम लेने का ध्यान रहता है, मेरी जीविका का विचार उन्होंने कभी नहीं किया। ...लेकिन इसमें उनका ही दोष नहीं है, मैंने भी उनसे कब कुछ कहा है। ...हाँ, मैंने रात को उनसे अपनी दरिद्रता का संकेत किया तो है। फिर भी इस राजा को मेरी कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं जान पड़ी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं व्यर्थ ही इससे आशा लगाये बैठा हूं। लोग ठीक कहतें है कि ऐसे कृपण की सेवा से क्या लाभ ?...

वह अनमना-सा दरबार पहुंचा। "महाराज की जय हो।"

महाराज ने अभिवादन स्वीकार किया। फिर मातृगुप्त से कहा...

"मातृगुप्त ! तुम मेरा यह पत्र लेकर कश्मीर चले जाओ और इसे वहां की परिषद् के अध्यक्ष को पहुंचा दो।"

"जैसी महाराज की आज्ञा !" मातृगुप्त ने सिर झुका दिया।

महाराज विक्रम ने मातृगुप्त को यात्रा-व्यय भी न दिया। दरबार में काना-फूसी होने लगी—'कितना हृदयहीन राजा है यह !'

उज्जयिनी से श्रीनगर। पैदल यात्रा। साथ में न पाथेय, न मार्ग व्यय।

कवि ने कसौटी पर अपने को खरा उतारा, लेकिन मन म्लान था। शरीर मार्ग के कष्टों से और भी कृश हो गया था। वस्त्र अधिकाधिक जीर्ण-शीर्ण।

श्रीनगर की परिषद् में हलचल सी मच गयी। उज्जयिनी से महाराज विक्रम का दूत आया है। सम्राट् ने क्या आज्ञा दी है, यह सबकी उत्सुकता का विषय है।

परिषद् के अध्यक्ष ने मातृगुप्त के हाथ से पत्र लेकर उसे खोला और पढ़कर हर्ष विह्वल हो उठा। फिर पूछा..."क्या आर्य मातृगुप्त आप ही हैं ?"

स्वीकृति सूचक उत्तर पाकर वह प्रणाम-मुद्रा के साथ बोल उठा—

"महाराज मातृगुप्त की जय !"

मातृगुप्त विस्मित। उपस्थित सदस्यों और परिजनों को सम्राट् विक्रम का आदेश पढ़कर सुनाते हुए अध्यक्ष ने निर्देश दिया कि "आर्य मातृगुप्त के राज्याभिषेक की तैयारियाँ तुरन्त की जायें।"

सभी उपस्थित जन ने अपने नये राजा का सश्रद्ध अभिवादन किया। कश्मीर की जनता की ओर से सम्राट् से निवेदन किया गया था कि वह उनके लिए कोई उत्तम राजा चुन दें। महाराज ने जनता की इच्छा की पूर्ति कर दी थी। सारा कश्मीर हर्ष से भर उठा और राज्याभिषेक के दिन की प्रतीक्षा की जाने लगी।

शीघ्र ही, राज्याभिषेक की तैयारियां पूरी की गयीं और सम्पूर्ण तीर्थों के जल से स्नान कर मातृगुप्त राज सिंहासन पर विराजित हुआ।

शरीर त्याग क्या है

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

जैसे नर जीर्ण वस्त्रों को छोड़कर दूसरे नये वस्त्र धारण करता है, इसी प्रकार देहधारी आत्मा जीर्ण शरीरों को त्याग कर अन्य शरीरों को प्राप्त करता हे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी

सन् १९३१ का वह मनहूस दिन, काकोरी षड्यन्त्र केस, सांडर्स हत्याकांड, द्वितीय लाहौर षड्यन्त्र केस के मामले में बड़े जोर शोर से चन्द्र शेखर आजाद के खिलाफ जांच पड़ताल चल रही थी। किन्तु आजाद अल्फ्रेड पार्क में हरी हरी घास पर अपने सहयोगियों सुखदेव एवं राज गुरु के साथ विचार-विमर्श में मस्त थे, तभी किसी देशद्रोही ने सी० आई० डी० के अधिकारी को खबर दी और फिर वह पैगाम लेकर ९.३० बजे प्रातः डी० आई० जी० के स्पेशल सुपरिंटेंडेंट जे० आर० एच० नाटबावर के पास पहुंचा।

तुरंत नाटबावर सशस्त्र सिपाहियों के साथ कार से चल पड़ा। सन्देश वाहक ने दूर से घास पर बैठे दोनों क्रांतिकारियों को दिखला दिया। फिर दोनों ओर से गोलियां चलीं और चलती गयीं। भारत का यह वीर सपूत सशस्त्र ब्रिटिश पुलिस के खिलाफ मौत से खेलता रहा और इस प्रकार उसने देश की आजादी के लिए आत्म-बलिदान देकर शहीदों में शीर्ष स्थान प्राप्त किया।

'हम रहें न रहें, इसका कुछ गम नहीं, तेरी राहों को रोशन तो कर देंगे हम —जैसी जोशीली पंक्ति लिखने वाले सरदार भगत सिंह की फांसी से पहले, देश को आजाद होते देखने की अभिलाषा थी। फांसी पर लटकने से सिर्फ दो दिन पहले उन्होंने अपने वकील प्राणनाथ मेहता को लिखा था—"वसीयत के बहाने ही मुझसे मिलने आओ, साथ ही लेनिन की जीवनी भी लेते जाओ।"

भगत सिंह सदियों से सोये हुए गाफिल रूस की काया पलट देने वाले लेनिन की जीवन गाथा पढ़ना चाहते थे—हांलाकि मृत्यु चक्र मंडरा रहा था। इस वीर बांकुरे ने फांसी मिलने के पहले अपने अनुज को एक खत लिखा था—

उन्हें यह फिक्र है हर दम नयी तरजे-जफा क्या है,
हमें बस शौक है देखें सितम की इन्तहा क्या है।

चिरागे सहर हूं बुझा चाहता हूं,
खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं।

जमीन पर लेटे तो थे राजगुरु, लेकिन उनके हाथ सीने पर थे और वह सोते-सोते कराह रहे थे। चन्द्र शेखर आजाद ने रात में राजगुरु को कराहते देखकर ज्यों ही उनके पास जाकर उनके कराहने का कारण जानना चाहा कि वे हक्का बक्का रह गये। राजगुरु की कमीज उतरवा कर आजाद ने देखी तो सात बड़े-बड़े फफोले नजर आये। हाय रे, यह तू ने क्या कर डाला ? आजाद आंखों में आंसू लिये बोले मैंने तेरे लिये थोड़े ही कहा था कि तू डिग जायेगा, मैं तो पुलिस के जुल्मो सितम उनके भेद उगलवाने के तौर-तरीके बता रहा था।

राजगुरु म्युनिसिपल स्कूल बनारस के एक साधारण ड्रिल मास्टर थे, जिन्हें कुश्ती लड़ना तथा गदका चलाने का बड़ा शौक था। घटना १९२९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की है—आगरा में क्रांतिकारियों ने किराये पर एक मकान ले रखा था, जिसमें गुप्त सभाएं, विचार-विमर्श हुआ करता था।

राजगुरु रसोई में चूल्हे के सामने रोटियां बना रहे थे। सेनापति चन्द्रशेखर आजाद क्रांतिकारियों को सम्बोधित करते हुए कह रहे थे - एक स्वाभिमानी के लिए यही श्रेयस्कर है कि चंगुल में न फंसे, डटकर मुकाबला करते हुए अपने प्राणों की आहुति तो दे ही सकता है।

राजगुरु ने धधकते चूल्हे में संड़सी डाल ली। अपने आत्मविश्वास की परीक्षा लेने के लिए अंगारों के बीच पड़ी लाल हो गई संड़ासी से सात बार अपने सीने को दाग डाला। राजगुरु की खाल जल रही थी, लेकिन उफ न किया। राजगुरु को भी भगत सिंह के साथ फांसी दे दी गई थी।

पंजाब की विप्लवी योजना के विफल हो जाने के बाद भी क्रांतिकारी निराश न थे। बचे-खुचे लोगों ने पुनः नये सिरे से महान् यज्ञ का आयोजन शुरू कर दिया—चूंकि बिहार में संगठन की कमी थी लिहाज़ा श्री नलिनी बागची को भागलपुर के एक कालेज में पढ़ने के लिए भेजा गया—मोटे कपड़े का एक कुर्ता, फेंटदार धोती, टोपी उनकी पोशाक बनी। एक पक्का बिहारी बन बैठा। सरदार भगत सिंह का यह क्रांतिकारी साथी इतना चोला बदलने पर भी पुलिस की निगाहों से न बच सका। मजबूरन भागलपुर छोड़कर बंगाल चले गये। मगर वहां भी धर-पकड़ तेजी से चल रही थी। अतः नलिनी अपने चार साथियों के साथ गोहाटी जाकर किराये के मकान में रहने लगे। पुलिस से चौकस रहने व ध्येय से रिवाल्वर भर कर तकिये के नीचे रख कर सोया करते थे। एक एक करके चारों के चारों साथी मकान की खिड़की पर बारी-बारी से चौकीदारी किया करते।

पुलिस को पता चलते ही उस मकान पर छापा पड़ा। दोनों तरफ से गोलियाँ चलीं। चारों के चारो साथी पहाड़ियों में जा छिपे। हजारों सशस्त्र सिपाहियों ने पहाड़ी घेर ली। बन्दूकों की आवाज से आकाश गूंज उठा। इतनी ढेर-सी सशस्त्र सेना के सामने दो साथियों को शहीद होना पड़ा, लेकिन शेष दो बच निकले, जिनमें नलिनी बागची भी एक थे।

भूख-प्यास से पीड़ित नलिनी पहाड़ियों में ७ दिनों तक घूमते रहे, एक पहाड़ी कीड़ा अलग इनके चिपक गया था। पैदल चलते ये बिहार पहुंचे, मगर वहाँ इनकी सरगर्मी से तलाश थी अतः तुरन्त वहां से भागना पड़ा।

बंगाल से हावड़ा स्टेशन पहुंचने पर भी इन्हें कोई न दिखा। भूखे थे। ही कीड़े के कारण ज्वर ऊपर से था। भाग्यवश तभी एक साथी मिल गया। इनकी हालत नाजुक देखकर वह अपने घर ले गया। डाक्टरों से इलाज करना मौत को निमन्त्रण देना था इसलिए हल्दी और मट्ठे की मालिश शुरू हुई और धीरे-धीरे नलिनी ठीक होने लगे।

बाद में हावड़ा में किराये का मकान लिया और तरिणी मजूमदार के साथ रहने लगे। पुलिस ने पुनः छापा मारा। दोनों ओर से गोलियां चलती रहीं और अन्त में मजूमदार वीर गति को प्राप्त हुए। नलिनी घायल हो चुके थे। पुलिस के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अफसर ने कहा —आत्मसमर्पण कर दो। उत्तर में नलिनी ने रिवाल्वर से उस अफसर की टोपी उसके सिर से नीचे गिरा दी। गोली का जवाब गोली ही था। नलिनी घायल होकर गिर पड़े और गिरते ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

अस्पताल में पुलिस के जमाव के बीच खाट पर पड़े नलिनी से पूछा गया—तुम्हारा नाम ? कहां रहते हो ? तुम्हारे बाप क्या करते हैं ?

"डोंट डिस्टर्ब मी प्लीज" नलिनी ने कहा—'लैट मी डाई पीसफुली।'

'अन-आनर्ड अनसंग एण्ड अनवेप्ट शहीद होने वालों में नलिनी बागची आज भी याद किये जाते हैं।'

लाहौर लारेंस गार्डन के पास बम की टोपी अवध विहारी ने बसंत कुमार के साथ मिल कर लगायी थी। यू. पी. और पंजाब की अगुवाई इन्हीं के हाथ में थी। अमीर चन्द के मकान पर राजा बाजार कलकत्ता में इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था।

अवध विहारी को १३ अपराधों का अभियुक्त बताया गया था। यह इतने चतुर और बुद्धिमान् युवक थे कि जज ने अपने फैसले में साफ लिखा—'अवधबिहारी इज ओनली ट्वंटी-फाइव इयर्स ओल्ड, बट ही इज ए हाइली एजुकेटेड एण्ड इन्टैली जेंट मैन।'

फांसी चढ़ने से पहले अवधबिहारी से जब एक अंग्रेज ने उनकी अन्तिम इच्छा जाननी चाही तो उन्होंने कहा—'अंग्रेज साम्राज्य नष्ट भ्रष्ट हो जाय।'

अवधबिहारी प्रायः कहा करते थे—

अहसान नाखुदा के उठाये मेरी बला,
किश्ती खुदा पे छोड़ दूं, लंगर को तोड़ दूं।

हंसते-हंसते वन्देमातरम् गाते हुए फांसी के वक्त खुद कूद कर गले में रस्सी डालने वाले अवधबिहारी क्रांतिकारी भगत सिंह के उन साथियों में से थे जिन्होंने आजादी की लड़ाई में आहुति दी।

तीस नम्बर के रिसाले में १९०८ में तेईस वर्ष की आयु तक नौकरी करने के पश्चात् रंगा सिंह अमरीका चले गये थे। लेकिन १९१४ में अमरीका से बहुत-से सिख वापस आ रहे थे तो आप भी युद्ध में अंग्रेजों से दो-दो हाथ करने की आकांक्षा से अपने देश वापस आ गये। ●

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥
(श्रीमद्भगवद्गीता)

इस संसार में ज्ञान के सदृश पवित्र करने वाला अन्य कोई नहीं। श्रद्धावान् को ज्ञान मिलता है और उससे बढ़ कर उसे जिसका इन्द्रियों पर संयम है। ज्ञान के प्राप्त हो जाने पर परम शान्ति शीघ्र मिल जाती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिल्ली में जन स्वास्थ्य एवं चिकित्सा

जन्म एवं मृत्यु दर में कमी

पिछले कुछ वर्षों के दौरान दिल्ली वासियों के स्वास्थ्य की देखभाल और चिकित्सा की सुविधाएं काफी बढ़ा देने के कारण अब लोगों की आयु काफी बढ़ गई है।

शिशुओं की मृत्यु में भी काफी कमी हो गई है।

आपको और आपके बच्चों को स्वस्थ और दीर्घजीवी बनाने के प्रयत्नों में हमें आपका सहयोग चाहिए।

यदि आपके परिवार में कोई बच्चा जन्म लेता है या किसी की मृत्यु होती है तो इसकी सूचना जन्म-मृत्यु दर्ज वाले दफ्तरों में अवश्य दीजिये।

कानूनी तौर पर यह बहुत जरूरी है।

आपकी सुविधा के लिए दिल्ली के शहरी और देहाती इलाकों में जन्म-मृत्यु दर्ज करने वाले ३०० दफ्तर खोले गए हैं।

बच्चे के जन्म की सूचना १४ दिन के अन्दर और किसी की मृत्यु की सूचना सात दिन के अन्दर देनी जरूरी है।

जन्म और मृत्यु दर्ज कराने का सर्टिफिकेट आपको मुफ्त दिया जाएगा। सर्टिफिकेट लेना न भूलिये, यह आपके काम आएगा।

दिल्ली में किसी भी सरकारी मान्यता प्राप्त स्कूल में दाखिले के लिए जन्म का सर्टिफिकेट देना पड़ता है।

जो लोग जन्म और मृत्यु की सूचना समय पर नहीं देंगे उन पर ५० रुपये जुर्माना किया जा सकता है।

और अधिक जानकारी के लिए :

अर्थ एवं संख्या कार्यालय, दिल्ली प्रशासन, पुराना सचिवालय से सम्पर्क कीजिए।

सूचना एवं प्रचार निदेशालय द्वारा सार्वजनिक हित में प्रसारित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्व० गंगाप्रसाद उपाध्याय

एकता का प्रेरणा स्रोत : वेद

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥

(ऋग्वेद १०-१९१-२। अथर्ववेद ६-६४-१)
(तैत्तिरीय ब्राह्मण २-४-४-४)

अन्वय : हे मनुष्याः ! संगच्छध्वम् । संवदध्वम् । वः (युष्माकं) मनांसि संजानताम् । यथापूर्वे संजानानाः देवाः भागं उपासते ।

अर्थ : हे मनुष्यो ! तुम लोग (संगच्छध्वं) मिलकर चलो । (संवदध्वं) संवाद अर्थात् प्रेमपूर्वक आपस में बातें करो । (वः मनांसि) तुम्हारे मन मिलकर सत्यासत्य निर्णय के लिये (संजानताम्) विचार करें । जैसे (पूर्वे देवाः,) प्राचीन काल के विद्वान् लोग (संजानानाः) परस्पर विचार करके सत्यासत्य का निर्णय करके (भागं) अपने-अपने उपभोग के भाग को (उपासते) प्राप्त करते आये हैं । अर्थात् प्राचीन काल से विद्वानों की यह प्रथा चली आती है कि मन, वचन और कर्म से मिल कर रहें और प्रेम से निर्णय करके अपने-अपने हिस्से की चीजों का उपभोग करें ।

व्याख्या—इस वेद मंत्र में यह उपदेश दिया गया है कि मानव समाज का मूलाधार क्या हो और निर्मित समाज की रक्षा कैसे हो तथा इससे किस प्रकार अधिक से अधिक लाभ उठाया जा सके ।

'संगच्छध्वं', 'संवदध्वं' 'वः मनांसि' ये सब मध्यम पुरुष बहुवचन हैं । आप लोग या आप के मन ।" इससे स्पष्ट है कि यह ईश्वर की ओर से सब मनुष्यों के प्रति उपदेश है । या ऋषि, उपदेशक, औरआचार्य इस ईश्वर-उपदेश को जन साधारण के लिये व्यक्त करते हैं । यह मंत्र ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त में आया है इसलिये भी प्रतीत होता है कि समस्त वेद में जो कुछ अब तक उपदेश दिया गया उसका निचोड़ यह है कि मनुष्य समाज सर्वोत्कृष्ट हो । सम्बोधन मनुष्यों के प्रति है क्योंकि मनुष्य ही उपदेश को समझ सकते हैं और मनुष्यों के सामाजिक अनुशासन के द्वारा ही अन्य पशु-पक्षी लाभान्वित हो सकते हैं ।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी (Gregarious animal) है अर्थात् यह समूह में रहना पसन्द करता है । यों तो मनुष्य के अतिरिक्त हिरन, सूअर, बैल गाय आदि भी झुण्ड बना कर रहते हैं, कौवे, कबूतर, चींटियां, मधुमक्खियां झुण्डों में ही काम करती हैं । परन्तु मनुष्य समाज को बनाना और बनाकर उसे सुरक्षित रखना अत्यन्त कठिन है । इसके लिये बुद्धि पूर्वक योजनाओं की आवश्यकता पड़ती है । परन्तु मनुष्य समाज को ठीक रखने के लिये नित्यप्रति हर देश और हर भाषा में नवीन शास्त्र रचे जाते हैं और यह निर्णय नहीं हो पाता कि समाज के निर्माण का श्रेष्ठतम साधन क्या हो । मनुष्य के परस्पर मिलने के तीन रूप हैं । साथ चलना, मिलकर वार्तालाप करना और मिलकर सोचना । इनमें पहला स्थूलतम है और पिछला सूक्ष्मतम । 'गम्' धातु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से चलने के अर्थ में 'गच्छत' होना चाहिये था। परन्तु वेद ने 'गच्छत' (परस्मैपद) न कह कर आत्मनेपद 'गच्छध्वं' कहा और 'सं' उपसर्ग लगा कर अर्थों में विशेषता उत्पन्न कर दी। केवल इकट्ठे होने का नाम समाज नहीं है। लाखों मनुष्यों की भीड़ समाज नहीं है। दस आदमियों के सम्मिलन को भी समाज कह सकते हैं। यदि उसमें समाज के गुण हों। संस्कृत भाषा-विज्ञों ने 'समज'[1] और 'समाज' शब्दों के अर्थों में भेद किया है। यदि बहुत से पशु कहीं एक स्थान पर इकट्ठे हो जाते हैं तो उसको 'समाज' न कह कर 'समज' कहते हैं, 'समज' और 'समाज' के धातु तो एक ही हैं। परन्तु ये एक ही भाव के द्योतक नहीं। समाज के लिये योजना चाहिये।

"संगच्छध्वं।" हे लोगों, साथ चलो।" साथ कैसे चलें? सबकी चाल बराबर नहीं। कोई तेज चलता है, किसी की गति मन्द होती है। मन्द गति वाला तेज कैसे चलेगा? उसमें सामर्थ्य नहीं, वेग वाला अपने वेग को क्यों कम करदे? इसमें क्या लाभ? परन्तु यदि सब ऐसा ही सोचें तो कोई समाज बन ही न सकेगा और समाज के न बनने से व्यक्ति भी समुन्नत होने में अशक्त होंगे। क्या कोई बीच का मार्ग है? है अवश्य! किसी फौज को मार्च करते हुए देखिये! हजारों सैनिक हैं, उन सबकी शक्तियाँ समान नहीं। परन्तु उनका नियन्त्रण इस प्रकार का है कि जब एक का बायाँ पैर उठता है तभी सबका बायाँ पैर उठ जाता है। तेज चलने वाला सैनिक अपनी तेजी को रोकता है। सुस्त सैनिक कुछ विशेष यत्न करके तेज सैनिक का साथ देता है। तेज मनुष्य का आत्मनियन्त्रण सुस्त मनुष्य को प्रेरित करता है और उसके वेग में वृद्धि हो जाती है। यत्न और नियंत्रण दो साधन हैं संगमन या साथ चलने के। इनसे तेज और सुस्त दोनों को लाभ पहुंचता है। जो सेना इस शुभ गुण से सम्पन्न नहीं होती वह सेना नहीं कहलाती और न वह शत्रु पर विजय प्राप्त कर सकती है। आपने बड़े-बड़े मेलों में देख होगा कि पुलिस के नियंत्रित बीस आदमी लाखों की भीड़ को भगा देते हैं। अतः वेद मन्त्र इस बात पर बल देता है कि किसी जाति या समाज की उन्नति का स्तर मनुष्यों की गणना या संख्या पर निर्भर नहीं है। उनमें ऐसा नियंत्रण भी होना चाहिये कि वे परस्पर मिलकर अपनी गतियों को समन्वित कर सकें।

गतियों को समन्वित करने का साधन है संवाद या मिलकर स्नेह-युक्त बात करना। तेल या घी को संस्कृत में स्नेह कहते हैं और स्नेह नाम प्रेम का भी है। स्नेह-युक्त वाणी चलने में समन्वय उत्पन्न कर देती है। सेनापति की बायें-दायें (left, right) की आवाज सुनकर ही सैनिकों के पैर साथ-साथ पड़ने लगते हैं। ड्रिल के आदेश मानो संवाद ही हैं। बाप अपने छोटे से बच्चे को साथ लगाना चाहता है। बच्चा कहता है मैं तेज़ नहीं चल सकता। मुझ में सामर्थ्य नहीं। बाप उत्तर देता है, "बच्चे, कुछ बात नहीं। मैं मन्द गति से चलूंगा, तू मेरी उंगली पकड़ ले।" बच्चा कुछ अपनी गति तेज़ करता है। संवाद से प्रेरणा मिलती है। जो तुम्हारा परमशत्रु है उसके साथ भी संवाद करने से शत्रुता कम हो जाती है। वाणी पैरों की प्रेरिका है। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जो वाणी का ठीक-ठीक प्रयोग कर सकता है। पैर स्थूल हैं, वाणी सूक्ष्म है। परन्तु वाणी से भी सूक्ष्मतम है 'मन'। इसलिये वेद-मन्त्र कहता है

---

१. 'समज' और 'समाज'—देखो पाणिनि सूत्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि "वः मनांसि संजानताम् ।" तुम्हारे मन साथ मिलकर विचार करें। विचार सबसे प्रबल वस्तु है। अतः समाज निर्माण का सबसे उत्कृष्ट साधन परस्पर विचार करना है। झगड़ा विचारों के भेद से आरंभ होता है। मैं कुछ सोचता हूं। आप कुछ सोचते हैं तो बात-बात में झगड़ा हो जाता है। मत-भेद गालीगलौज की जड़ है। और जब वाग्-युद्ध आरंभ हो गया तो स्थूल युद्ध के होने में कोई देर नहीं लगती। कौरव-पाण्डवों के विचार भिन्न-भिन्न थे। अतः जब द्रौपदी ने ताना मारा कि अन्धों के अन्धे ही पैदा हुए तो कौरवों के हृदय में तीर-सा लगा और उन्होंने ठान ली कि चाहे जो कुछ हो पाण्डवों का नाश करना चाहिए। मत-भेद के कारण एक घर के लोग लड़ पड़ते हैं और घर नष्ट हो जाता है। छोटे-छोटे मत-भेद बड़े मत-भेदों को उत्पन्न कर देते हैं। और थोड़ी-सी बात पर बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ हो जाती हैं। अतः मनुष्य-समाज के निर्माण का सबसे बड़ा साधन है बैठकर विचार-विनिमय करना। सभायें इसीलिए बनाई जाती हैं कि भिन्न-भिन्न विचारों के लोग अपना-अपना दृष्टिकोण प्रकट करें। ऐसा करने से सन्धि का कोई न कोई उपाय निकल आता है। पहले से लड़ाई ठानने की इच्छा करने वाले लोग भी परस्पर विचार करने लगते हैं तो बहुधा अपनी ज़िद को छोड़ने के लिए उद्यत हो जाते हैं। राजनीति के क्षेत्र में परस्पर विचार-विनिमय (negotiations) को बहुत बड़ा महत्त्व दिया गया है। और संसार का इतिहास बताता है कि प्रायः जन-संहार को रोकने और मानव-समाज को सुरक्षित रखने में 'संवदध्वं' का उपदेश बड़े काम की चीज है।

जब मनुष्य परस्पर विचार करने लगता है तो उसको स्वहित और परहित के समन्वय का ज्ञान हो जाता है। प्रत्येक स्वार्थ में स्वलाभ के स्थान में स्वहानि छिपी रहती है। यदि विचार-विनिमय का अवसर मिले तो यह छिपी हुई हानि प्रकट हो जाती है और मनुष्य परहित के गौरव को भी अपने विचारों में स्थान देता है।

मंत्र के अन्तिम चरणों में उदाहरण देकर देव और साधारण मनुष्यों के कामों की शैली में भेद बताकर यह सिद्ध किया गया है कि एक मार्ग मूर्खों का है और दूसरा विद्वानों का। इस सृष्टि में हिस्सा तो सभी का है—मूर्खों का भी। दोनों प्रकार के लोगों को जीवन-यात्रा करनी है। दोनों को साधनों की आवश्यकता है। दोनों को भाग चाहिये। परन्तु विद्वानों और अविद्वानों में अपने-अपने भाग के प्राप्त करने के अपने-अपने ढंग हैं। "देवाः भाग यथा पूर्वे संजानाना उपासते" अर्थात् प्राचीन देवगण एक दूसरे की भावनाओं को समझकर उनका आदर करते हुए अपने भागों को प्राप्त करते चले आये हैं। यहां 'पूर्वे' (सर्वनाम) 'देवाः' का विशेषण है। परन्तु यह समस्त व्यापार की विशेषता प्रकट करता है। इसका अर्थ है "यथापूर्व।" अर्थात् आदिकाल से देवों का यह स्वभाव रहा है कि साथ चलें। साथ संवाद करें और साथ मिलकर विचार करें। मूर्ख केवल अपना हित देखता है। विद्वान् पराये हित में अपना हित समझता है। अतः जब वह दूसरों का हित करने लगता है तो दूसरे उसी का अनुकरण करके उसका हित करते हैं। अतः सर्वत्र सर्वथा और सर्वदा सब का हित होता है और समाज समुन्नत होता है। मूर्ख अपना हित चाहता है। औरों के साथ स्पर्धा, खींचातानी और संघर्ष चलता है। सब एक दूसरे को हानि पहुंचाने का यत्न करते हैं। हर तरफ से हानि पहुंचाने की प्रबल इच्छा और प्रयत्न हो तो समाज हानियों का मन्दिर बन जाता है। ऐसा समाज कैसे स्थापित और सुरक्षित रक्खा जा सकता है। शतपथ ब्राह्मण में इसी तथ्य को बड़ी उत्तमता से वर्णन किया है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देवाश्च वा असुराश्च । उभये प्राजापत्याः पस्पृधिरे । ततोऽसुरा अतिमानेनैव कस्मिन्नु वयं जुहूयामेति स्वेष्वेवास्येषु जुह्वतश्चेरुस्तेः अतिमानेनैव पराबभूवुः तस्मान्नातिमन्येत पराभवस्य हैतन्मुखं यदतिमानः ।

अथ देवाः । अन्योऽन्यस्मिनैव जुह्वतश्चेरुस्तेभ्यः प्रजापतिरात्मानं प्रददौ । यज्ञोहैषामास । यज्ञो ह देवानामन्नम्, (शतपथ ब्राह्मणम् । काण्ड ५, अध्याय १, ब्राह्मण १)

प्रजापति के दो सन्तान हैं अर्थात् देव और असुर । मनुष्यों की दो कोटियां सदा से प्रसिद्ध हैं । अच्छे या देव और बुरे या असुर । देवों और असुरों में कभी बनती नहीं । वे झगड़ने लगे । असुरों ने चाहा कि आहुतियां अपने-अपने मुंह में ही डालें । अतः वह नष्ट हो गये । क्योंकि 'अतिमान' अर्थात् स्वार्थ पराभव का मुख या हेतु है । देवों ने एक दूसरे के मुख में आहुतियां दीं । वे जीत गये । क्योंकि दूसरे की भलाई में तत्पर रहने का नाम ही यज्ञ है । यज्ञ उसी का है जो परहित की भावना रखता है । जो स्वार्थी है वह यज्ञ कर ही नहीं सकता । समाज का निर्माण यज्ञ से होता है । यज्ञ का अर्थ है परोपकार, इससे सब को अपना-अपना भाग मिल जाता है । यह देवों की प्रथा है, यही देव-मार्ग है ।

इतिहास इसी तथ्य का साक्षी है । वर्तमान भारतवर्ष के समक्ष दो इतिहास उपस्थित हैं, एक देवों का दूसरा असुरों का । रामायण पर दृष्टि डालिये । राजा दशरथ के चार पुत्र हैं । राज्य रूपी आहुति किसके मुख में डाली जाय । राम कहते हैं । भरत के मुख में । भरत कहते हैं राम के मुख में । परिणाम यह होता है कि राज्य सभी का हो जाता है और अनन्त काल तक समाज के लिए एक आदर्श बन जाता है । 'रामराज्य' के लिये आज भी लोग तड़पते हैं परन्तु हर एक राज्य को अपने ही मुख में डालना चाहता है । शतपथ की गाथा कहती है "पराभवस्य हैतन्मुखं यदतिमानं" । अतिमानः का अर्थ है अत्याचार । अत्याचार का अर्थ है स्वार्थ । जो भोजन पा जाओ उसको अपने मुख में ही डाल लो । यह तो रामराज्य नहीं होता । इसके विपरीत दूसरा उदाहरण है भारत के मुगल सम्राट् शाहजहां का । उसके भी चार लड़के थे और भारतवर्ष का बड़ा साम्राज्य था । चारों ने उसको हड़पने का यत्न किया । चारों ने अपने-अपने मुंह में आहुतियां डालीं । यह तो देवों की प्रथा नहीं थी । असुरों की प्रथा थी । शास्त्र की बात ठीक सिद्ध हुई कि अभिमान पराभव का मुख है । न केवल चारों पुत्र ही नष्ट हुए, मुगल राज्य की श्री सदा के लिये लोप हो गई और मानव जाति के इतिहास में एक बड़ी दूषित मिसाल छोड़ गई ।

हर घराने, हर सम्प्रदाय, हर जाति और हर देश में ऐसे उदाहरण मिलेंगे । तुलसीदास ठीक कहते हैं :—

जहां सुमति तहं सम्पति नाना ।
जहां कुमति तहं विपति निदाना ।

सुमति का अर्थ ही है "सं वो मनांसि जानताम्" । परस्पर मिल कर विचार करो । विचारों से वाणी शुद्ध बनेगी और वाणी से कार्यों में एकता आयेगी । ऋग्वेद के इसी अन्तिम सूक्त के अगले मन्त्रों में इसी मूल मंत्र के व्याख्या रूप उपांगों का वर्णन है जैसे "समानो मंत्रः" हमारे निर्णय समान हों । "समितिः समानी", सभा संयुक्त हो । समानं मनः (मन एक हो) । "सह चित्तमेषाम्' चिन्तन में समन्वय हो । "समानी वः आकूतिः" हमारी विचारधारा एक साथ चलने वाली हो । इत्यादि-इत्यादि ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुण्य तिथि ६ मार्च १९८०

पर श्रद्धांजलि

स्व० श्रीचिरंजीत राय साहनी की स्मृति में

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के भूतपूर्व प्रधान मंत्री, सतभ्रावाँ आर्य कन्या महाविद्यालय करौलबाग, दिल्ली के भूतपूर्व अवैतनिक प्रबन्धक तथा करौलबाग आर्य समाज के एक स्तम्भ, जिन का निधन ६ मार्च १९६४ को हुआ था।

वेला संकल्पों की आई

—राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट

उठो आर्यो ! निद्रात्यागो, युग की हुई पुकार है।
आज तुम्हारे दरवाजे पर दुश्मन की ललकार है।
धरती के प्रांगण में उठता आर्त्तनिनादों का क्रन्दन।
निर्भयता से होता देखो पशुता का तांडव नर्त्तन।
जाग उठे भारत माता के
वीर सपूतों की तरुणाई।
वेला संकल्पों की आई॥

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का गूंजे धरती पर जयघोष।
वेद ऋचाओं की गरिमा का हो भू पर फिर से उद्घोष।
मानवता के तत्त्वों का हो भूतल पर नूतन उन्मेष।
शांति-सफलता-समरसता की प्रगति धरा पर रहे विशेष।
पुनः यहां शिवरात्रि पधारी
लकर स्वर्णिम अरुणाई।
वेला संकल्पों की आई॥

वेद निरूपित बने हमारा मंगलकारी नवल समाज।
जन-जन में आह्लाद भरा हो सुन्दर-सा हो सतत स्वराज।
वर्णाश्रम की पुण्य व्यवस्था पुनः यहां संस्थापित हो।
शोषण-उत्पीड़न से कोई मनुज नहीं संतापित हो।
ऋषिवर दयानन्द ने अनुपम
जग में जाग्रत ज्योति जगाई।
वेला संकल्पों की आई॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरा गुरुवर मरा नहीं !

दयानंद हर प्यासे खातिर एक कुंआ था।
उसके दिल में उड़ता हर दम वेद धुंआ था।
दयानंद का मन तो पूरा वेद सदन था।
दयानंद का तन लाशों के लिए कफन था।
दयानंद का पीड़ित रोता हुआ नयन था।
दयानंद को फूल न समझो, पूर्ण चमन था।
राही ऐसा चलते-चलते राह हो गया।
अमृत बाँटा खुद विष पीकर स्याह हो गया।
खुशी लुटा दी स्वयं पीर से भर ली झोली।
मातम के आँगन में भी रच दी रंगोली।
वेद द्वार थे बन्द ढूंढ़ दीं उनकी ताली।
खण्डहरों में भी वह ले आया दीवाली।
दयानंद बढ़ते-बढ़ते खुद वतन हो गया।
करते करते हवन स्वयं ही हवन हो गया।
दयानंद को शब्द न समझो शब्द कोश था।
मदहोशों को सदा बांटता दिव्य होश था।
वृद्धों का विवेक युवकों के लिए जोश था।
अंगारों के साथ-साथ वह लिये ओस था।
दयानंद को ग्रहण न समझो, वह अर्पण था।
गुण-अवगुण दिखलाने वाला इक दर्पण था।
कितने ही संकट आये, वह डरा नहीं है।
सच कहती हूं मेरा गुरुवर मरा नहीं है।
दयानंद अब भी हर दुखिया में रोता है।
शिष्यों के झगड़ों का नित बोझा ढोता है।
हम चलते हैं तब-तब दयानंद चलता है।
हम रुकते हैं तब-तब दयानंद रुकता है।
इसी लिए मत रुको निरंतर चलते जाओ।
वेद शमा पर परवानों-से जलते जाओ।

— कु० ऋचा शांडिल्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वीरवर लेखराम से

—श्री उत्तमचन्द शरर,

क्या विचित्र विह्वलता लेकर तुम आये थे ?

(१)

दीपक पर जलते पतङ्ग को भी देखा है
लेखराम ! तेरी उमङ्ग को भी देखा है
वह जलता है पर जैसे कुछ सोच-सोचकर
दीपक के चहुं दिश मंडरा, साहस बटोरकर
पर तू सीधा दीपक की लौ से टकराया
क्या अरमान हृदय में जलने के पाये थे ?

(२)

विह्वलता जो रुकी न संघर्षों में जूझ कर
किया निमन्त्रित मृत्यु को भी जान-बूझ कर
जिसके वश हो विकल हृदय कुछ सोच न पाया
हंसते हंसते अन्धकार में कदम बढ़ाया
हृदय रक्त से सींच दिया उजड़े उपवन को
मृतकों में जीवन फूंका दे निज जीवन को
प्राणों में अङ्गार धधकते तुम लाये थे।

(३)

पुत्र मोह, जिससे दशरथ को मरते देखा
पुत्र मोह, मानव मन की कोमलतम रेखा
छोड़ न पाये थे प्रताप भी जिस ममता को
लेखराम ! तुम जीत गये उस दुर्बलता को
धन्य-धन्य कहता है युग तेरी श्रद्धा पर
अमर रहेगा नाम सदा जग की जिह्वा पर
दयानन्द के सैनिक तुम ही बन पाये थे
क्या विचित्र विह्वलता लेकर तुम आये थे ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्मवीर लेखराम

धुन के धनी त्याग की प्रतिमा देशभक्त बलिदानी का।
लेखराम है नाम देशहित अर्पित हुई जवानी का।

झुका दयानन्द के चरणों में झुकते-झुकते नमन बना।
एक बीज से वृक्ष, फूल-फल बढ़ते-बढ़ते चमन बना।
बना दिलासा दुखियों के हित, लाशों के हित कफन बना।
कर-कर सन्ध्या हवन देव का सारा जीवन हवन बना।

जिसको याद करेंगी सदियां ऐसी अमर कहानी का।
लेखराम ... ... ।

कुटिया में जन्मा, न बना वह महल किन्तु आकाश बना।
अपनी त्याग-तपस्या के बल पतझड़ से मधुमास बना।
घायल पावों की खातिर वह सदा मखमली घास बना।
चमत्कार है सचमुच यह तो एक शब्द इतिहास बना।

हर दिल में अंकित है गहरी, ऐसी अमर कहानी का।
लेखराम ... ... ।

'आर्य मुसाफिर' चलते-चलते हंसा राह-मंजिल बनकर।
डूब रहा भारत का बेड़ा, आया वह साहिल बनकर।
लाश पड़ी बेटे की घर में करने किन्तु प्रचार चला।
वेद ऋचा साकार हो गई, बन कर अमृत धार चला।

कैसे मोल चुका पावेंगे हम तेरी कुर्बानी का।
लेखराम ... ... ।

एक कली कैसे खिलती है, पूछो जाकर माली से।
वेद वाटिका रहे सींचते निज शोणित की लाली से।
पाखण्डों के ताले खोले निज साहस की ताली से।
धन्य हो गया सुमन सुमन उस माली की रखवाली से।

दयानन्द की सेना के निश्छल निर्भय सेनानी का।
लेखराम है नाम देशहित जलती हुई जवानी का।

—सारस्वतमोहन मनीषी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(६) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक, उन्नति करना।

(७) सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये।

(८) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना चाहिए।

(९) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

(१०) सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में तत्पर रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

इसके पश्चात् आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन होने प्रारम्भ हुए। एक दिन स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि वैदिक धर्म के प्रचार का महान कार्य हमारे इस जीवन में पूरा न होगा तो हम द्वितीय जन्म में इस कार्य को पूरा करेंगे इससे स्वामी जी का गम्भीर धैर्य व साहस भली प्रकार विदित होता है। स्वामी जी महाराज आर्यसमाज अनारकली में व्याख्यान दिया करते थे। एक दिन सब सभासदों की सम्मति से बाबू शारदा प्रसाद ने सर्वसाधारण के अधिवेशन में यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि स्वामी जी को समाज की ओर से रक्षक व शिक्षक का विशेष पद दिया जावे। सब सभासदों ने इस बात को स्वीकृत किया। उस समय स्वामी जी ने हंसकर कहा कि इस शब्द से गुरुपन की गंध आती है और मेरा उद्देश्य गुरुपन आदि पंथों के तोड़ने का है न कि मैं स्वयम् गुरु बनकर एक नवीन पन्थ स्थापना करने का आरम्भ करूं। इसके अतिरिक्त इस पदवी को स्वीकार करने पर यदि मुझे अभिमान आ जावे या मेरे स्थानापन्न को अहंकार हो जावे तो फिर तुम्हारे लिये बड़ी कठिनाई होगी और वही कुदशा भोगनी पड़ेगी जो अन्य नवीन मतवालों को उठानी पड़ती है। इसलिए यह कदापि नहीं होना चाहिए।

इस पर उक्त बाबू ने फिर हठ किया और कहा कि आप इस समाज के परम सहायक पद को ग्रहण कीजिए उन्होंने कहा कि यदि मैं परम सहायक बना तो बताओ सर्वशक्तिमान जगदीश्वर जगत् गुरु को तुम क्या कहोगे इसलिये यदि ऐसा ही है तो मेरा नाम समाज के सहायकों में लिख लीजिए। ब्रह्म समाज के रिसाला बिरादर हिन्द में १ जौलाई को जो स्वामी जी के विषय में लिखा है उसका संक्षेप हम यहां लिखते हैं "इनके विचार बहुत गम्भीर मस्तक इनका बहुत शुद्ध है जिसके कारण वह देश की उन्नति धार्मिक बल से करना चाहते हैं इसलिये वह मूर्तिपूजादि पौराणिक रीती को जिनसे इस देश की अधोगति हो रही है जड़ पेड़ से उखाड़ने के लिए प्रयत्न करते हैं अर्थात् प्रत्येक प्रकार की मूर्तिपूजा को मिटा परमेश्वर की स्तुति करना बतलाते हैं।

मुख्य कथन यह है कि यह महाशय देश की मूर्खता और द्वेषानल को दूरकर विद्या को फैलाकर सर्वसम्मति से कार्यों के प्रचार कराने में उद्यत हैं। प्रेरित पत्र कोहनूर ने २८ जौलाई १८७९ को यह प्रकाशित किया कि प्रथम दो तीन मास जो स्वामी दयानन्द सरस्वती जी उपदेश करते रहे उसके सुनने से मनुष्यों के चित्तों में जाति प्रेम इतना उमड़ा कि उन्होंने २४ जून को आर्यसमाज स्थापन कर लिया अब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाज के अनुमान ३०० सभासद हैं और दिन प्रतिदिन बढ़ते जाते हैं इस समाज का मुख्य उद्देश्य आर्यधर्म और वेदों की उन्नति और प्रचार करना है।

इसी विचार की पूर्ति के लिए अब एक पाठशाला संस्कृत और वेदों की शिक्षा के लिये खोली गई है जिसमें १०० विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं यह सब स्वामी जी के आगमन का फल है। इतिहास के देखने से प्रत्यक्ष प्रकट होता है कि २५०० वर्ष में स्वामी शंकराचार्य के पीछे कोई वेदवक्ता ऋषि, उपदेशक उत्पन्न नहीं हुआ जो सत् मार्ग बतलाता। यह अत्यन्त प्रसन्नता का अवसर है कि स्वामी जी सन्मार्ग पर चलाने के लिये पूर्णरूप से कटिबद्ध हो रहे हैं। ऐ आर्य धर्म के अनुयाइयो ! उन्मत्तता की निद्रा से अब क्यों नहीं जाग्रत होते। देखो धन्य है ईश्वर सच्चिदानन्द दयालु को जिसने वेदों का संस्कार प्रकट किया और धन्य आर्य लोग जो वेद के अनुयायी हुए वह वेद की शिक्षा के बल से बलवान और गुण से गुणवान हो प्रसन्नता से अपना समय व्यतीत कर भातृभाव से वर्त्ताव करते थे जिसकी यह पूर्ण साक्षी है। आदि सृष्टि संसार से राय पिथौरा के राज्य तक कोई अन्यजाति इस आर्यवर्त पर चढ़ाई न कर सकी।

परन्तु ऐ भाइयो ! जब से इस जाति ने अविद्या के कारण फूट में उन्नति की। उसी समय से महमूद गजनवी आदि ने चढ़ाई की। और अन्त को शाहबुद्दीन इस देश का राजा हो गया। जिस फूट का अन्तिम फल यह हुआ कि हमारे वैदिक धर्म कर्म और वेद सब लोप हो गये और वेद की शिक्षा तो ऐसी गुप्त हो गई कि यदि हम दीपक लेकर भी ढूढ़ें तो कहीं भी उसका खोज नहीं मिलता, परन्तु परमेश्वर सर्वशक्तिमान ने अपनी दया से हम लोगों की दुर्दशा देखकर स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज को उत्पन्न कर उनके हृदय में ईश्वर पूजा और वेद सिखलाने का बीज आरोपण किया और सामर्थ्य दी कि मनुष्य को मूर्ति और थोथी पूजाओं से हटाकर सब समुदाय को सत्य मार्ग पर लावें। हम स्वामी जी के अत्यन्त कृतज्ञ हैं कि जिन्हों ने अतीव क्लेश उठाकर वेदों की शिक्षा ग्रहण कर हमारे सन्मार्ग दिखलाने के लिए अपने अमूल्य जीवन को हमारे समर्पण किया जिससे आशा है कि जैसे-जैसे वह यत्न और उपाय कर रहे हैं यदि सब भारतवासी मिलकर मान्य करें तो एक दिन में ही निर्धनता और अविद्या की नाव पार हो जावे तो फिर वही वेदोक्त धर्म कर्म और ईश्वरीय पूजन जो किसी समय में ऋषिश्वर मुनीश्वर किया करते थे फिर आनकर प्रचलित हो जावे परन्तु शोक तो इस बात का है कि बहुधा लोग आप मूर्खता के कूप में गिरकर चकनाचूर हो औरों को भी निकलने से रोक रहे हैं।

मित्रो ! अब सत धर्म और सच्चे परमेश्वर की उपासना में लगकर मनुष्यमात्र को सन्मार्ग की शिक्षा दो। भ्रातृगणो ! मेरी सम्मति यह है कि फूट की जड़ को एक साथ उखाड़ कर वेदों की शिक्षा को सर्वत्र फैलाओ जैसा कि स्वामी जी महाराज ने उपदेश किया है मित्रो ! उसी के अनुकूल चलने से हमारी मुक्ति हो सकती है। स्वामी दयानन्द जी लाहौर में आर्यसमाज नियत कर गई कई बार समय-२ पर पंजाब के अन्य नगरों में भी उपदेश के लिये जाते रहे इधर उक्त समाज के सभासद अनेक प्रकार से उन्नति करने में लगे रहे, यहां तक २२ जोलाई १८७७ को लाहौर समाज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने एक संस्कृत पुस्तकालय खोला जिसके लिये लाला सांईदास स्वर्गवासी ने २००) रु० दान किये उन्हीं दिनों में स्वामी जी के पास कई एक मनुष्य उपासना और प्राणायाम सीखने के लिये जाया करते थे उनको बहुत लाभ हुआ था।

एक दिवस पादरी साहब मेम साहिब सहित स्वामी जी से मिलने गये वार्तालाप के मध्य में स्वामी जी ने कहा कि धन के अपरिमित होने से भी जाति की कुदशा का कारण होता है जैसे आर्यजाति का हुआ ऐसा ही अब अंग्रेजों का बिगड़ता जाता है। देखो प्रथम बहुधा अंग्रेज वायु सेवन को जाया करते थे परन्तु इस समय बहुधा दिन चढ़े तक सोते रहते हैं। इसी स्थान पर मिर्जा फतहवेग और स्वामी से वार्त्तालाप हुई थी जिसमें स्वामी जी ने उनके प्रश्नों का पूरा-पूरा उत्तर देकर यह सिद्ध करा दिया था कि वैदिक धर्म ही सच्चा और ईश्वरीय धर्म है।

एक दिन पंडित रामरखा जी ने स्वामी जी से यह प्रश्न किया कि सामवेद में भारद्वाज इत्यादि ऋषियों के नाम आते हैं इस से संदेह होता है कि वेद बहुत पीछे ऋषियों ने बनाये थे। इस के उत्तर में स्वामी जी ने बहुत से कण्ठाग्र अर्थ सहित वेद मंत्र "जिन में भारद्वाज इत्यादिकों के नाम आते थे" सुनाकर कहा कि इन स्थानों पर यह नाम किसी मनुष्य अथवा ऋषि के नहीं हैं किन्तु इन्हीं स्थानों से ऋषियों के नाम रक्खे गये हैं अर्थात् वेदों के मुख्य अर्थों को न जानने से यह भूल हो रही है। इस से पंडित जी की पूरी शांति हो गई। एक दिन विशप साहब स्वामी जी से आकर मिले और उन्होंने प्रश्न किया कि वेद के ऋषियों को ईश्वर के विषय में कुछ ज्ञात न था कि वह कौन है। प्रमाण के लिए एक मन्त्र दिखलाया जिसका मूलराज ने अंग्रेजी में अर्थ पढ़कर सुनाया तब स्वामी जी ने कहा कि यह अर्थ अशुद्ध है इसलिये आप को शंका हुई इस का अर्थ यह है कि सर्वव्यापक परमात्मा की हम उपासना करते हैं फिर विशप साहब ने कहा कि बाइबिल का बड़प्पन देखिये कि उसका उपदेश सूर्य्योदय से सूर्य्यास्त पर्यन्त फैला हुआ है। स्वामी जी ने कहा कि यह भी वेद का कारण है हम लोग उस धर्म को छोड़ बैठे हैं आप लोग ब्रह्मचर्य, विद्याध्ययन, एक स्त्री संग, दूरदेश यात्रा, देश भक्ति, इत्यादि रखते हैं इस वास्ते इतनी उन्नति हो रही है, हमारी जाति की भूल से ही वह आपकी उन्नति है। बाइबिल के कारण नहीं है।

स्वामी जी महाराज १२ अक्टूबर सन् १८७७ ई० को ब्रह्मसमाज के वार्षिकोत्सव पर दो तीन सौ सज्जनों सहित सम्मिलित हुए थे। और ६ नवम्बर सन् १८७७ को आर्यसमाज लाहौर की अंतरंग सभा ने जिसमें स्वामी जी भी विराजमान थे उपनियम बनाये जो इस समय भारतवर्ष की समाजों के उपनियम हैं।

अमृतसर में वैदिक धर्म प्रचार

स्वामी जी महाराज ५ जौलाई सन् १८७७ को अमृतसर पधारे सर्दार दयालसिंह मजिठिये ने कोठी मियाँ मुहम्मदजान की में ठहराया। नगर निवासी बड़ी रुचि और उत्साह से स्वामी जी के दर्शनों को आने लगे। प्रत्येक मनुष्य अपनी शंकाओं का समाधान करता। लोगों का प्रेम और उत्साह देखकर स्वामी जी ने व्याख्यान देने का आरम्भ कर दिया जो १२ दिसम्बर तक होते रहे कभी २ वह अवसर पाकर यहां से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाहौर आर्यसमाज की पुष्टि के लिए चले जाया करते थे। इन्हीं दिनों में स्वामी जी ने एक दिन घंटेघर में ठाकुर जन्म के विषय पर व्याख्यान दिया उस में कहा कि यह बात बनावट की है, लोग पत्थर को ठाकुर कहते हैं और अजन्मा का जन्म बतलाते हैं इस का वेद शास्त्र में कहीं पता नहीं, यह केवल भिक्षा मांगने वाले पेटार्थू लोगों ने लीलायें रची हैं इस व्याख्यान में नगरस्थ प्रतिष्ठित पुरुषों के अतिरिक्त असंख्य मनुष्य एकत्र थे जिस का प्रभाव यह हुआ कि बहुधा मनुष्यों की श्रद्धा मूर्ति पूजा से हट गई और सत्य वैदिक धर्म में उन की रुचि अधिक होने लगी यहां तक कि १२ अगस्त को सत् धर्म का बीज बोने के लिये मनुष्य उपस्थित हो गये।

जिस में बाबू शारदाप्रसाद भट्टाचार्य और लाला श्रीराम एम, ए, लाहौर से पधारे थे। प्रथम स्वामी जी ने हवन कराया फिर उपासना कराकर उपदेश दिया तत्पश्चात् बाबू शारदाप्रसाद भट्टाचार्य ने व्याख्यान दिया इस के अनन्तर आर्यसमाज स्थापित हुआ और पचास महाशय उसके सभासद बने जब लोगों ने पौराणिक पंडितों को लज्जित करना आरंभ कर दिया तब उन्होंने अमृतसर के प्रसिद्ध पंडित रामदत्त जी से निवेदन किया कि आप ही अब हमारी लज्जा को रखिए अर्थात् स्वामी जी से शास्त्रार्थ कर हमारी आजीविका की रक्षा कीजिए तब श्रीमान् ने स्पष्ट कह दिया कि मेरी सामर्थ्य नहीं है कि मैं स्वामी जी से शास्त्रार्थ कर सकूं परंतु जब उन्होंने न माना तो पंडित जी हरिद्वार को चले गये। एक दिन पंडित बिहारीलाल एकस्ट्रा असिस्टेण्ट कमिश्नर ने स्वामी जी से प्रार्थना की थी कि यदि आप मूर्तिपूजा का खण्डन न करें तो यहां सब जन आप के सहायक हो जावें इस पर स्वामी जी ने स्पष्ट कहा कि मैं सत्य को हाथ से नहीं दिया चाहता मुझ को किसी पुरुष की सहायता की आवश्यकता नहीं मेरा काम यही है कि है स्वयम् वेदों की आज्ञा को मान और अन्य भाइयों को पालन कराऊं।

द्वितीय पण्डित तुलसीराम जी स्वामी जी से बाजार में मिले और उन को गाड़ी से उतार अपनी बैठक में लेजाकर उनकी बड़ी स्तुति कर कहा कि आप विद्या के सूर्य्य हैं मेरी आत्मा आपको धन्यवाद देती है ऐसा कहकर मिश्री के कूजे और २) भेंट दे बड़ी नम्रता से स्वामी जी को विदा किया जिस की चर्चा सम्पूर्ण नगर में फैल गई। स्वामी जी के उपदेशों में सर्व साधारण मनुष्यों के अतिरिक्त प्रतिष्ठित पुरुष भी आया करते थे समस्त नगर के प्रत्येक घर २ में स्वामी जी के धर्म उपदेश की चर्चा फैल रही थी यहाँ तक कि एचपरकेन्स साहिब कमिश्नर अमृतसर को मिलने की अभिलाषा उत्पन्न हुई। स्वामी जी लाला गुरमुखराय जी वकील के कहने पर उक्त साहिब से मिलने को गये वहां निम्नलिखित वार्तालाप हुआ कमिश्नर साहब—ने कहा कि हिंदुओं का मत क्यों सूत के धागे के समान कच्चा है स्वामी जी ने कहा कि यह मत सूत के धागे के समान कच्चा नहीं है वरन् लोहे से भी बढ़कर पक्का है लोहा टूट जाय तो टूट जाय परन्तु यह कभी नहीं टूटता कमिश्नर साहब ने कहा कि आप कोई उदाहरण दें तो विश्वास हो सकता है।

स्वामी जी ने कहा कि हिन्दू धर्म समुद्र समान है जिस प्रकार उस में अगणित लहरें आती हैं। इसी भांति इस धर्म के असंख्य मत हैं देखिये एक वह मत है जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छान २ कर पानी पीते हैं जिसमें सूक्ष्म जीव पेट में न चले जावें। एक मत में केवल दूध ही पीते हैं। एक वाममार्गी मत है जो पवित्र व अपवित्र के बिना विचारे सबका भक्षण करते हैं। एक मत ऐसा है जो आयु पर्यंत जितेन्द्रिय रहते हैं। एक मत ऐसा है जो अन्य स्त्रियों से मुख काला करते हैं। एक मतवाले निराकार को पूजते हैं। एक अवतारों को मानते हैं। एक ज्ञानी। एक ध्यानी। एक शूद्रों के हाथ का जल तक नहीं पीते। एक शूद्रों से भोजन बनवाकर खाते हैं। इस पर भी सब हिंदू कहलाते हैं। और कोई उन को हिंदू धर्म से निकाल नही सकता अब कहिये कि हिन्दू मत पक्का कि कच्चा।

कमिश्नर साहब आप किस प्रकार का मत बढ़ाना चाहते हैं स्वामी जी हम केवल यह चाहते हैं कि मनुष्य वेद की आज्ञा का पालन करें और निराकार अद्वितीय की पूजा और उपासना, शुभगुणों को ग्रहण करें और अवगुणों को छोड़ें। इस नगर में लाला मनसुखराय का पुत्र जो किसी को अपना गुरु नहीं बनाना चाहता था जब उसने स्वामी जी के उपदेश सुने तब तो उन्हीं से दीक्षा ली और गुरु मन्त्र पूछा उन्हों ने कहा कि गायत्री ही गुरु मन्त्र है।

द्वितीयबार १५ मई सन् १८७८ से ११ जौलाई सन् १८७८ तक

द्वितीयबार स्वामी जी रावलपिंडी आदि नगरों में उपदेश करते हुए १५ मई को अमृतसर पधारे और सरदार भगवानसिंह के बाग में निवास कर मलोई बंगले में व्याख्यान देने का आरम्भ कर दिया। एक नोटिस नगरस्थ पण्डितों को दिया था कि यदि मेरी कोई बात वेद विरुद्ध आप समझते हों तो आकर निर्णय कर लीजिये नहीं तो धर्म कार्य्य में सहायता कीजिए। इस में कई दिन तक तो परस्पर नियम और शास्त्रार्थ की निश्चिन्ती के लिये नोटिस निकलते रहे अन्त को सर्दार भगवानसिंह का तबेला नियत हुआ। पांच सहस्र मनुष्य शास्त्रार्थ देखने और सुनने के लिये आये जब शास्त्रार्थ का समय व्यतीत हो गया तो स्वामी जी ने व्याख्यान देना स्वीकार किया। इतने में बाबू मोहनलाल वकील आये और उन्हों ने कहा कि मैं पण्डितों का वकील हूं वह भी आना चाहते हैं बड़ी धूमधाम से जै २ शब्द करते हुए सभा में पधारे। प्रथम पण्डित चन्द्रभानु को शास्त्रार्थ के नियम दिये उन पर वाद विवाद होने लगा और दुष्टों ने ईंट ढेले फेंकने आरम्भ कर दिये। स्वामी जी बच गये परन्तु ईंट और रोड़ों ने सभा को छिन्न भिन्न कर दिया और कुछ झगड़ा बढ़ा जो कठिनाई से रोका गया। द्वितीय दिन बाबू मोहनलाल को विज्ञापन दिया उन्हों ने लिखा कि मैं उसी समय का वकील था अब कुछ सम्बन्ध नहीं पण्डित आपस में झगड़ते हैं शास्त्रार्थ करना नहीं चाहते। इस के पीछे स्वामी जी २० दिन तक रहे और कोई शास्त्रार्थ को न आया तब सब वृत्तान्त मुद्रित कराकर वितीर्ण किया गया इस के अतिरिक्त इस नगर के पादरियों ने प्रथम खड्गसिंह को बुलाया जो स्वामी जी के सन्मुख जाते ही उन के पक्ष की पुष्टि करने लगे तब उन्हों ने डाक्टर के० एम० बेनर जी के लिए कलकत्ते को तार दिया उन्हों ने स्वीकार कर लिया परन्तु लड़की की बीमारी का बहाना कर न आये इस पर बहुत से मनुष्य ईसाई धर्म को छोड़ कर समाज के मेम्बर हो गये। एक पादरी ने स्वामी जी से कहा था कि हम और आप एक मेज पर खावें इस से प्रेम बढ़ेगा स्वामी जी ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहा कि यदि यह सत्य है तो सिया, सुन्नी, रूसी और इंगलैण्ड वाले और तुम और रोमन कैथोलिक एकमत के होकर एक मेज पर खाते हो तो भी तुम एक दूसरे के शत्रु हो फिर हम से और दूसरे धर्मवालों से क्यों कर प्रीति हो सक्ती है। पादरी साहब चुप हो गये।

कवि वचन सुधा नंबरी ३१ ता० १७ जून स्वामी जी के विषय में लेख मुद्रित हुआ है हम उसका संक्षेप लिखते हैं।

स्वामी जी पंजाब के मुख्य नगरों में भ्रमण कर उपदेश कर रहे हैं मैंने उन के कथित वाक्यों को सुना तो प्रकट हुआ कि पुराण और तान्त्रिक ग्रन्थों को अप्रमाण मानते हैं प्रतिमापूजन को असत्य कर्म ठहराते हैं वेद का अधिकार सब को देते हैं इन की वक्तृता बुद्धि और युक्ति पूर्वक होती हैं जिस नगर में वह जाते हैं कुछ न कुछ मनुष्य उन की ओर चले जाते हैं मुझे इस का बड़ा शोक है कि सनातन धर्म के बड़े२ पण्डित उनकी बातों का वेद से कोई प्रमाण नहीं देते और राजा लोग भी इस की ओर कुछ ध्यान नहीं देते फिर बताओ धर्म क्यों कर बचे।

गुरदासपुर के समाचार

स्वामीजी के व्याख्यानों की प्रशंसा डा० बिहारीलालजी असिस्टेंट सरजन के द्वारा सुन ला० हंसराज साहिनी व ला० गुरुचरणदासजी को अति अभिलाषा उन के दर्शनों और व्याख्यानों के सुनने की हुई इस लिए उपरोक्त तीनों सज्जनों ने गुरदासपुर आने के लिए यत्न किया जिस पर उक्त स्वामी जी १८ अगस्त को गुरदासपुर में, डाक्टर साहिब के स्थान पर सुशोभित हो प्रतिदिन व्याख्यान देने लगे। जिस में एक सहस्र के लगभग प्रतिष्ठित, पदाधिकारी और साधारण पुरुष रुचिपूर्वक सम्मिलित होते और व्याख्यान के उपरान्त बहुधा मनुष्य शंका समाधानार्थ स्वामी की के पास जाया करते थे। स्वामी की के मूर्तिपूजादि के खण्डन से अप्रसन्न होकर मियां हरीसिंह और शेर-सिंह मूर्तिपूजकों ने "जो उन दिनों पदाधिकारी थे" स्वामी गणेशगिरि प्रसिद्ध विद्वान् से शास्त्रार्थ के लिये कहा जिन्हों ने उस के उत्तर में 'कहा कि हम साधू और विरक्त हैं हम को शास्त्रार्थ से क्या प्रयोजन और न मैं उन के योग्य हूं इस पर भी जब उन को बहुत छेड़ा तो उन्हों ने वेधड़क कह दिया कि यदि हम को क्लेशित करोगे तो यहां से चले जावेंगे पुनः उक्त सर्दारों ने पण्डित लक्ष्मीधर व पण्डित दौलतराम को दीनानगर से बुलाया और वह व्याख्यानों में पधारे उस समय स्वामी जी शिव-पुराण के खण्डन पर व्याख्यान कर रहे थे उस में उन्हों ने महादेव के लिङ्ग के बढ़ने की कहानी "जिस को ब्रह्मा विष्णु उस के नापने को दौड़े" सुनाई थी। व्याख्यान को बीच ही से समाप्त कर विपक्षी पण्डितों से शास्त्रार्थ होना आरम्भ हुआ और उन्हों ने गणानान्त्वा इत्यादि मंत्र पढ़कर कहा कि इससे गणेशपूजा सिद्ध होती है स्वामी की ने कहा किसी भाष्य का प्रमाण दीजिए। तब उन्हों ने महीधर भाष्य का नाम लिया, स्वामी जी ने उसको निकालकर और उस के घृणित भाष्य को सुनाकर कहा कि इस से मूर्तिपूजा सिद्ध नहीं होती और न गणेश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूजा फिर उन्हों ने सनातन निरुक्त आदि के प्रमाण से उस के शुद्ध अर्थों को सुनाकर कहा कि यहां मूर्तिपूजा से कोई सम्बन्ध नहीं है जिस पर उक्त सरदार लोगों ने अप्रसन्न होकर कहा कि अंग्रेजी राज्य है नहीं तो कोई आपका सिर काट डालता। परन्तु वह धर्मवीर "जिस की नसों के भीतर धर्म का रक्त उमग रहा था" निर्भय होकर खण्डन करता रहा। डाक्टर बिहारीलाल जी को भी जोश आ गया जिस से परस्पर विवाद हो गया और ९ बजे रात के सभा विसर्जन हुई, एक दिन श्राद्ध खण्डन करते हुए स्वामी जी ने कहा कि ब्राह्मण पित्रों को तिल और जौ देते हैं और आप खीर और लड्डू उड़ाते हैं फिर किसी दूसरे व्याख्यान में उन्हों ने यह भी कहा कि हिन्दू तो सिर्फ एक छोटी सी चुहिया को पूजते हैं और मुसल्मान उस से बड़े मूर्ति पूजक हैं अर्थात् बिल्ली को पूजते हैं क्योंकि सालिग्राम एक छोटी सी वस्तु है और मक्के का बुतखाना बहुत बड़ा है। इस स्थान पर स्वामी जी के व्याख्यानों का यह प्रभाव हुआ कि धर्मोत्साही सुजनों ने स्वामी जी की उपस्थिति ही में २४ अगस्त सन् १८७७ को आर्य्यसमाज स्थापन कर लिया जिस के प्रधान मुंशी सूर्य्यशरण मुंसिफ और मंत्री दीवान कृष्ण दास नियत हुए। स्वामी जी यहाँ से चल पटियाले में एक घंटा ठहर कर अमृतसर को चले गये।

जालंधर समाचार

जब स्वामी जी बंबई में सुशोभित थे तब सर्दार विक्रमानसिंह व सरदार सुचेत-सिंह स्वामी जी से मिले थे और दर्बार कैसरी में उक्त सर्दारों ने स्वामी जी से पंजाब में पधारने और सदुपदेश के लिये निवेदन किया था। स्वामी जी प्रथम बार १ अप्रैल को जालंधर आये और सरदार सुचेतसिंह की हवेली में एक रात्रि निवासकर लाहौर की ओर चले गये। द्वितीयबार १३ सितम्बर सन् १८७७ तदनुसार भादों ६ सम्वत् १९३४ को अमृतसर से चलकर जालन्धर में सरदार सुचेतसिंह की कोठी में उतरे। प्रातः सृष्टि उत्पत्ति पर व्याख्यान हुआ जिस में उन्होंने यह भी वर्णन किया था कि सृष्टि की आदि में प्रथम तरुण पुरुष उत्पन्न हुए थे यदि वह बालक वृद्ध बनाता तो काम न कर सकते। इस व्याख्यान में मनुष्यों से सब छत और सहन भर गया था इस लिये दूसरे दिन से सरदार विक्रमानसिंह की हवेली में व्याख्यान होने लगे। इस नगर में स्वामी जी ने अनुमान ४० व्याख्यान आवश्यक विषयों पर दिये। एक बार स्वामी जी ने राजा और पुरोहित का दृष्टांत इस प्रकार से दिया कि एक राजा का मन बैंगन खाने को चला। पुरोहित ने कहा कि महाराज बड़ी उत्तम वस्तु है देखिये रंग श्याम कृष्ण की भांति, मुख में बांसुरी सिर पर मोर मुकुट, और नाम कैसा कि बहुगुन राजा जी अत्यन्त प्रसन्न हो खाने लगे यहां तक कि खून आने लगा और बवासीर हो गई जिस से उन की दशा कुदशा हो गई और कहने लगे कि पुरोहित जी बैंगन तो बड़ी बुरी वस्तु है। पुरोहित जी ने कहा कि महाराज आप सच कहते हैं। देखिये इसका रंग काला मानो हबशी या भंगी, शिर पर खूंटी, कांटों का मुकुट अत्यन्त बुरी दशा, बीज ऐसे जैसे किसी को कोढ़ हो जाय नाम भी बहुत बुरा अर्थात् बेगुन। एक बार दिल्ली की मिठाई का उदाहरण देकर कहा कि तुम भाव क्या पूछते हो खाये जाओ यही दशा झूंठ के प्रचार की है। इसी प्रकार अंधेर नगरी का दृष्टान्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिया कि जिस में चोर के पलटे मूर्ख राजा को फांसी मिली और "अंधर नगरी चौपट राजा टका सेर भाजी टका सेर खाजा"। मुक्ति के व्याख्यान में यह भी कहा था कि लोग कहते हैं कि जीव ब्रह्म एक हो जाते हैं यह ठीक नहीं है पिता और पुत्र का सम्बन्ध हो जाना ही मोक्ष है मोक्ष में जीव आनन्द भोगता है और एक कल्प के पश्चात् आकर जन्म लेता है और परस्वार्थ करता है और कृष्ण इत्यादि भी मोक्ष से लौटकर आये थे। मद्य और मांस के खंडन करते समय उन्होंने बतलाया था कि इस के खान पान से परमाणु बिगड़ जाते हैं जिस से आत्मा और शरीर दोनों की हानि होती है वह योग विद्या में पूर्ण उन्नति नहीं कर सकते और न उनको कोई सिद्धि प्राप्त हो सकती है अर्थात् वह ईश्वरीय पूर्ण ज्ञान से वंचित रहते हैं इस कारण ऐसी हानिकारक वस्तु को कदापि न खाना चाहिये।

एक दिन एक राजा की कहानी भी सुनाई थी कि वह देहली गया था वहां उसे एक मनुष्य मिला कि महाराज मुझे एक ऐसा वस्त्र बनाना आता है कि जो उसे पहिने वह किसी को दृष्टि न आवे परन्तु जो हराम का होगा उस को दृष्टि आयेगा। राजा ने कहा कि क्या लेगा उसने कहा कि बीस हजार। अन्त को दस हजार ठहरे पाँच हजार पहिले ले लिए और कई महीने में वह वस्त्र बने। राजा ने उसको बुलाकर कहा कि लाओ उत्तर दिया कि लाया हूं राजा साहिब ने कहा कि हमको वह वस्त्र दृष्टि नहीं आते तब उसने उत्तर दिया कि महाराज यदि दृष्टि ही आजावें तो उन की प्रशंसा ही क्या है! आप भीतर चलें मैं पहिनाये देता हूं भीतर लेजाकर राजासाहिब के सब कपड़े उतरवा कर नंगा कर दिया और फिर झूंठ मूठ पगड़ी कुरता, पायजामा, डुपट्टा, कह २ कर सब वस्त्र पहिना दिये इस प्रकार बिल्कुल नंगे राजा साहिब कचहरी में आये।

एक मंत्री ने "जो बुद्धिमान् था" जब देखा तो बहुत लज्जित हो कहा कि यदि किसी राजा का दूत आजावे तो क्या कहेगा तब वजीर ने राजा से कहा कि सब वस्त्र दिल्ली के पहिने रहिये केवल लंगोटी देशी पहिन लीजिये कि जिस से यह नंगा-पन बुरा न मालूम हो राजा साहब ने कहा कि क्या हम नंग हैं उसने कहा कि हाँ श्रीमान् तब राजा साहब ने बड़ी कठिनाई से स्वीकार किया और कहा कि उस ठग ने हमें धोका दिया यही दशा आज कल के राजाओं की है।

एक दिन एक व्याख्यान में पंडित श्रद्धाराम फल्लोरी कंठी और तिलक लगाये हुए बैठे थे स्वामी जी ने कहा कि एक बटोही मार्ग में मर गया कौवे ने उस के माथे पर बीट कर दी उधर यमदूत आये इधर विष्णु के गण इन में झगड़ा हुआ अन्त में विष्णु के गण उस को बैकुण्ठ ले गये भला जब इन कण्ठी तिलकों से पुलिस का सिपाही तो डरता ही नहीं फिर यमदूत कैसे डर गये। इस पर श्रद्धाराम जी ने अप्रसन्न होकर ठाकुरद्वारे में व्याख्यान दिया और कहा कि जैसे कोई बच्चों को लड्डू देकर उन के आभूषण उतार लेता है इसी भांति स्वामी जी ठगते हैं। एक दिन व्याख्यान देते समय एक शंख और घड़ियाल बजा तब उन्होंने कहा कि देखो यह औरतों के बुलाने का विगुल है साधु लोग बच्चों को परसादी का स्वाद व बर्फी की चाट डाल देते इस लिए जब घड़ियाल बजता है तो बच्चा कहता है कि मा चल आरती देखें घड़ियाल सुनें परन्तु उस बच्चे को यह ज्ञात नहीं कि वहां मां की क्या कुदशा होगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक दिन के व्याख्यान में जब कि राजा विक्रयानसिंह जा बैठे हुए थे स्वामी जी ने कहा कि जो राजा होकर कंजरी (रंडी) रखता है वह कंजर है इस पर राजा साहब ने स्वामी जी से एकान्त में कहा कि आपने तो हम से भी कहा स्वामी जी ने उत्तर दिया कि हम तो सब से स्पष्ट कहते हैं धर्म के विषय में पक्षपात करना ठीक नहीं। मृतक श्राद्ध खण्डन करते हुए कहा था कि अग्निष्वात्ता इत्यादि शब्दों के अर्थ यदि अग्नि से जले हुए के माने जावें तो वह आ नहीं सक्ते इसी प्रकार जो चौबीस वर्ष तक विद्या पढ़े वह पिता और तेंतीस वर्ष तक शिक्षा पावे वह पर पितामह और जो ४८ वर्ष तक शिक्षा पावे वह परपितामह कहाते हैं। देखो (मनुस्मृति अ० ३) इस लिए यह तीनों जीते हुओं के नाम हैं मरे हुंओं के नहीं। इस के उपरान्त जब पिंड की वेदी बनाते हैं तब उसके ओर पास निम्नलिखित मंत्र पढ़ लकीर फेर देते हैं।

ये रुपाणि प्रतिमुंचमाणा असुराः संतिसुधाचरंति परापरो निपरो अग्निष्टान् लोकान् प्रादुतमात् प्रीणा हिनः ॥

जिसका प्रयोजन यह है कि भूतप्रेत उस के निकट न आवें परन्तु विचार दृष्टि से नहीं देखते कि भूत प्रेत ही कोई वस्तु नहीं फिर निकट कौन आता है इस के अनन्तर इस मन्त्र के पढ़ने से मक्खी तक नहीं उड़ती तो भूत प्रेत क्यों उड़ जाते हैं इस लिये यह सब मिथ्या है। पितृ शब्द के अर्थ व्याकरण की रीति से पालना और रक्षा करने वालों के हैं। जो जीवित ही पुरुषों में घट सकते हैं। एक दिन काशी की विचित्र लीला का अच्छे प्रकार खण्डन कर उस की दुर्दशा को दर्शाया बहुधा लोग जो कहते हैं कि पंच कोश के किए गए पाप अमुक स्थान पर और अमुक स्थान के पाप अमुक मंदिर में और वहां के शिवाय नमः कहने से दूर हो जाते हैं यह महा गप्पें हैं। पाप शुद्ध संकल्प और तप करने और फल भोगने से दूर होते हैं। लाला हर-नरायन व बा० हेमराज जी ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि आप ईश्वर को निराकर मानते हैं। परन्तु वेद मुख, लेखनी, दवात की स्याही और वाणी के बिना रचे नहीं जाते तो फिर ईश्वर ने किस प्रकार बनाये। स्वामी जी ने कहा कि तुम अपने चित्त में कुछ पढ़ो उसने पढ़ा स्वामी जी ने कहा तुम तो पढ़ सकते हो तो क्या ईश्वर ऐसा भी नहीं कर सकता। २४ सितम्बर को सात बजे प्रातः अहमद हुसेन मौलबी का शास्त्रार्थ उक्त सरदार जी के सन्मुख हुआ जिस का सम्पूर्ण बृत्तान्त मिर्जा मुहम्मद प्रोप्राइटर सम्पादक वजीरहिन्द ने पुस्तकाकार छपवा दिया है।

छावनी फीरोजपुर।

यहां की हिंदू सभा के सभासद बाबू रघुवंशसहाय ने लाहौर से आकर कहा कि एक स्वामी जी लाहौर में आये हैं जो मूर्तिपूजा का खण्डन और वेद शास्त्र का बड़प्पन सम्पूर्ण मतों की माननीय पुस्तकों से सिद्ध करते हैं। इस लिये वहां के विद्वान् लोग उन की ओर होते चले जाते हैं। क्या अच्छा हो कि यह सभा भी उन्हीं के नियमों पर कार्य करना आरम्भ कर दे। लाला मथुरादास जी प्रधान सभा को स्वामी जी के दर्शनों की बड़ी अभिलाषा हुई उन्होंने गोविंदलाल कायस्थ को लाहौर स्वामी जी के लेने को भेजा वह अक्टूबर को फीरोजपुर आये और लाला बिहारीलाल की कोठी में ठहरे। जहां उन के आठ व्याख्यान बड़ी उत्तम रीति से हुए। जहां उन्हों ने यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उदाहरण भी दिया था कि एक राजा के यहां एक कोठारी जो थे जा कोई पंडित राजा के समीप जाना चाहता तो वह प्रथम कोठारी जी के पास जा कर सहायता मांग उनसे कहता कि मैं कुछ पढ़ा लिखा नहीं हूं तब कोठारी जी कहते कि इस की कुछ आवश्यकता नहीं अपना भाग ठहराकर कह देते जो तुम्हारे मन में आवे सो कहकर जप करो।

परन्तु गोमुखी और माला अवश्य होनी चाहिए उस ने इन दोनों वस्तुओं को ले एक स्थान पर बैठकर "राजा का जप करूं" यह कहकर जप करने लगा इस भांति दूसरा पण्डित भी वहां पहुंचा और उस के जाप को सुन यह "जो तू करे सो मैं करूं" जपने लगा फिर तीसरा विद्वान् पंडित वहां पहुचा दोनों के जप को सुन चकित हो यह कहना आरम्भ किया "यह बनेगी कब तक" फिर चौथे भी पहुंचे और उन्हों ने कहा "जब तक बनेगी तब तक" यह कहकर बताया कि वर्तमान समय के ब्राह्मणों की ऐसी कुदशा हो रही है जो यथार्थ में जानते भी हैं वह अविद्या में फंसे चले जाते हैं। स्वामी जी के व्याख्यानों का फल यह हुआ कि हिन्दू सभा आर्यसमाज के नाम से रीत्यनुसार कार्य्य करने लगी।

एक दिन व्याख्यान देने के पश्चात् स्वामी जी ने नियमानुसार सर्वसज्जनों को सूचना दी जिस किसी को कुछ शंका हो तो कर के निवृत्ति करले अथवा कोई महाशय कुछ पूछना चाहें तो पूछलें। परंतु कोई न उठा। तब महतीराम दफ्तरी ने खड़े होकर कहा कि ज्ञान कर ज्ञान को खंडन कर खेल चौगान मैदान में। इतने में स्वामी जी ने कहा अब इस का अर्थ करलो फिर आगे को पढ़ना। वह अर्थ करने में सकुचा तब स्वामी जी ने कहा कि प्रथम कुछ लिख पढ़ फिर लिखा पढ़ा सब भूल मैदान में जा गिल्ली डंडा खेला कर। इसको सुन महतीराम लाल पीला हो बोला कि आप ने चाहे कितनी विद्या पढ़ली हो परन्तु अभी आप संतों के रहस्य को नहीं समझते। फिर उसने स्वामीजी से पूछा कि आपका गुरू कौन है? उन्हों ने कहा कि वेद। जिसको सुन वह चुप होकर बैठ गया।

एक दिन रघुनाथ पुजारी स्वामी जी के पास गये उन्हों ने कहा कि पुजारी शब्द का अर्थ करो वह कुछ न बोला तब स्वामी जी ने कहा कि यह शब्द पूजा और अरी से मिलकर बना है जिस के अर्थ पूजा के शत्रु हैं। फिर रघुनाथ ने कहा कि महाराज सब शास्त्र वेद के सहारे से बने हैं। स्वामी जी ने कहा कि ठीक है परन्तु जिस प्रकार थैली के रुपये खरे और खोटे का जानना सर्राफ का काम है इसी प्रकार सत असत का निर्णय करना विद्वानों का काम है।

रावलपिण्डी—स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यान लाहौर नगर में राय बहादुर सरदार सुजानसिंह साहब रईस रावलपिण्डी ने सुन अपने नगर में जाकर नामधारी संस्कृतज्ञों से चर्चा किया था कि लाहौर में उपरोक्त नाम के एक ऐसे महात्मा आये हैं जो वेद शास्त्रों से मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध का खण्डन करते हैं जिसको सुन लोगों ने सरदार साहब से कहा कि ऐसा हो नहीं सकता, यह बातें सनातन चली जाती है जिस पर सरदार साहब ने कहा कि यदि आप को इस के सिद्ध करने की योग्यता है तो आप प्रमाण सहित लिखकर हमको दीजिये हम स्वामीजी के पास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भेज देंगे निदान कुछ पुराणों के श्लोक लिख कर सरदार साहब को दिये जिस को उन्होंने स्वामी जी के पास भेज दिया स्वामी जी पढ़कर हंसे और सरदार साहब को लिख भेजा कि हम स्वयं आकर उत्तर देंगे।

निदान स्वामी जी ७ नवम्बर को रावलपिण्डी पहुंच सेठ जस्सामल की कोठी में उत्तर, व्याख्यानों का प्रारम्भ कर दिया और सब बाईस व्याख्यान हुए पौराणिक पंडितों ने नगर में यह प्रसिद्ध कर दिया कि यह सब को ईसाई करने के लिये आये हैं इस पर भी जब कुछ न बना तो उक्त पारसी सेठ को भड़काया जिस के समाचार प्रथम ही स्वामी जी को भी ज्ञात हो गये इस लिये स्वयं उस मकान को छोड़कर सरदार सुजानसिंह के बाग में जा ठहरे। कनखल की गद्दी के महन्त साधू सुपन्तगिरि भी उन दिनों में यहां ही उपस्थित थे लोगों ने इन से शास्त्रार्थ के लिये कहा महन्त जी ने कह दिया कि स्वामी जी वेदवक्ता हैं जो वह कहते हैं हम नहीं कह सक्ते।

एक दिन स्वामी जी ने कहा कि मेलों में हिन्दू भाई जाकर ईसाई आदि की बातें सुनकर लज्जित हो जाते हैं परन्तु शोक इतना ही है कि वह अन्य मतवालों की पुस्तकें नहीं देखते। देखिये ब्रह्मा के लिये अपनी बेटी के साथ कुकर्म करने को कहा जाता है जो किसी प्रामाणिक ग्रन्थ में नहीं लिखा परन्तु बाइबिल में लूत पैगम्बर का अपनी बेटियों से व्यभिचार करने का वर्णन है यदि वह जानें तो पादरी और मुसलमान कभी भी बात नहीं कर सकते। एक पादरी को यह सुनकर बहुत बुरा लगा दूसरे दिन स्वामी जी से आकर कहा कि जो आपने कल कहा था वह झूंठ है स्वामी जी ने कहा कि क्या अच्छा होता यदि तुम घर में दीपक जलाकर अपनी चारपाई की दशा को देख लेते परन्तु वह इस पर भी न समझे। तब बाईबिल मंगा कर पैदायश बाब ३० आयत ३० से लेकर ३८ तक अच्छे प्रकार दिखला दी।

इसी स्थान पर महाराजा काश्मीर का निमन्त्रण पत्र स्वामी जी के नाम आया था, जिस में उन्होंने बड़ी विनय के साथ अपने राज्य में बुलाया था। परन्तु स्वामी जी ने अस्वीकार किया क्योंकि महाराजा साहब मूर्तिपूजक हैं और बहुधा मंदिर शिवालय इत्यादि इसकी पूर्ति के लिए बने हुए हैं। और मैं डंके की चोट उन का खण्डन करता हूं इस लिये सम्भव है राजा साहब को बुरा मालूम हो और किसी प्रकार का लड़ाई झगड़ा खड़ा हो जावे इसके अतिरिक्त हम को बहुत से आवश्यक कार्य करने हैं इस लिए प्रथम हम उन को पूरा करलें फिर कश्मीर जायेंगे।

एक दिन स्वामी जी ने यह भी कहा था कि मारवाड़ में एक राजा साहब पंद्रह सेर के लगभग रुद्राक्ष के दानों की माला अपने शरीर पर लादे रहते थे जिनको वह गौरीशंकर बतलाया करते थे उन को हम ने शिक्षा की यह एक वृक्ष के फल हैं इन के धारण करने से क्या लाभ उस समय उन्होंने इस बात को स्वीकार न किया परन्तु जब द्वितीय बार वह राजा साहब मिले तो एक दाना उन के शरीर पर न था हम ने उन को धन्यवाद दिया तब राजा साहब ने कहा कि महाराज यह आप के उपदेश का फल है इस दृष्टान्त से प्रयोजन यह था कि महाराज कश्मीर पर भी वैदिक धर्म का प्रभाव पड़ सकता है परन्तु अधिक समय की आवश्यकता है। स्वामी जी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के व्याख्यानों और उपदेश का यह प्रतिफल हुआ कि उन की उपस्थिति ही में समाज नियत हो गया।

स्वामी जी रावलपिंडी से गुजरात जाने के लिये रेलवे स्टेशन झेलम पर आये जहां से मास्टर लक्ष्मणप्रसाद जी उनको नगर में ले गये जहां १४ दिन तक रहकर व्याख्यान देते रहे। जिसका प्रभाव यह हुआ कि समाज नियत हो गया और मास्टर साहब ही जो ब्रह्म समाजी थे उस के प्रधान बने। कुछ दिनों के पश्चात् मास्टर साहब आर्य धर्म को त्याग ब्रह्म बन गये। एक दिन एक ईसाई पादरी साहब घर से कुछ प्रश्न लेकर आये थे परन्तु जब वह सभा में पढ़ने को खड़े हुए। तब उनका सम्पूर्ण शरीर कांपने लगा और वाणी भी कार्य न कर सकी, तब वह आप ही सभा से बाहर चले गये और फिर लौट कर न आये। बहुधा सत्यवादी मुसलमान भी स्वामी जी की विद्या की प्रशंसा करते थे इन्हीं दिनों में झेलम नदी के तट पर एक वृद्ध योगी निवास किया करते थे उन से और स्वामी जी से परस्पर प्रेम पूर्वक संस्कृत में वार्तालाप हुआ करता था जिन के विचार स्वामी जी के उद्देश्यों के अनुकूल थे।

यहां से चलकर स्वामी जी १३ जनवरी सन् १८७८ को गुजरात पहुंचे जहां उनके व्याख्यान गवर्नमेंट स्कूल में हुए और डाक्टर विष्णुदास साहिब ने उनका आतिथ्य सत्कार किया। पौराणिकों ने कुछ संस्कृत के शब्दों को जोड़ जाड़कर सभा में यह प्रकट किया कि यह वेद की श्रुतियां हैं तब स्वामी जी ने चारों वेद उनके सन्मुख रखकर यह श्रुतियाँ जो तुम पढ़ते हो निकाल दो इस पर उत्तर दिया कि हम अपने वेद में से दिखला सकते हैं द्वितीय दिवस कहा कि अब अपने वेद में ही दिखलाओ, वहां कौन दिखलाने वाला था।

एक दिन पौराणिक पंडितों की कुदशा देखकर मिस्टर बोकेनन ने सभा के मध्य में कहा कि आप इन विचारों के टेकने की लकड़ी छीनते हैं इस के पलटे में आप देते क्या हैं इस के उत्तर में स्वामी जी ने कहा कि मैं इन को वेद और योगाभ्यास देता हूं। वहां अनेकान् व्याख्यान हुए कोई शास्त्रार्थ को न आया हां कितने ही धूर्तों ने किसी के बहकाने से ईट पत्थरों की वर्षा की परन्त वह बाल ब्रह्मचारी जिन का उद्देश्य अविद्या अंधकार के मिटाने का था कब ऐसी तुच्छ बातों की ओर ध्यान करते।

एक दिन कुछ आदमी सम्मति करके स्वामी जी के निकट गये और उन से प्रश्न किया कि आप ज्ञानी हैं या अज्ञानी? इससे उनका अभिप्राय यह था कि यदि स्वामी जी अपने को ज्ञानी कहेंगे तो हम यह कह कर कि आप को अहंकार है और अहंकारी संत का तप नष्ट हो जाता है और यदि उन्होंने अज्ञानी कहा तो यह कहेंगे कि जब आप स्वयम् ही अज्ञानी हैं तो दूसरों को उपदेश कैसा करते हो। उस बालब्रह्मचारी ने उन के मुख्य अभिप्राय को जानकर ऐसा विलक्षण उत्तर दिया कि जिस को सुन सब चकित रह गये अर्थात् दूकानदारी, व्योपार, फारसी से अज्ञानी और संस्कृत और धर्म की वार्ता में ज्ञानी हूं।

यहां से स्वामी जी वजीराबाद पधारे जहां के सामाजिक पुरुषों ने स्टेशन पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वागत किया और राजा फकीरुल्ला की कोठी में उतरे जहाँ दूसरे दिन से व्याख्यान होना आरम्भ हुए जिन में असंख्य मनुष्य एकत्र होते थे उनमें से एक दिन मनुष्य झुंझला कर उठा और उच्चस्वर से बोला कि जो व्याख्यान सुनेगा वह हिन्दू वीर्य से न होगा परन्तु सत्य के इच्छुक डटे ही रहे। स्वामी जी के आते ही बड़े २ पंडित नगर छोड़ कर चले गये नगर निनासी एक पंडित को लाये और शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ पण्डित जी ने एक मन्त्र पढ़ा फिर वह दो ही बातों में निरुत्तर हो गये तब सब ने आक्रमण किया स्वामी जी ऊपर चले गये फिर उन्होंने ईंट पत्थर फेंकने का आरम्भ किया। जिस को स्वामी जी का लेखक बिहारीलाल समझाने के लिए उन के पास आया दुर्जनों ने उस को मार गिराया तब स्वामी जी लाठी लेकर नीचे आने लगे जिन की ललकार का शब्द सुन कर सब इधर उधर चले गये। सामाजिक पुरुषों ने नालिश करना चाहा तब स्वामी जी ने सदुपदेश कर शान्त कर दिया।

यहां से ७ फरवरी सन् १८७८ को गुजरानवाला में पधारे और सरदार महानसिंह के स्थान में ठहरे। व्याख्यान आरम्भ हुए जब कि स्वामी जी ने ईसाई मत का अच्छे प्रकार खण्डन किया तो पादरियों ने शास्त्रार्थ का प्रस्ताव किया और १९ फरवरी को गिरजाघर में शास्त्रार्थ हुआ जहां दो डेढ़ हजार मनुष्य उपस्थित थे। डिप्टी गोपालदास जी मध्यस्थ थे पादरी सुइफट साहब ने कहा कि यदि जीव अनादि माना जावे और ईश्वर भी, तो दोनों समान हो गये। स्वामी जी ने इस का उत्तर विद्या और तर्कों द्वारा भली भांति दर्शाया। अन्त में मध्यस्थ ने कहा कि पादरी साहब स्वामी जी के प्रश्नों का उत्तर न दे सके आप का हठ है जो नहीं मानते।

द्वितीय दिवस किसी अन्य स्थान पर विवाद करने का विचार हुआ क्योंकि वहां स्थान न्यून होने के कारण सहस्रों मनुष्य लौट गये थे और समय ४ बजे का नियत किया गया परन्तु पादरी साहब ने १२ बजे ही गिरजे में पहुंच स्वामी जी और डिप्टी साहब को बुला भेजा जिन्होंने तुरन्त उत्तर भेजा कि यह समय शास्त्रार्थ का नहीं है इसी पर पादरी साहब ने प्रसिद्ध कर दिया स्वामी जी बुलाने पर नहीं आये इस से समझना चाहिये कि वह परास्त हो गये कि। जब स्वामी जी को कार्य्य-वाही की सूचना हुई तो तुरन्त समाधि के निकट व्याख्यान का प्रबन्ध कराया जहां चार बजे अर्थात् नियत समय पर सहस्रों मनुष्य एकत्र हुए।

पादरी साहब को बुलाया परन्तु वह न आये तब नियत समय के एक घंटा पश्चात् बड़ी बुद्धिमता से ईसाई मत का अच्छे प्रकार खण्डन किया। जिसको सुन श्रोतागण बहुत प्रसन्न हुए और आर्य्यसमाज नियत हो गया यहां से लाहौर होते हुए मुलतान पधारे।

मुलतान

स्वामी जी जिन दिनों पंजाब के अन्य-अन्य नगरों में उपदेश कर रहे थे बाबू रलामल पंडित वसंतराम इत्यादि महाशयों ने सम्मति करके स्वामी जी को तार द्वारा बुलाने की प्रार्थना की। स्वामी जी उस समय तो न आ सके फिर बाबा ब्रह्मानंद ब्रह्मचारी को स्वामी जी के पास भेजा और उससे प्रथम डाक्टर कसवंतराय की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चिट्ठी भी गुजरानवाला पहुंच चुकी थी स्वामी जो यहाँ से चल लाहौर ठहरते हुए १२ मार्च सन् १८७८ ईसवी को मुलतान पहुंचे जहां नगर में होलका उत्सव के कारण हूं, हा मच रही थी इस कारण स्वामी जी के व्याख्यानों में अनेकान् पुरुष जाया करते थे। सबसे प्रथम वैष्णव मत के सिद्धान्त और गोसाइयों की गुप्त करतूत की अच्छे प्रकार पोल खोली जिसके कारण नगर और उसके और पास ग्रामों में बड़ी धूम मच गई। गोसाईं लोग जिन की इधर बड़ी मानता थी रक्त के प्यासे हो एक दिन अपने बहुत से चेलों को साथ ले बड़ी धूमधाम के साथ शंख घड़ियाल बजाते हुए जयजयकार मचाते हुए सभा में आये स्वामी जी व्याख्यान दे रहे थे इनकी धूर्तता पर कुछ ध्यान न देकर बुद्धिमान् पुरुषों ने तत्क्षण प्रबन्ध किया जिसके कारण वह जैसे आये थे वैसे ही चले गये यहां सैंतीस दिन में छत्तीस व्याख्यान हुए जिन में प्रत्येक मत और सम्प्रदाय के सैकड़ों मनुष्य आया करते थे और अनेकान् पुरुष अपने सन्देह निवारण किया करते थे राय सागरमल साहिब एकजीक्यूटिव इन्जीनियर ने जो चौदह सौ पुस्तकें पढ़कर नास्तिक हुये थे स्वामी जी से तीन दिन वार्तालाप कर शुद्ध मन से नास्तिकता छोड़ने की प्रतिज्ञा की। छावनी के कई प्रतिष्ठित पारसियों ने आमंत्रित कर स्वामी जी के व्याख्यान सुन १००) रुपये और एक थाल किशमिश का भेंट किया था। एक दिन व्याख्यान देते समय स्वामी जी ने कहा था कि जो लोग रुपया लेकर अपनी पुत्रियों का विवाह करते हैं उनमें और कंचनियों में कुछ भेद नहीं है यह मनुष्य एक से अधिक रुपया लेकर अपनी पुत्री उसको देते हैं और कंचन अनेक मनुष्यों से रुपया व सामान लेकर उनको देते हैं कमाई अपनी-अपनी पुत्रिय की दोनों खाते हैं।

मुसलमान लोग भी स्वामी जी के पास जाकर वार्तालाप करते परन्तु उत्तरों में कोई भी न ठहरता। ४ अप्रैल को यहां समाज नियत हुआ तब बाबा ब्रह्मानंद ने हास्य में कहा कि केवल सात ही सभासद हैं जिनको सुनकर स्वामी जी ने कहा कि मुसलमानों के पैगम्बर की एक केवल एक स्त्री सहायक हुई थी। जिसकी अब इतनी उन्नति हो रही है तो फिर हमारे धर्म के तो सात सहायक हैं। एक दिन एक व्याख्यान में स्वामी जी ने एक दृष्टांत में वर्णन किया कि एक बार एक पठान और एक हिन्दू दुकानदार का साथ हुआ जिसके साथ में एक ब्राह्मण भी नौकर था। जब प्रातःकाल हुआ तो बनिये साहब ने कहा कि महाराज पालागन। फिर पानी की आवश्यकता हुई तो पानी मंगाया, रोटी के समय भोजनकर खिलाता और चलते समय बोझा उठाकर पीछे-पीछे चलता, एक दिन मार्ग में अंधेरा हो गया ब्राह्मण साथ न था तब पठान ने पूछा कि आपका वह ब्राह्मण जो पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर का काम देता है कहां है! बनियाँ सुनकर हंस पड़ा यही दशा भारत के अनेकान् ब्राह्मणों की हो रही है हा शोक! स्वामी जी ने यहां एक मास से अधिक निवास किया और विज्ञापन भी दिये परन्तु किसी ने भी शास्त्रार्थ न किया नगर के पण्डित गण स्वामी जी को विद्यासागर और खारा समुद्र कहते। पाठकगण! स्वयं ही विचार करलें कि जो विद्यासागर है वह ही मीठा समुद्र है परन्तु स्वार्थीजनों का स्वार्थ सिद्ध न होने से उस महात्मा पर लोग नाना प्रकार के आक्षेप करते थे। परन्तु सत्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न वैदिक धर्म के प्रकाश करने में तनिक भी त्रुटि नहीं की। एक दिन पण्डित कृष्ण नारायण ने स्वामी जी से कहा कि वर्तमान समय में मिस्टर मोक्षमूलर साहब वेदों के ज्ञाता कहाते हैं इसमें आपकी सन्मति क्या है। ऋषि ने उत्तर दिया कि जब तक वह महीधर और सायणाचार्य के भाष्य के अनुयायी बने रहेंगे तब तक वह वेद के गूढ़ाशयों को नही समझ सकते।

एक दिन एक कश्मीरी ब्राह्मण से स्वामी जी का (मांस खाने) के विषय पर वार्तालाप हुआ था। उन्होंने उसको योगाभ्यास की कुछ क्रियायें सिखलाकर उसको अच्छे प्रकार प्रतीत कराया कि मांस खाने वाले को आत्मिक आनन्द कभी प्राप्त नहीं होता। इस लिये उसने मांस खाने का परित्याग कर दिया एक पारसी ने प्रश्न किया कि जब आप को एकही नस्ल बतलाते हैं तो आप हमारे साथ खान पान क्यों नहीं करते। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि आप लोगों का मुसलमान आदि कौमों से मेल होने के कारण आप के साथ खान पान का व्यवहार हम लोग नहीं करते यदि आप कुछ समय तक आर्य लोगों से मिलते रहें तो आप शुभाचारी हो जावेंगे उस समय हमारा आपका आहार व्यवहार एक हो जावेगा। अब रहा एक स्थान पर बैठ कर झूठा भोजन करने के विषय में आप बतलावें कि हिल मिलकर भोजन करने से क्या लाभ और ऐसा न करने से क्या हानि? पारसी साहिब ने कहा कि झूठा खाने से प्रेम प्रीति अधिक होती है और विपरीति इससे अप्रीति होती है। स्वामी जी ने कहा कि आर्य्यावर्त्त के वैद्यराजों ने वैद्यकी विद्या के अनुकूल झूंठा खाने और हिल मिलकर खाने और झूंठा पानी पीने और हेल मेल से रहने में बहुधा रोग शीघ्र एक के दूसरे से प्रवेश कर जाते हैं। जिन के नाम व्याख्या सहित बाबू जसवन्त राम असिस्टेंट सर्जन ने उसी समय वर्णन कर दिये। द्वितीय यदि साथ खाने वालो में प्रीति होती है तो मुसलमान भाई जो सदा साथ ही खाते हैं एक दूसरे के क्यों शत्रु हो जाते हैं।

रुड़की

प्रिय पाठक गण! लाला मुरलीधर जी वैश्य ने पंजाब से आकर पंडित उमराव सिंह जी से कहा कि वर्तमान् समय में एक बड़े योग्य विद्वान् महात्मा पंजाब देश में धर्मोपदेश कर रहे हैं जिस से वहां आर्य्यसमाज रूपी धर्म का अंकुर जमता चला जाता है। यह सुन वह बड़े प्रसन्न हुए और स्वामीजी महाराज के दर्शनों की लालसा उत्पन्न हो गई तब उन्होंने एक निवेदन स्वामी जी की सेवा में रुड़की पधारने के विषय में भेजा स्वामी जी ५ जौलाई सन् १८७८ को रुड़की पहुंच, लाला अमरनाथ देहली निवासी के बंगले में उतरे। उसी दिन कर्नेल अल्काट अमरीका निवासी के आये हुए पत्र का उत्तर देते समय उपस्थित पुरुषों से कहा था कि कैसे शोक की बात है कि हमारे धर्म की खोज अन्य मता वाले तो अमरीकादि देशों से पत्र द्वारा करने में तत्पर और हम ऋषी सन्तान इसी पवित्र भूमि पर जन्म लेकर ऐसे बे सुध हो रहे कि करवट तक नहीं लेते।

इस नगर में प्रथम सत धर्म पर, द्वितीय मूर्ति खण्डन और आवागमन, तृतीय बाइबिल, कुरान खण्डन पर, चतुर्थ अंग्रेजी सायंस और डार्विन के कथन पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बड़ी उत्तमता से व्याख्यान हुए। आवागमन पर डाक्टर सुरेशचन्द्र साहब असिस्टेंट सर्जन ने उसी समय कहा कि मैंने ऐसी युक्तियां इस विषय में नहीं सुनीं और न मेरा विश्वास था। अब मुझको निश्चय हो गया। तृतीय दिन के व्याख्यान में जब कि वह बाइबिल का खण्डन करने लगे तो कर्नेल मार्सल आर. ए. साहब बहादुर कमांडिंग आफिसर और कप्तान स्टुआर्ट साहब क्वाटर मास्टर ने "जो व्याख्यान सुनने आये थे" घबड़ा कर बीच में ही प्रश्न करने आरम्भ किये जिन का उत्तर स्वामी जी भली भांति देते रहे परन्तु साहब बहादुर को मध्य में ही क्रोध आ गया और अन्त को निरुत्तर हो कल आकर स्वामी जी शंकाओं का उत्तर देने की प्रतिज्ञा कर चले गये फिर न आये परन्तु कप्तान साहब आकर प्रसन्नता पूर्वक सुनते रहे इन तीनों व्याख्यानों से नगर में बड़ा कोलाहल मच गया और अन्त को चौथे दिन के लिये पुलिस का प्रबन्ध कराया गया उस दिन स्वामी जी ने वर्णन किया कि डार्विन के कथनानुसार अब सहस्रों वर्षों में बन्दर से मनुष्यों क्यों नहीं बनता यदि बन्दर और मछली के प्रसङ्ग से कोई बच्चा उत्पन्न हुआ उस ने किसी अन्य पशु से सन्तान उत्पन्न कारण है कि यह रीति बन्द हो गई क्या अन्तिम सन्तान ने कोई लेख इस प्रकार लिख दिया कि जो क्रिया हमारे बड़े करते आये हैं वह कोई पशु और विशेष कर बन्दर न करे।

ऐसी अनेक युक्तियों को सुनकर अंग्रेजी पुरुष चकित हो गये। स्वामी जी ने यह भी कहा था कि हमारे वेदों में सब विद्यायें उपस्थित हैं और उन्हीं से सब ने सीखा है पृथ्वी की आकर्षण शक्ति जिस को न्यूटन का आविष्कार बतलाते हैं वेदों से उस के विषय में मंत्र पढ़कर सुनाये। रुड़की कालिज के विद्यार्थियों से यह भी कहा कि तुम यह समझते हो कि सायंस और फिलासफी केवल पश्चिमी शिक्षा पर निर्भर है संस्कृत में क्या रक्खा है। सो मैं तुम को बड़ी प्रसन्नता से आज्ञा देता हूं कि किसी सायंस के सिद्धान्त के विषय में मुझ से पूंछो। मैं तुम को संस्कृत की प्रामाणिक पुस्तकों से प्रमाण देकर संतोषित कर दूंगा तुम लोगों की यह भी बड़ी भूल है कि इस देश के विद्वानों और फिलास्फरों को जंगली समझते हो यहां के निवासियों ने प्रत्येक विद्या और क्रियाओं के सीखने में अपनी आयु व्यतीत करदी थी और आत्मिक उन्नति में सर्वोपरि थे यह सुन उक्त विद्यार्थियों ने सूर्य और पृथ्वी के भ्रमण आकर्षण तत्वों की व्यवस्था, पवन, मेघ, रसायन नक्षत्र इत्यादि विद्याओं के विषय में प्रश्न किये। स्वामी जी प्रत्येक के उत्तर में संस्कृत के श्लोक पढ़ और उन के शब्दों के सरल अर्थ कर समझाया। जिस को सुन कर वह संतुष्ट हो गये स्वामी जी का सब लोग बड़ा मान्य करते थे। एक दिन स्वामी जी ने यह भी कहा था कि हमारे देश की अवनति संस्कृत विद्या के प्रचार न होने के कारण हो गई है ज्यों २ इस विद्या का प्रचार होता जावेगा त्यों २ वेद विद्या की उन्नति होती जावेंगी उसी प्रकार मनुष्यों की आंखें खुलती जावेंगी फिर लोग संस्कृत के प्राचीन रत्नों को देखकर आश्चर्य में हो जावेंगे।

इस नगर में व्याख्यानों के सुनने से बड़ी हलचल मच गई। मुसलमानों ने मौलवी मुहम्मद कासिम साहिब देवबन्द निवासी को शास्त्रार्थ के लिये बुलाया और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद भाष्य प्रकाशन निधि में प्राप्त दान सूची

१.	श्री मधुसूदन जी, चित्ती बम्बई	२५००-००
२.	श्री खेमकरण गुप्ता, कलकत्ता	५०१-००
३.	श्री राजेन्द्रप्रसाद रामानन्द सर्राफ, मवानाकलां (मेरठ)	५०१-००
४.	श्री प्रह्लादराय पचोरिया, बम्बई-१	१००-००
५.	श्री बाबूराम परसपुर, (गोण्डा) उ०प्र०	२१-००
६.	श्री रामरतनजी, नागपुर	२५-००
७.	श्री प्यारेलालजी, खैरथल मण्डी (अलवर)	५१-००
८.	श्री रामलाल उबराय, दिल्ली-१	५१-००
९.	श्री कालकाप्रसाद योगेश्वरचन्द, पानीपत	१००-००
१०.	प्रो० रामेश्वरदयाल, ज्वालापुर (सहारनपुर)	५०-००
११.	श्री काशीराम राठी, नांगलराया, नई दिल्ली	१०१-००
१२.	श्रीमती गार्गीदेवी, तलवाड़ा, होशियारपुर	५०-००
१३.	श्री डी० एन वर्मा, एडवोकेट, (जबलपुर)	२५१-००
१४.	श्री वेदप्रकाशजी, वेद एण्ड कम्पनी, मुजफ्फरपुर	१५१-००
१५.	श्री हरिप्रसाद गुप्त, जयनगर, बिहार	१००-००
१६.	श्री सत्यपाल आर्य, आजादपुर-३३, दिल्ली	११-००
१७.	श्रीमती रामप्यारी, आजादपुर-३३, दिल्ली	११-००
१८.	श्री बी० गस० हलिखेड़े (बीड़) महा०	११-००
१९.	श्री स्वामी ओमाश्रित जी, दिल्ली	१०-००
२०.	श्री छैलूरामजी, कापड़सेड़ा	१०-००
२१.	श्री वेदप्रकाश भारती, मतलबपुर (सहारनपुर)	५-००
२२.	श्री कुलभूषन साहनी, दिल्ली-५२	२५-००
२३.	श्री लखनलाल गुप्त, सिराथू इलाहाबाद	५१-००
२४.	श्री जगदीशप्रसाद, मंत्री आर्य समाज, रामस्नेही घाट, बाराबंकी	५१-००
२५.	श्री चन्द्रशेखरप्रसादसिंह, ग्रा० सराठा (पूर्वीचम्पारण) बिहार	१५-००
२६.	श्री शैलबिहारीलाल, चन्द्रा ट्रान्सपोर्ट (धनबाद) बिहार	५१-००
२७.	श्री जुगेश्वर महतो, पंचेतडाम (धनबाद)	३०-००
२८.	श्री फूलचन्दजी, नयापुरा (गुना) .	१००-००
२९.	श्री पी० सत्यनारायण जौहरी, हैदराबाद	१०१-००
३०.	श्रीमती ऊषा गुप्ता, ए०के० कोलयरो सौन्दा (हजारी बाग) बिहार	२५-००
३१.	श्रीमन्त्रीजी आर्य समाज, जालन्धर छावनी (पंजाब)	५१-००
३२.	श्री योगेन्द्रराय, धाऊखेड़ा, कानपुर	२.५०
३३.	श्री रघबीरसिंह, भदरेड (कांगड़ा)	५०-००
३४.	श्री जगदीश बहादुर वैद्य, गली सुनारान, मथुरा	२०-००
३५.	श्री रामचन्द्रप्रसाद सर्राफ, ताजपुर (समस्तीपुर)	१५-००

सभी का धन्यवाद-हार्दिक

राकेशरानी, अध्यक्ष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक)
वेद मन्दिर, नई दिल्ली-५

मार्च
१९८०

रजिस्टर्ड नं०
डी० सी० २०१

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान्
डॉ० रामनाथ वेदालंकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi